स्थापन के लिये कितना आवश्यक है। एक हज़ार के ऊपकार स्कूल और कालिजों के लड़कों की भीड़ इकट्ठी हो जाती थी। दफ़्तरों से लौटे हुये क्लर्क भी इस भीड़ में शरीक होते थे। पर नगर के प्रधान २ नेताओं में कोई भी इनके लेक्चर में नहीं देख पड़े। इस्से मालूम होता है कि बिपिन बाबू का कथन सर्व संमत नहीं है-क्यों नहीं है इसका जुदे २ लोग जुदा २ कारण मानते हैं। कोई कहते हैं बायकाट का अभी समय नहीं है; कोई मानते हैं यह चलैगा नहीं और न इससे उतना देश का उपकार है जितना धैर्य और गांभीर्य भाव से हो सकेगा-इस उतावली और क्षिप्रकारिता से कुछ न होगा। कोई कहते हैं यह आन्दोलन उन्हीं का किया है जो किसी कारण कर्मचारियों के अन्याय और उनकी बिषम भाव की शासन प्रणाली से चिढ़ उठे हैं-जो हो पर ऐसे एक नेता का होना अत्यावश्यक है जो उन बातों का बीज बोता रहे जिस में स्वराज्य वृक्ष का अंकुर निकल कालान्तर पाय उस महा वृक्ष में राजकीय स्वच्छन्दता के स्वादिष्ट और मीठे फल फलैं। उपरान्त ३ दिन मिस्टर गोखलेने अपने सुमधुर और गंभीर कथन में विलाइत के नामी स्टेट्‌संमेन और राज नीतिज्ञों से मिल और उन से बात चीत कर जो कुछ अनुभव किया था बयान किया। उन्हों ने कहा इगलैन्ड में भ बहुत लोग हैं जो हिन्दुस्तान का हित चाहते हैं। पर उन्हें यहां जो अन्याय देशी लोगों के साथ किया जाता है उसका ठीक २ पता नहीं मिलता इस से लाचार हैं। यहां से लौटे हुये सिविलियन सिवाय भलाई और अपनी कारगुज़ारी के यहां के लोगों की क्या शिकायत है और क्या उन्हे क्लेश है सो नहीं प्रगट करते देश की भलाई के लिये उन्होंने ३ बात का होना अति आवश्यक कहा एक यह कि लोग प्रण कर लें कि हम विदेशी बस्तु काम में न लावेंगे, दूसरे यह कि यहां से नौ जवान लोग योरप या जापान आदि देशों में जाय तरह २ के शिल्प सीख यहां आय उनका प्रचार करैं-पूरी तरक्की तब कहैंगे जब भांत २

की वे सब कल भी यहां बनने लगें बिलायत का मुह इन कलों के लिये भी न जोहना पड़े । तीसरे यह कि जो रूपयेवाले लाखों का प्रोमेसरी नोट खरीदे रक्खे हैं वे अपना रुपया इन कारखानों में लगावें। मिस्टर गोखले की हृदयंगम मधुर बक्तृता लोगों को बहुत रुची ॥

अभ्युदय

स्काट्स इमलशन

यह सब महीने और सब ऋतु में खाने लायक है; भोजन के सदृश पोषक और दवा की दवा-

Always get the Emulsion with this mark—the Fishman—the mark of the "Scott" process.

यह निर्बलों को बल देता है और पतले दुबले आदमी के शरीर में मांस पैदा कर मज़बूत और दृढ़ांग करता है। अंग प्रत्यंग जो ढीले हो गये हैं उनमें ताकत और फुर्ती लाता है। इसके सेवन से हड्डियां मज़बूत होती हैं और देह के भीतर पट्ठों में मज़बूती लाता है॥

यह रोगी दूधमुहे बच्चे को चंगा कर देता है और कमज़ोर बालकों को सहज़ोर। गर्भिणी और जिस के गोद में बालक है दोनो के लिये यह विशेष उपकारी है। इसलिये कि यह दूधमुहे बालक और मा जिसका दूध बच्चा पीता है दोनो को तनदुरुस्त रखता है॥

खांसी, ज़ुकाम, कफ, फेफड़े और गले की बिमारी, मन्दाग्नि और क्षीणता दूर करने वाली दवाइयों में इसके समान दूसरी दवा नहीं है और सदा गृहस्थी में रखने लायक है॥

लगातार सेवन से शरीर पुष्ट रह निश्चय बहुत तरह के रोगों से बचा रहता है। बालक से बूढ़े तक सब के लिये हित है। इस्से नुकसान किसी तरह पर नहीं है। बड़े २ डाक्टरों ने इसकी तारीफ की है। किसी तरह की बीमारी यह पास नहीं फटकने देता। आप अपने डाक्टर से पूछ देखिये। इसके ऊपर एक मनुष्य का चित्र है जो पीठ पर मछली लादे है और वह तुम्हें ज़रूर फाइदा पहुंचावेगा। यह हाथ से छू कर नहीं बनाया गया सब दवाखानों में मिलता है॥

स्काट ऐन्ड ब्रौन लिमिटेड

मेन्युफेक्चरिङ्ग किमिस्ट-लण्डन

REGISTERED No. A—308.

हिन्दी प्रदीप

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरे।
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप सम थिर नहिं टरे॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब यामें जरे।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरे॥

अप्रैल १९०७

मासिक पत्र

जि० २९ सं० ४

सम्पादक और प्रकाशक पंडित बालकृष्ण भट्ट प्रयाग

विषय सूची

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥)
समर्थों से ३।=) पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द की जिल्द मै पोस्टेज २)

यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

—:०:—

जि० २६ } प्रयाग { अप्रैल
सं० ४ } { सन् १९०७ ई०

अंगरेज़ी तालीम और जातीय शिक्षा।

हिन्दुस्तान में कुल बोझा हमारी तालीम का गवर्नमेंट के ऊपर रहने से हमको वैसी शिक्षा नहीं मिलती जैसी इस समय ज़रूरत है। वह तालीम जिसे English education कहते हैं उससे बहुत फरक है जो विलायत में दी जाती है। विलायत में उच्च शिक्षा का भार गवर्नमेंट के ऊपर न रह लोग वहां अपने ढंग पर अपने बालकों को शिक्षा देते हैं। वहां Primary educati n प्राथमिक शिक्षा अलबत्ता सरकार की ओर से

दी जाती है। यहां बिलकुल इसके बिरुद्ध है। अर्थात् जो कुछ शिक्षा भली या बुरी हम को सरकार देती है उसी पर सन्तोष किये बैठे रहते हैं। शिक्षा बिभाग में पहले तो हमे कुछ अधिकार ही नहीं है जो सभ्य महाशय इसमें कुछ रद्द बदल किया चाहैं भी तो उनकी सुनता कौन है। इससे अब हमें यही आवश्यक जान पड़ता है कि शिक्षा का भार अपने ऊपर लेवैं और निज ढंग पर जातीय शिक्षा का प्रचार करैं। आज कल बहुधा यही देखा जाता है कि जो नव युवक स्कूल या कालिजों को छोड़ अपनी शिक्षा समाप्त कर निकलते हैं वे ऐसे कमज़ोर हो जाते हैं कि केवल इसी लायक रह जाते हैं कि किरानी गीरी या कुछ इइबरी कर किसी तरह अपना कुटुम्ब पाल सकें। ऐसी शिक्षा जिससे हम लोगों में जातीयता का भाव पैदा हो सके गवर्नमेंट के शिक्षा बिभाग में दी ही नहीं जाती। इतना ही नहीं वरन् यहां के शिक्षा बिभाग का ढङ्ग ही निराला है। जिससे हम को लाभ की अपेक्षा हानि अधिक है। यह आप को मालूम होगा कि बिलायत में जो लड़के पढ़ते हैं उनसे यहां के लड़कों में बड़ा अन्तर है। बिलायत में लड़कों को छात्र दशा में किसी तरह की दुनियाबी फिकिर या चिन्ता नहीं रहती वरन् सदा प्रसन्न चित्त केवल पढ़ने लिखने से उन्हें सरोकार रहता है। यहां एक तो यों हीं बहुत कम ऐसे गृहस्थ हैं जो सब भांति खुश हाल हैं और दोनों बख्त आनन्द से भोजन करते हैं बरन् अधिकांश मुफलिस कल्लांच हैं। उस पर लड़कपन के व्याह की कुप्रथा एक तो तितलौकी दूजे चढ़ी नीम वाली कहावत का प्रत्यक्ष उदाहरण हो जाता है। तब कहिये हम किस तरह मुल्की मामिलों की बारीकियों को समझ सक्ते हैं। दूसरे यह कि हम लोगों को जो कुछ पढ़ाया जाता है वह सब दूसरी भाषा में जिसके समझने के लिये पहले हमे उस भाषा में पूरी योग्यता होनी चाहिये। तवारीख हिसाब भूगोल वगैरह बिदेशी भाषा अङ्गरेज़ी में पढ़ाने से दस गुना अधिक मुशकिल हमारे कोमल बुद्धि वाले बालकों

को हो जाता है। इससे उनका बहुत सा समय व्यर्थ नष्ट हो जाता है। या यों समझिये कि यदि यही सब विषय अङ्गरेज़ के लड़कों को फ्रेंच इटालियन् या जर्मन् में पढ़ाये जांय तो उनको कितना कठिन होगा। यहां के बालकों की बुद्धि या ज़ेहन की तारीफ़ है कि इतने पर भी वे हर तरह पर सबकत ले जाते हैं और इमतिहानों में प्रत्येक विषय में बहुत अच्छा नम्बर पाते हैं। दूसरे एक बात यह भी है कि बिलायत में लड़के २० या २१ वर्ष तक युनिवरसिटी की किसी परीक्षा में नहीं शरीक किये जाते यहां उस उमर तक M. A. की डिगरी पास कर लेना पड़ता है। सरकार भी चाहती है कि हमारी तालीम का भार अपने ऊपर न लिये रहे नहीं तो इतनी तरह की भांति २ की कैद फीस का बढ़ा देना कोर्स में व्यर्थ बहुत सी किताबों का बोझ लाद देने का क्या काम था। तो अब हमारा मुख्य कर्तव्य और उद्देश्य यही होना चाहिये कि बालकों को अपने ढङ्ग पर ऐसी शिक्षा दें जिसमें जातीयता का भाव उनमें पैदा हो इसी में हमारा कल्याण और आगे के लिये भलाई है।

जातीय बिश्वबिद्यालय हो जाने से हमारे तथा मुसल्मान भाइयों के लड़के अपने मज़हब और देश के प्राचीन महा पुरुषों के चरित्र अपनी भाषा में पढ़ धर्म तथा समाज सम्बन्धी कितनी ऐसी लाभ दायक बातें सीख सकते हैं जो बर्तमान् क्रम की अङ्गरेज़ी तालीम में आना कभी सम्भव नहीं है। राम कृष्ण अर्जुन भीष्म तथा मुहम्मद और उनके जानशीन खलीफाओं में क्या गुण थे कैसे चरित्रवान् प्रभुता शाली बीर पराक्रमी और दृढ़ प्रतिज्ञ तथा दृढ़ संकल्प वे लोग थे इसका ज्ञान जैसा हमे होना चाहिये वह नेलसन आदि की जीवनी पढ़ने से कहां हो सक्ता है। बालकों में जातीयता का भाव पैदा करने को और उन्हें अपनी जाति या समाज में उत्तम नागरिक बनाने को हमे चाहिये जातीय बिश्वबिद्यालय National univercity स्थापित कर जातीय शिक्षा का

प्रचार करें। जिसमें संस्कृत और अरबी प्रधान भाषा हों। ठौर २ पुस्तकालय और रीडिङ्ग रूम स्थापित किये जांय। हम कालिदास भव भूति भारवि श्री हर्ष बाण तथा शादी हाफिज़ आदि को छोड़ शेक्सपियर मिलटन और ऐडिसन तथा मेकाले को क्यों पूछें। इससे हमारा यह तात्पर्य नहीं है कि अङ्गरेज़ी के उत्तम और प्रधान कवि या लेखकों को बिलकुल भूल जांय किन्तु जातीय शिक्षा की उन्नति उनसे वैसी नहीं होगी जैसी कालिदास या तुलसी और बिहारी की कविता से हो सक्ती है। हम को विदेशियों की भाषा तथा उनके ग्रन्थकारों से कोई द्वेष नहीं है बरन अङ्गरेज़ी के जो ग्रन्थ हमारे फायदे के हैं या जिनकी हमारे यहां कमी है उनका प्रचार या अनुबाद हमारा कर्तव्य होना चाहिये। जर्मनी में बिज्ञान की शिक्षा बहुत अच्छी दी जाती है हम अपने युवकों को वहां भेजने का प्रबन्ध करें। जैसा जर्मनी वाले हमारे यहां के दर्शन और वेदों का प्रचार अपने देश में बहुतायत से कर रहे हैं वैसा ही हम उन के यहां के विज्ञान को अपने देश में फैलाने का यत्न करें। इतिहास और भूगोल बिद्या की भी कमी हमारे यहां है इसकी तरक्की भी हमे अपनी भाषा में करनी चाहिये। जैसा स्काटलैण्ड और इङ्गलैण्ड के लड़के अपनी ही भाषा में अपने देश के इतिहासों को पढ़ जो लाभ उठाते हैं हम को कहां वर्तमान् शिक्षा प्रणाली से वैसा फल मिलता है। हमे चाहिये शिवाजी, रणजीत सिंह, भोज, बिक्रम, पृथ्वीराज, अकबर ऐसे बिशिष्ट पुरुषों का चरित्र किस्सों की भांति बालकों को सुनाय उनकी बाल्य अवस्था ही से पक्का कर रक्खें। परन्तु यह महा संकल्प करै कौन? इसके लिये हमारे यहां के बड़े २ बिद्वान् महानुभाव राजा महाराजा ज़मीदार तअलुकेदार सेठ साहूकारों की सहायता आवश्यक है और उन्हीं से यह हमारी बिनती है।

अमेरिका में तालीम का ढङ्ग ऐसा रक्खा गया है जिससे दिनों दिन अच्छे २ कारीगर निकलते जांय। उनका मत भी यही है कि बालकों

की किताब का कीड़ा न बना कर ऐसी शिक्षा दी जाय कि उनकी दिमागी कूवत और तरह २ का कला कौशल रोज़ रोज़ बढ़ता जाय। ऐसा कहा जाता है कि वहां के प्रेसिडेंट के तरफ से स्टेट की लग भग आधी आमदनी के शिक्षा बिभाग में लगाई जाती है। और यही बिचार रहता है कि जहां तक हो सके हर एक रियाया को इसका फायदा पहुंचे। दूसरा उदाहरण जापान का है वहां भी यही कायदा रक्खा गया है कि जो कुछ शिक्षा दी जाय अपने पश्चिमी ढङ्ग पर दी जाय जिससे जापान वाले किसी कौम को अपने से बढ़ा हुआ न देख सकें और अपना मुल्क स्वयं अपने ही हाथ में रक्खें। वहां बालकों को ६ वर्ष की उमर से शिक्षा देने लगते हैं और Primary education के लिये कोई फीस नहीं रक्खी गयी। (कला इत्यादि) की तालीम प्रधान अङ्ग इनके यहां के शिक्षा का है। औरतों को पढ़ाना भी वहां बहुत आवश्यक समझा गया है और उसका भी प्रबन्ध अलग है। हम लोग भी यदि कुछ करना चाहैं तो इन्ही का अनुकरण करैं। आज कल यहां के २३ करोड़ आबादी में से केवल ४० लाख शिक्षा पाते हैं बाकी सब कोरे रह जाते हैं। अर्थात् ७ आदमी फी सदी कुछ तालीम पा रहे हैं। यहां की सरकारी आमदनी १२४ करोड़ है इसमें से सिर्फ ४ करोड़ शिक्षा बिभाग में लगाया जाता है। अपने यहां के Arts indusiry and commerce के तरफ बिलकुल ही ध्यान नहीं है। पूना और रुड़की में अब इसका कुछ प्रबन्ध किया गया है पर इतने से हमको होता ही क्या है।

यह कौन नहीं जानता कि जापान जो आज कल उन्नति के शिखर पर चढ़ रहा है और सब का शिरोमणि समझा जाता है। ५० वर्ष पहिले किसी गिनती में न था; कारण इसका यही है कि वहां कला इत्यादि की शिक्षा का प्रचार ज्यादा है और तरह २ शिक्षा भी सब अपने ढङ्ग पर दी जाती हैं।

इससे स्पष्ट बिदित है कि जब तक हम अपने यहां की कारीगरी की उन्नति न करेंगे और शिक्षा का भार अपने ऊपर न लेंगे हम कुछ नहीं कर सक्के। आज कल के कांग्रेस के नये दुलवाले जो वायकाट २ चिल्ला रहे हैं उनका भी भीतरी यही आशय है कि हम लोग बिदेशी बस्तु न लेंगे और दृढ़ मत हो जायगें तो अन्त में हमको अपने वाहुबल का आसरा पकड़ना पड़ेगा और देश में कारीगरी स्वयं बढ़ेगी। परन्तु यह सब सिर्फ चिल्लाने ही से न होगा कुछ करना भी हमारा धर्म है। जब कोई समय ऐसा आ जायगा तो स्वराज भी हम को आप से हो जायगा। देखैं पाठकों को हमारे इस सरमगज़न करने का कुछ असर पड़ता है कि नहीं॥

सच्ची सभ्यता।

आज कल बहुधा लोग बाहरी ठाठ और अपनी हर एक बातों में चमक दमक को ही सभ्यता मानते हैं। बाहरी वेशभूषा सभ्यता का एक अङ्ग अवश्य है पर निरी इस बनावट को सभ्यता का बीज हम कभी न कहेंगे बरन गंभीर बिचार, दया, प्रेम, परस्पर की सहानुभूति, आपस में एक दूसरे के सुख दुख के साथी हो जाना, इत्यादि इसके आभ्यन्तरिक गुण हैं जिनका होना सभ्य समाज के लिये ज़रूरी बात है। इसी से हमारे शास्त्रों में बाहरी आडम्बर का निरादर कर सभ्यता की कसौटी भीतरी बातों में की गई है। सभ्यता समाज का एक मुख्य गुण है सभ्य के लिये समाज प्रिय Social होना भी बहुत उचित है। सो तभी होगा जब समाज से हमारा सब तरह का सरोकार है। बल्कि समाज सभ्यता की शिक्षक और परीक्षक है। समाज के लोगों की चाल ढाल, रीति, नीति, धर्म कर्म, आचार व्यवहार कोई ऐसी बात नहीं है जिसे सभ्य मनुष्य न जानता हो। एक महात्मा का मत है कि जो मनुष्य समाज से अलग रहता है वह

या तो देवता है या पशु; मनुष्य में उसकी गिनती नहीं है। तात्पर्य यह कि मनुष्य का सभ्य होना एक स्वाभाविक गुण है जिसमें यह गुण नहीं उसे मानव तनधारी पिशाच कहें तो अनुचित न होगा। सभ्य सज्जन साधु सत्पुरुष लगभग एक ही अर्थ के वाचक शब्द हैं। असभ्य खल कापुरुष आदि इसके बिपरीत हैं। ऐसों को सभ्यता के गुणों से हीन कहना चाहिये। इस समय के भेख पुजाने वाले रामदास पीताम्बर दास को कभी सच्चा साधु न कहेंगे बरन मन और इन्द्रियों को काबू में रख उनसे यथोचित काम लेने वाला ही सच्चा साधु है। सभ्य मनुष्य का मन बच कर्म एक होता है उसका हृदय कमल स्वार्थ परता की कुटिल बासनाओं से कभी संकुचित और दूषित नहीं होने पाता बरन परार्थ चिन्ता की बसन्ती बायु से सदा प्रफुल्लित बना रहता है वह दूसरों की भलाई में अपनी भलाई समझता है। आत्मत्याग को अपने लिये एक बल मानता है; प्रतिक्षण उसे ईश्वर का भय रहता है; इसी से कुत्सित और निन्दित कर्म करने का साहस उसे नहीं होता। दूसरे के अणु मात्र भी गुण को बहुत मानता हैं जैसा भर्तृहरि ने कहा है।

"मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णास्त्रिभुवन मुकारश्रेणिभिः पीडयन्तः। परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः॥"

सभ्यजन के पास न्याय और इनसाफ की ऐसी उत्तम कसौटी होती है जिस पर पक्षपात का असर कभी पड़ता ही नहीं अज्ञ और मूर्खों को चाहो पहिले वह हानि कारक जंचे पर परिणाम उसका अवश्य लाभदायक होता है। ऐसे लोग उदार भाव गांभीर्य बाहर और भीतर की पवित्रता की मूर्ति होते हैं। खलों में इसी के बिपरीत देखा जाता है॥

दृढ़ संकल्प और अपने इरादे का पक्का होना सभ्यजन की एक दूसरी कसौटी है " यद्यपि शुद्धं लोक विरुद्धं " वाली कहावत से डर ऐसे लोग कभी अपने पक्के इरादे से नहीं डगमगाते । पहले तो जो शुद्ध है वह लोक बिरुद्ध क्यों होने लगा और जो वास्तव में लोक बिरुद्ध है वह शुद्ध कहां रहा ? यद्यपि लोक शब्द से यहां देश और काल का तात्पर्य है पर बर्ताव में इसका खयाल नहीं करते अतः हम दोनों तरह हानि उठाते हैं । जो लोक बिरुद्ध करते हैं तो अपवाद और बदनामी की दुन्दभी हमारे लिये पीटी जाती है और जो लोकानुकूल चलते हैं तो उस शुद्ध मार्ग का बतलाने वाले का अनादर होता है । इसका भेद कुछ नहीं खुलता कि पूर्व प्रचलित शुद्ध मार्ग क्यों लोक में दूषित ठहराया गया । इससे मालूम हुआ कि देश काल परिवर्तन शील है नहीं तो उस शुद्ध रीति का अनुकरण समाज में क्यों नहीं किया जाता । जो रीति किसी समय शुद्ध थी वह अब हम लोगों की अयोग्यता से निन्दनीय हो दूर हटा दी गई । शनैः २ समाज के सब लोगों ने बिचार शक्ति और बिवेक को खो बहाया गतानुगतिक के क्रम पर चल अन्ध परम्परा के अनुयायी हो गये । बिचार पूर्वक अच्छा काम करने का साहस न रहा घर के भीतर स्त्रियों की नाईं रहने लगे । सभ्य जन इस लोक निन्दा का भय न रख समाज में जो कुरीतियां चल पड़ी हैं उनके उठाने और देश काल के अनुसार उनकी जगह दूसरी प्रथा चलाने में लोक निन्दा का कुछ खयाल नहीं करते । संशोधक समाज के नेताओं को उचित है कि वे बिवेक और बिचार को काम में लाय ऐसा उपाय करें जिसमें इस लोक निन्दा पिशाची का शुद्ध रूप प्रत्यक्ष दीख पड़े ।

यथार्थ में लोक निन्दा उसके लिये है जिसमें किसी काम के करने की योग्यता और क्षमता रह कर भी वह अपनी उस योग्यता प्रगट करने का भरपूर साहस Moral courage नहीं रखता । जैसा पण्डित और बुद्धिमान् की निन्दा तब है जब उसका पाण्डित्य या बुद्धि दूसरों के

हित का काम न करे। सज्जन की निन्दा तब है जब उसकी सज्जनता कार्य में परिणत न हो। धनवान् तब निन्दनीय है जब उसके धन का सद् व्यय न हो। राजा या शासन कर्ता तब निन्द्य है जब वह प्रजा या आश्रितों पर जुल्म या सख्ती करे। सन्तान वह निन्द्य है जो अपने जन्म दाता मा बाप का ऋण न चुकावे। मनुष्य वह निन्दा के योग्य है कि नर तन पाय अपना जन्म सार्थक न करे। गुरु या शिक्षक वह निन्दनीय है जो शिष्य को कुराह से न हटावे इत्यादि। हमे प्रतिक्षण देखते रहना चाहिये कि हमे किस बात की योग्यता है; जाति में समाज में परिवार में तथा देश में हमारा कहां तक अधिकार अपनी योग्यता प्रकाश करने का है और उस योग्यता को कर्तव्य पालन की बुद्धि से काम में लावें। ऐसा नहीं करते तो हम अवश्य निन्दा के योग्य हैं इसी को गीता में भगवान् ने "संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते" कहा है।

अनन्तराम पाण्डेय।

राजा और प्रजा।

भाषाओं में बहुत कम ऐसे शब्द हैं जो ठीक Root धात्वर्थ के बोधक बराबर रहे आये हैं। राजा राज धातु से बना है जिसका अर्थ दीप्ति या प्रकाश है। ऐसा ही प्रजा भी जन धातु से बना है। जिस के अर्थ अब सन्तान और सर्व साधारण रियाया मात्र के हैं। "प्रजास्यात्सन्ततौजने" जैसे २ समय बीतता है वैसे ही वैसे शब्दों के अर्थ में कुछ अदल बदल होता जाता है पर अपने धात्वर्थ से कुछ न कुछ उस शब्द का लगाव अवश्य बना रहता है और कभी २ तो इतना अंतर पड़ जाता है कि उन शब्दों को गढ़ने वालों को कभी स्वप्न भी न सूझा होगा कि इस शब्द का प्रयोग आगे चल के इस माने में किया जायगा। राजा और प्रजा इन दो शब्दों के सम्बन्ध में यही बात देखी जाती है। आज कल राजा शब्द का अर्थ प्रायः हमारे देश में बहुत लोग यह समझते हैं कि राजा उसे कहते हैं जो पृथिवी के कुछ हिस्से का मालिक

हो अपनी कुल आमदनी को अपनी जमा समझता हो और चैन से गुल-छर्रे उड़ाया करता हो। उन मनुष्यों पर जो उसकी पृथ्वी पर रहते हों उन्हे मारने उनकी मिलकीयत छीन लेने या जो चाहे सो करने का पूरा अधिकार रखता हो। राज भक्ति के अर्थ भी यही समझे जाते हैं कि राजा जैसा कहे अच्छा या बुरा वैसा करता जाय। जितना कर मांगे चुपचाप देता रहे उसके लिये औरों से लड़े उसके विरुद्ध कभी कोई बात मुह से न निकाले न राज बिद्रोह की कोई बात सोचै। प्रजा से उन मनुष्यों का अर्थ लिया जाता है जो राजा की पृथ्वी में बसते हैं और जिनका धर्म है कि बिना चूं किये राजा की कुल बातों का सहन करता जाय। परन्तु बिचार कर देखो तो इन शब्दों के असली अर्थ इस समय के अर्थ से बिलकुल उलटे हैं॥

प्राचीन समय अधिकांश यूरोप के देशों में जब मनुष्यों का कोई समूह किसी कारण से अपने स्थान को छोड़ दूसरे स्थान में रहने के लिये जाता तो था यह आवश्यक होता था कि उस दूसरे स्थान के रहने वालों के साथ लड़ाई में बिजय पाने को अपने में से किसी एक ऐसे मनुष्य को चुने जो युद्ध में नेता या अफ्सर बनने का काम कर सके और जिसके अनुसार चलने से लड़ाइयों में हम निपुण हो जावें। इस अवस्था में जिसे वे चुनते थे वही राजा होता था। जब राजा किसी कारण काम करने योग्य न रहा अथवा मर गया तब सब लोग दूसरा राजा अपनी लड़ाई के कामों के लिये चुन लेते थे। राजा का धर्म यह था कि वह सदा अपने आश्रितों का या अपनी जाति वालों का हित सोचै और करै। जब किसी लड़ाई में कोई नई पृथ्वी वह समूह जीतता था तो उस समूह के लोग हिस्से रसदी राजा को बांट में सब से अ-धिक हिस्सा देते रहे होंगे। इस कारण से कि वह चुना हुआ राजा अपनी जाति में औरों से अधिक बुद्धिमान् और बीर था उसका सन्मान उस की जाति वाले अधिक करते थे। इससे यह न समझना चाहिये कि

राजा और मनुष्यों से पृथ्वी या धन में अधिक रहा हो बल्कि उसका सन्मान भी तभी तक था जब तक वह अपनी जाति की सेवा में तत्पर था। फूइलमिसटेन के अनुसार लड़ाई के समय के पहिले मनुष्यों को कभी आवश्यकता नहीं पड़ी कि वे किसी को राजा बनावें। ऐसे समय राजा और प्रजा में कोई भेद न था। जैसे २ वह जाति बढ़ती गई और बहुत से लोग लड़ने का काम छोड़ और २ काम करने लगे तैसे २ यह आवश्यक हुआ कि राजा को बंधी हुई फौज़ दी जाय और बंधे हुये उतने मनुष्यों का वह मालिक या अधिकारी समझा जाने लगा। इस तरह उसका अधिकार और ज़ोर या प्रभुता बढ़ती गई। इस कारण कि लड़कों में प्रायः पिता का गुण रहता है इसलिये यह प्रथा चल पड़ी कि राजा का लड़का राजा हो। राजा और प्रजा का यह नाता नहीं है कि राजा जो चाहे सो कर गुज़रे और प्रजा उसे सहती जाय। इङ्गलैंड अमरिका फ्रांस आदि देशों में राजा और प्रजा में क्या नाता है सो लोग अच्छी तरह समझते हैं। वे भली भांति जानते हैं कि राजा और प्रजा को ईश्वर ने एक ही तरह का बनाया है राजा का लहू मांस पञ्च तत्व के किसी दूसरे परमाणुओं से रचा गया हो सो नहीं। राजाज्ञा और राजभक्ति क्या है इसके तात्पर्य को भी वे ठीक २ समझते हैं॥

समय के अनुसार सबी में अदल बदल हुआ करता है यूरोप और अमेरिका के सभ्य देश और सुसभ्य जातियों में अब यहां तक परिवर्तन हो गया कि वहां राजा या राजवंश तथा ऊंच नीच का भाव रहा ही नहीं। वहां प्रजा प्रभुत्व है प्रजा में एक २ समाज के लोग अपने में से जिसे बड़ा लायक समझते हैं चुन लेते हैं और वे चुने हुये लोग जिसे सब से अधिक शासन की योग्यता वाला समझते हैं उसके लिये वोट देते हैं। जिसके नाम पर सब से अधिक वोट आया वही उनका प्रिसिडेंट किया जाता है। ५ या ७ वर्ष तक वही देश के शासन का सब प्रबन्ध करता है और

इसके लिये उसकी कुछ तनखाह मुकर्रर रहती है। शासन के जुदे २ महकमों से जो कुछ धन उन २ महकमों का खर्च काट इकट्ठा होता है वह सब एकजाई रह खज़ाने में जमा कर दिया जाता है और वह धन मुल्की दौलत या सर्वसाधारण प्रजा मात्र की पूंजी समझी जाती है। हमारे यहां प्रति वर्ष "कानग्रेस" जातीय महासभा भी उसी प्रजा प्रभुत्व की एक छोटी सी तसवीर है। ईश्वर सानुकूल रहा तो कोई समय आवेगा जब हमारे यहां भी प्रजा प्रभुत्व हो जायगा। हम लोग चाहते हैं वह दिन जहां तक हो बहुत जल्द आवे। कर्मचारी गण चाहते हैं उसके आने में जहां तक देर हो सके उस तरह की शासन प्रणाली से हमारा शासन किया जाय। इसलिये कि उनके देश का फायदा इसी में है। "सर्वः स्वार्थं समीहते" स्वार्थ तो ऐसी बुरी बला है कि इसं से देवता भी न छुटे होंगे तो मनुष्य की कौन। देशहितैषी तथा समाज के प्रधान नेता सुरेन्द्र गोखले पाल तिलक आदि और गवर्नमेंट के प्रधान कर्म चारियों में परस्पर विवाद और झगड़े की यही बुनियाद है। लार्ड रिपन महोदय लोकल सेल्फ गवर्नमेंट के नाम से एक २ नगर में आत्म शासन की बुनियाद इसीलिये डाल गये थे। जो अब म्युनिसिपलिटी के नाम से अनेक तरह का क्लेश पहुंचा और कड़ी से कड़ी चुङ्गी और अनगिनती टैक्स उगाहने का द्वार अलबत्ता हो रही है। कहने को म्युनिसिपलिटी का धन प्रजा का है पर वह धन वैसा ही है कि घर द्वार तुम्हारा, डेहरी के भीतर पांव न रखना। प्रजा प्रभुत्व का क्रम शासन का नया है हमारे यहां पुराणों में पृथु आदि के किस्सों से मालूम होता है कि कभी प्रजा प्रभुत्व यहां भी था पर वह इतना पुराना हो गया कि उसे हम बिलकुल भूल गये। ब्रिटिश गवर्नमेंट और तालीम के अनेक फायदों में इसे भी हम अवश्य एक कहेंगे कि हम आत्म शासन स्वराज्य या प्रजा प्रभुत्व क्या है जानने लगे हैं। एक तीसरा क्रम शासन का कनस्टिटूशनल गवर्नमेंट है इसमें राजा नाम मात्र को थाप दिया जाता है कार्य प्रणाली सब पार्लियामेंट

की महासभा करती है ब्रिटिश शासन उसी प्रकार का है जिसका बिब रण आगामी अङ्क में रहेगा ॥

सह भोजन और विवाह ।

समाज की उन्नति चाहने वाले नये लोग इस समय Interdine and Intermarriage सह भोजन और एक जाति का दूसरी जाति के साथ बिवाह होने के बड़े उत्सुक हैं। महाराज गइकवाड़ तो यहां तक बढ़ गये हैं कि हिन्दुस्तान के लोग एक कौम हुआ चाहें तो हिन्दू मुसल्मान में ब्याह शादी की अटक मिट जाना चाहिये। जब तक दोनों में यह खटक रहेगी कि हम दो जाति हैं तब तक मुल्की तरक्की हम से दूर हटी रहेगी। महाराज गइकवाड़ बड़े लोग हैं उनके इस मन्तव्य को दूषित कहना छोटे मुह बड़ी बात होगी। किन्तु जाति का अभिमान बड़ी चीज़ है। हम आर्य हैं जब यह खयाल हम में न रह गया हमारा रूपान्तर हो गया तब हमने तरक्की ही किया तो क्या। तारीफ तो तब है कि हमारा प्राचीन वैदिक धर्म और हम आर्य जाति के हैं यह अभिमान हमारे में कायम रहे और हम उन्नति भी करें। बङ्गाल और बाम्बे प्रान्त में तो ऐसों का दल बहुत बढ़ गया है जो धर्म परलोक और विश्वास पर कुल्हाड़ा चला रहे हैं और जिन्होंने तै कर रक्खा है कि जब तक हम धर्म कर्म के जाल में फसे रहेंगे इन बातों को लगो न मान इनके पीछे हैरान सिर मारते रहेंगे तब तक कभी तरक्की न करैंगे। हमारे प्रान्त में भी पढ़े लिखे बहुधा उन्हीं का अनुकरण कर रहे हैं और इस तरह के बन्धन को तोड़ निकल भागने ही को तरक्की और स्वराज संस्थापन की बुनियाद मानते हैं। किन्तु याद रहे जिन ऋषियों का चलाया यह आर्य धर्म है उनमें जो सच्चा तपोबल था और लोभ से वे मुक्त थे तथा शुद्ध देशोपकार की इच्छा से चार वर्ण की प्रथा उन्होंने चलाया है तो यह कभी मिटाये न मिटैगी। एक न एक रङ्ग रूप में चली जायगी और ये बहके हुये भी अंत को उसी में आ घुसैंगे ॥

अस्तु खान पान और परस्पर का यौनिक सम्बन्ध इन दोनों में पहले हम सह भोजन को लेते हैं जिसमें दो क्रम बांधा गया है। एक अनाचार दूसरा अत्याचार और दोनों के अन्तिम छोर के उदाहरण यहां मौजूद हैं। एक वे हैं जो बराबर कह रहे हैं " सबै भूमि गोपाल की यामे अटक कहां " और इस कहने पर दृढ़ रह खान पान में किसी तरह की रोक टोक उन्हों ने रक्खा ही नहीं। धोबी चमार और पंक्ति पावन तथा कुलीन से कुलीन अग्र जात ब्राह्मण सब एक हैं। पवित्र होटलों में सब एक साथ हम निवाले न हुये तो उन्नति क्या हुई। दूसरे वे हैं जो " आठ कनौजिया नौ चूल्हा " के पैरोकार हैं। सहोदर भाई हैं पर सह भोजन में हिचक रखते हैं जान चली जाय पर साथ बैठ एक पंक्ति में कभी न खायंगे। एक ओर महा अनाचार अपना रङ्ग दिखा रहा है दूसरे ओर महा अत्याचार ओर छोर को पहुंच गया है। एक ओर अनाचार पांव फैलाये हुये है दूसरे ओर बिचार की छिलावट का अन्त है। पर बिवेक की त्रुटि दोनों ओर पाई जाती है। ऐसी दशा में मध्यम श्रेणी Middling course का अवलम्ब हमारी समझ में बड़ी बुद्धिमानी है। उचित है कि पहले एक २ जाति वालों का सह भोजन हो; फिर द्विजाति सब एक हो जांय; उपरान्त अन्त्यज को बरकाय शूद्र को भी अपने साथ समेट लें। धर्म प्रवर्तक ऋषियों ने उच्छिष्ट भोजन पर बड़ा ज़ोर दिया है सो बरकाना बहुत उचित है नवीन वैज्ञानिक भी अपने बिज्ञान से उच्छिष्ट को हानि कारक ठहरा रहे हैं। इस समय लोग समुद्र यात्रा के बड़े उत्सुक हो रहे हैं और सच है बिना बाहर पांव निकाले अब देश में धन का बढ़ना बहुत असम्भव है। हम ऋषियों के बचनों से सिद्ध कर सक्ते हैं उच्छिष्ट भोजन त्यागे रहे तो बिदेशों में जानेसे कोई हानि नहीं है। जो हम वहां से लौट प्रायश्चित्त कर फिर अपने धर्म में आ जांय। पर वे जो बिलायत गये हैं वे तो यहां ही से लोहे तांबे उतर सर्व भक्षी हो वहां जाते हैं। बिलायत में रह हम शूद्र पाचित कची रसोंई

तक खा लेने में भी धर्म में कोई हानि नहीं मानते और इसमें प्रमाण दे सक्ते हैं पर किसी अनार्य म्लेच्छ जाति का स्पर्श भोजन में न होने पावे तो। इस समय के प्राज्ञं मन्य इसे काहे को मानेंगे यही कहेंगे यह बेहूदा है बे अकिली की बात बक रहा है अस्तु॥

अब दूसरा पक्ष बिवाह को लेते हैं हमारे यहां के पूर्वज बुद्धिमानों को जैसा भोजन का बुरा असर बुद्धि पर अनुभव हुआ है वैसा ही इस सङ्कर जाति का होना भी अनुभूत सिद्ध है। एक ही जाति या वर्ण के लोग किसी आबो हवा में रहते हों उनसे जो औलाद होगी वह सब भांति अच्छी शरीर बुद्धि तथा गुण कर्म किसी में हेठी न होगी और उनकी औलाद सदा फलती फूलती चली जायगी। हमारे यहां के ऋषियों ने एक गोत्र में बिवाह का निषेध किया है उसके यही माने हैं कि समान गोत्र को छोड़ दूसरा गोत्र वाला कहीं हो आपस में यौनिक सम्बन्ध कर सकता है। अब जो हम लोगों की सैकड़ों जाति और फिरके हो गये हैं बह इसी से कि परस्पर का आवा गमन रहा नहीं मुसल्मानों का अत्याचार बे हद्द था जो जहां बसे वहीं के हो गये उनके एक २ फिरके बन गये। अब इस बर्तमान शासन के स्वास्थ्य में एक छोर से दूसरे तक रेल के द्वारा आवा गमन खुल गया है तब उस Conservatism परिवर्तन बिमुखता को छोड़ देने में कौन सी हानि है। पर हमारे संशोधकों का ध्यान ऐसी २ बातों की ओर नहीं है वे उछल कर अंत की सीढ़ी पर जाया चाहते हैं। पुराने खयाल वालों को जो पुरखों से होता आया है उससे बाल बराबर भी इधर उधर हट जाना महा पाप है इन दोनों के दो लत की कशा कशी से सत्यानाश हो रहा है। यूरेशियनों की तरह दो जाति के सङ्कर से जो औलाद होगी उस में माता पिता दोनों में से किसी का तेजस्वी गुण न आवेगा। बहुधा देखा गया है पहले तो ऐसों की औलाद ही नहीं चलती चली भी तो उनकी खच्चर की सी पैदाइश का अंत वहीं से हो जाता है। औलाद चली भी

तो निस्तेज निकम्मी किस प्रयोजन की। इसलिये यौनिक सम्बन्ध अपनी ही जाति और अपने ही वर्ण में होना ठीक है। सह भोजन अलबत्ता एक जाति के समस्तिका दूषित न होगा अनाचार तथा अत्याचार की सीमा के बाहर न होना चाहिये। यौनिक सम्बन्ध में जिस घराने की लड़की हम लावें उसको भर पूर परख लें तो औलाद तेजस्वी और सब तरह बड़ी उत्तम होगी। खान पान में भी दूषित चरित्र वाले को तो बरकाना ही चाहिये। पर, यह हमारे नव शिक्षित काहे को मानेंगे अस्तु ॥

शिव पंचक।

(शिखरणी)

न जानूं मैं पूजा जप तप न जानूं शिव अहो।
न मेरे में विद्या धन बल न तौ भी सुख चहों॥
महा पापी हूं मैं कुटिल अति कामी सच कहों।
कृतघ्न क्रोधी हा! चरण तव कैसे शिव लहों॥ १॥

फिरा भूला हा! हा! बिषय रत हो दुःख सहते।
पिता माता दारा सुत मम सभी हाय! कहते॥
सदा ईर्षा हिंसा कपट मद से देह दहते।
बिना तेरी सेवा सुख विभव औ शान्ति चहते॥ २॥

हुई है जो भूलें शिव अब उसे माफ करके।
मुझे दीजै स्वामी शरण सब दोषादि हर के॥
करूं जैसे सेवा प्रभु तव सदा शुद्ध मन हो।
हरूं सारी बाधा भव भय हज़ारों दहन हो॥ ३॥

जरै है हा! छाती तन मन दुखाग्नी दहत है।
न सूझै क्या कीजै दुख नित हज़ारो सहन है॥
मुझे तो तेरी ही शरण शिव बाधा हरन है।
कृपा कीजे स्वामी शिव! अब नहीं तो मरन है॥ ४॥

बनों में राजा वा बन २ फिरौं रङ्क बन के।
कहाऊं साधू वा अधम अति सङ्गी कुजन के॥
फिरौं स्वेच्छा से वा शिव! करहु सेवा कुजन के।
न छोड़ूं मैं ध्याना प्रभु तदपि तेरे चरन के॥ ५॥

लछमन प्रसाद पाण्डेय बालपुर।

नाम या शब्द की उत्पत्ति का कारण।

सृष्टि कर्ता ने अपनी इस अद्भुत रचनासमष्टि की उत्पत्ति और बिस्तार में कैसा घना चक्कुर छोड़ रक्खा है कि क्या मज़ाल कि परिन्दा पर मार सके। पर इनसान एक ऐसा शैतानी खिल्त का मख़लूक है कि कोई चीज़ नमूद नहीं हुई कि उसकी पैदाइश का नाम व निशान तथा उसके वजूद का ज़माना अर्थात् वह कब तक क़ायम रहेगी सब का पूरा पूरा पता लगा लेता है। इतना ही नहीं वरन् उसकी जब जैसी ज़रूरत हुई वैसा एक प्रचलित नाम उसका क़ायम कर लेता है। इतना ही नहीं बल्कि उसके नाम की चित्थाड़ कर डालता है। एक बात यहां पर हम और कहा चाहते हैं कि नाम कोई न कोई शब्द होगा और वह किसी न किसी शब्द में बोला या लिखा जायगा तो सिद्ध हुआ कि अक्षरों की योजना या शब्द ही एक नाम है। इन्हीं शब्दों का बिचार कर हम सोते २ चौंक उठे हैं और जो शब्द या नाम चल पड़े हैं उनकी उत्पत्ति क्या है या उनका उसका ऐसा नाम क्यों पड़ा इसका कारण जो हमारी बुद्धि में आया उसे नीचे प्रगट करते हैं आरम्भ से लीजिये॥

दो आदमी आपस में लड़ झगड़ रहे हों कुछ तै न हुआ तो चट कह बैठते हैं "ईश्वर जानता है" "ईश्वर हमारा साक्षी है" मानो ईश्वर को संसार के इतने जगड्वाल में कोई दूसरा काम ही न रहा सिवा इन दोनों के झगड़ों को एक टक दृष्टि जमाय देखते रहने के। तो निश्चय

हुआ कि दो की लड़ाई झगड़ा ईश्वर की साक्षी के उत्पत्ति का कारण हुआ ॥

प्रयाग समाचार मर गया था फिर जी उठा पर नाम इसका ठीक न रहा इसका नाम होना था "मालवीय निन्दा समाचार" जब से इसने फिर के जन्म ग्रहण किया तब से इसको दूसरी कोई बात ही न मिली कि उस पर यह अपनी लेखनी की कारीगरी झलकाता सेवाय माननीय मालवीय महोदय के कामों की समालोचना के। तो मालूम हुआ कि मालवीय महोदय के काम इसके ऐसा लिखने की बुनियाद हैं। ऐसा ही राघवेन्द्र संसार भर के मनुष्यों के चरित्र के संशोधन का बीड़ा उठाये हुये औरों की ज़ीट उड़ाने को हातिम बन रहा है। तो संसार के चरित्र का संशोधन राघवेन्द्र के हातिम बनने का बाइस हुआ। बिदेशों में यहां का अन्न ढोया चला जाता है इसलिये कि हम लोग ज़ियादह खाने के आदी न हो जांय और अजीर्ण के कारण प्लेग और अधिक न बढ़ जाय। तो प्लेग के बढ़ जाने का खौफ़ बिदेशों में अन्न ढो जाने का कारण हुआ। ऐसा ही अन्न के बदले रुपया हमे दिया जाता है सही पर अनेक बिलायती कारीगरी तथा दूसरे २ ज़रियों से हम से फिर छीन लिया जाता है। इसलिये कि हमारे यहां उसके रखने की जगह नहीं है अथवा हमे रुपया सैंत के रखने का शऊर नहीं है। या प्राकृतिक नियमों की कारवाई दिखाई जाती है कि चीज़ों के हेर फेर या अदला बदली में रुपयों की क्या दशा होती है। अथवा जैसा बरसात में पानी तालाब और नदियों में थोड़े दिन ठहर अन्त में सब का सब जा समुद्र में मिलता है। "सर्व देव नमस्कारं केशवं प्रतिगच्छति" ऐसा ही रुपया सब हर एक बहाने यहां से ढोया जा रहा है। और कितने तरह के टैक्स छोड़ नमक का महसूल कम कर दिया गया है इसलिये कि नमक सस्ता हो और हम लोग इतने दिनों तक पेट भर खा खा कर बहुत मोटाय गये अजीर्ण होने लगा है तो अब कुछ दिन अन्न

छोड़ नोन ही फांक कर अपनी बलवाई पचावें। या इस बात के सबूत के लिये नोन का टैक्स कम कर दिया गया है कि तुम चिल्लाया करो क्या होता है अन्त में निंबुआ नोन चाटने को तुम्हे मिलेगा सो नोन की तो कमी न रही निम्बू अलबत्ता तलाश करना पड़ेगा सो मालटा से इम्पोर्ट हो आजायगा। मालटा का नीम्बू डाकूर लोग बड़ा ज्वरघ्न भी बतलाते हैं अब प्लेग को भी आप यहां से हटा हुआ समझो। अथवा दयालु सरकार ने जगह २ नहर और नल के द्वारा पानी का बन्दोबस्त करी दिया है नोन सस्ता हुई है तो अब नोन खाय पानी पी पी हिन्दुस्तान के कुदिनों को सरापा करो। या नोन का कर इसलिये माफ किया गया है कि जब तक तुम नोन सेतुआ बांध आन्दोलन करने में उद्यत न होगे तब तक निम्बुआ नोन चाटते बैठे रहोगे॥

बंगाल के दो टुकड़े किये गये इसलिये कि आपस के फूट की बीमारी इतनी बढ़ गई थी कि बंगाल जो हिन्दुस्तान के बगल में है या हिन्दुस्तान के जिस्म का बगल समझा गया है कखरवार की बीमारी समान उस में नश्तर दे देने से गन्दा खून सब निकल गया। अब इसकी एक २ रगों में जोश भर रहा है मुमकिन है हिन्दुस्तान अब फूट की बीमारी से सेहत पा जाय। ऐसाही माडरेट भीतर २ देश की भलाई के खयालों में चूरंचूर हो रहे हैं पर लोग उन्हें यही समझते हैं कि ये गवर्नमेंट के खुशामदी हैं और कोई ऊंचा पद या टइटिल के खाहिशमंद हैं इसी से नरम रहते हैं गरम कभी होते ही नहीं। एक्सट्रीमिस्ट बायकाट से जल्द देश को उभाड़ा चाहते हैं और देश की पोलिटिकल आबो हवा Atmosphere में हरारत पैदा कर दिया चाहते हैं। पर नरम दल वाले यही समझते हैं कि ये काम बिगाड़ रहे हैं मुल्क अभी तैयार नहीं हैं कि वहां बायकाट के वसूल काम में लाये जांय। इस तरह पर टटोल लिया गया कि कार्य और कारण का सम्बन्ध ऐसा दृढ़ है कि कभी ढीला पड़े ही गा नही कार्य भया नहीं कि कारण रूप एक नाम उसका जन

समूह में पड़ जाता है और सृष्टि के अंत तक उस शब्द का संकेतित अर्थ लोगों में प्रचार पाय जाता है। किसी वस्तु का प्रादुर्भाव हुआ नहीं कि उसके होने का कारण या उसका एक नाम उस बस्तु की उत्पत्ति के पहले मालूम होने लगता है। संसार के स्थावर जङ्गम जितने पदार्थ हैं कीटानुकीट से ले ब्रह्मा पर्यन्त अथवा एक परमाणु से ले बड़े उच्च पर्वत तक सृष्टि की रचना से पहले उसको एक नाम से पुकारने की आवश्यकता मालूम पड़ने लगती है और उस बस्तु की पहिचान के लिये उसका नाम धर दिया जाता है। जैसा आज कल बायकाट के नाम से एक नई हवा बह चली है। पहले सर्व साधारण में कोई बतला दे कि बायकाट इस शब्द को कोई जानता रहा हो; कानग्रेस करते २ लोग जब गये कुछ न हुआ; जब सृष्टि कर्ता जगन्नियन्ता ने यह सोचा कि अब New spirit नये तरह का जोश लोगों में फैलने की ज़रूरत है लार्ड कर्ज़न के द्वारा नई गरमी लोगों में पैदा हो गई और बायकाट उसका नाम भी धर दिया गया। यह भी याद रहे संसार में जितने पदार्थ हैं निरर्थक कोई भी नहीं हैं। मन में पहले खाहिश पैदा होती है धीरे २ मन और खाहिश की रगड़ से चट्ट वह चीज़ उपज खड़ी होती है तुर्त ही उसका एक नाम भी रख दिया जाता है। इस सूत्र के अनुसार आज कल नये जोश का पैदा हो जाना ख़ास कर भारत के भावी कल्याण रूप नव युवकों में किसी तरह फिज़ूल या निरर्थक नहीं है। निरर्थक होता तो इसके पैदा होने की कोई आवश्यकता ही न थी और जैसा सावन भादों की नदियों की बाढ़ सा यह रोज़ २ बढ़ता जा रहा है इससे आशा की जाती है कि भारत का उद्धार इसी से होगा॥

महादेव प्रसाद भट्ट

भारतवर्ष में दान का सुधार॥

इस में सन्देह नहीं है कि भारतवर्ष में दान का विषय बहुत बिगड़ा हुआ है शास्त्रों में विद्या दान सब से उत्तम कहा गया है और साधु

ब्राह्मणों और अतिथियों का कर्तव्य विद्या का प्रचार और देश सेवा थी इसलिये यही लोग दान के सुपात्र माने गये हैं जब तक इस देश में विद्या को उन्नति रही तब तक ये महात्मा लोग विद्वान् होकर अपने सत् कर्त्तव्य का पालन करते रहे। परन्तु विद्या के लोप होजाने से ये लोग भी मूर्ख बन कर अपने कर्त्तव्य को भूल गये और केवल नाम के साधु ब्राह्मण रह गये। पिछली १९०१ की मनुष्य गणना के अनुसार ५२ लाख मनुष्य साधु या भिक्षुक बतलाये गये हैं। जैसा कि साधारण लोगों में राजा और रईस हैं वैसाही इस साधु मण्डली में भी बहुत से धनवान् हैं जिनकी आमदनी लाखों रुपये साल कीहै जैसे महंत गया की सालाना आमदनी ६ लाख से ज्यादा है, लखनऊ के साधु हज़ारा बाग के रियासत की आमदनी साढ़े तीन लाख रुपया सालाना है। इसी तरह स्वामी शंकराचार्य के मठों और अन्य २ साधुओं के आखाड़े रियासतों और रईसों से लाखों रुपया दान में पाते हैं। करीब दो करोड़ भारतवर्ष में ब्राह्मणों की गणना है इन में से फी सदी ५ ऐसे हैं जो स्वयं व्यापारादि उत्तम रीति से धन उपार्जन कर जीविका करते हैं बाकी सैकड़ा पीछे ९५ केवल दान ही पर निर्भर हैं। यदि ४) फी मनुष्य का माहवारी पोषण पालन का ख़र्च हो तो ७ करोड़ रुपया माहवार ब्राह्मण लोग केवल दान में लेते हैं। इन के अतिरिक्त ५२ लाख साधु के पोषण में भी करीब २ तीन करोड़ रुपया माहवार हिन्दू जाति खर्च करती है क्योंकि साधु लोग पोषण के अलावा भारत वर्ष के तमाम तीर्थों में प्रायः रेलगाड़ी के द्वारा भ्रमण करते हैं और इसलिये हर एक साधु पर ६) माहवार से कम ख़रच नहीं पड़ता क्योंकि प्रायः साधु लोग तमाकू गांजा चरस अफीम आदि पदार्थों के सेवन में लिप्त हैं इस तौर दस करोड़ रुपया हर महीने भारत वर्ष का दान में खरच होता है। अब प्रश्न यह है कि दस करोड़ रुपया माहवारी दान के बदले हिन्दू जाति को क्या और कितना लाभ पहुंचता है, सो इन साधु और ब्राह्मणों में सैकड़ा

पीछे एक भी अपने शास्त्रोक्त कर्त्तव्य का पालन अर्थात विद्या और स्वदेश वस्तु का प्रचार और देश भक्ति नहीं करते। इन में साधु और ब्राह्मणों का इतना दोष नहीं है जितना कि दान देने वाले लोगों का क्योंकि कुपात्रों और मूर्खों के दान देने से इन लोगों को सुस्त और दुराचारी बनाना है, और इसी कारण कुपात्रों और मूर्खों के दान देने वाले भी पाप के भागी हैं। क्योंकि यदि दान देनेवाले इन मूर्ख साधुओं और ब्राह्मणों को दान न देते तो कदापि यह लोग दुराचारी न होते। निस्सन्देह बहुत से लोग भिखारी बन गये हैं और भिक्षा मांगना इन्होंने अपना एक पेशा बना रक्खा है। चूंकि प्रायः यह लोग भिक्षा मांगते समय बहुत तङ्ग और दिक़ करते हैं। इसलिये बहुत से देश के शुभचिन्तकों की राय है कि जैसा अन्य सभ्य देश यूरुप और अमेरिका में नियम है कि भीख मांगना एक जुर्म है याने यूरुप और अमेरिका के देशों में भीख मांगने वाले को ६ महीने कैद मिलती है, क्योंकि वह सभ्य जातियां अपने देश में सुस्ती और दुराचार फैलाना नहीं चाहतीं, मगर भारतवर्ष में कानून के द्वारा भीख मांगना बन्द कराने का यत्न करना बहुत ही बुरा है क्योंकि दान का विषय एक धार्मिक बात है इसलिये धर्म की बातों में सरकार कभी दख़ल न देगी और सरकार से धर्म के विषयों में प्रार्थना करना अपनी मूर्खता और अयोग्यता जतलाना है। इसके सिवाय यदि भीख मांगना अन्य सभ्य देशों की न्याई जुर्म भी माना जावे तो पुलीस जो आगे ही मूर्ख और असमर्थों पर बहुत जुल्म कर रही है उसको इन साधुओं और ब्राह्मणों पर जुल्म करने का अधिक मौका मिलेगा॥

इसके सिवाय भारतवर्ष में भिक्षुकों की गणना ज़ियादा बढ़ने का कारण यह भी है कि इस देश में सब प्रकार के लाभदायक व्यापार और कारख़ाने बिलकुल बंद हो गये हैं जिस से यहां के लोगों को जीविका नहीं मिल सकती और सब सभ्य देशों और जातियों में हर

के कारखाने कायम हैं जिन कारख़ानों की बनी हुई चीज़ें संसार के हर एक देश में भेजी जाती हैं और इन्हीं कारखानों में हर एक देश के सैकड़ा पीछे ८५ लोग आजीवका प्राप्त करते हैं । इन्हीं कारखानों से यह सब देश और जातियां करोड़ों और अरबों रुपये हर महीने पैदा करके धनवान् हो रहीं है, परन्तु भारतबर्ष में विदेशियों के व्यापारियों ने यहां के सब कारखानों और लाभदायक व्यापारों को नष्ट कर दिया है जिससे कि लोग या तो नौकरी जिस को शास्त्रों में सब से नीच माना गया है " उत्तम खेती मध्यम बांज, निकृष्ट चाकरी भीख निदान ", या भीख से लोग पेट पालन करते हैं" इस का मुख्य कारण यह है कि यहां के महाराजे, और रईस लोग अपने देश में बनी हुई चीज़ों को छोड़ विदेशी लोगों और चीजों के गुलाम बन गये और इसी कारण यहां से हर साल दो सौ करोड़ रुपया अन्य २ विदेशी लोग बाहर ले जा कर इस भारत वर्ष को निर्धन बना रहे हैं । इसी से इस देश में पाप ज्यादा बढ़ने के ज़िम्मेवार वही हैं जो स्वदेशी चीजों को छोड़ बिदेशी चीज़ें बरतते हैं तो निश्चय हुआ कि वे लोग धर्मात्मा या धर्म के रक्षक हैं जो केवल स्वदेशी चीज़ों को बरतते हैं ताकि इस देश में फिर सब प्रकार के कारखाने स्थापित हो जावें जिनमें सब लोगों को आजीविका प्राप्त हो और फिर हमारा धारा दान विद्या की उन्नति ग्राम २ में पाठशाला और हर एक मन्दिर और धर्मशाला में पुस्तकालय और समाचारपत्रालयों के खोलने में लगे । ताकि फिर भारतबर्ष जापान और अन्य सभ्य देश और जातियों की न्याई स्वतन्त्र, धनवान् सभ्य और धर्मात्मा बने ॥ टहलराम, गङ्गाराम, ज़मींदार देहरा इस्माइल खां ।

REGISTERED No. A—308.

हिन्दी प्रदीप

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै।
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक बिचार उन्नति कुमति सब यामें जरै।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

मई १९०७

मासिक पत्र

जि० २९ सं० ५

सम्पादक और प्रकाशक पंडित बालकृष्ण भट्ट प्रयाग

विषय सूची

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥) समर्थों से ३।=) पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द की जिल्द मै पोस्टेज २)

यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

—:००:—

जि० २९ } प्रयाग { मई
सं० ५ } { सन् १९०७ ई०

स्वावलम्बन ।

अभी तक हमारे भोले भाले देशबासी स्वावलम्बन के गुण को नहीं समझते थे; अभी तक वे उन लोगों के ऊपर निर्भर थे जो कहने मात्र को हमारे मित्र हैं। जो ऊपर से तो बड़ी चिकनी चुपड़ी बातें करते हैं पर भीतर से यही चाहते हैं कि हमे निःसत्व कर डालें। पर अब हम लोग समझने लगे हैं कि स्वावलम्बन ही हमारा उद्धार करने वाला होगा। अङ्गरेज़ी में एक मसल भी है God helps those who help themselves

अर्थात् जो अपनी मदद करते हैं उनकी परमेश्वर भी मदद करता है। जो अपने ऊपर निर्भर रहते हैं; अपने पैरों पर खड़ा होना जानते हैं वे ही उन्नति के भागी होते हैं। १५० वर्ष से हम लोग इसी आशा में थे कि सर्कार हम को हमारे हक़ दे देगी इसी से Memorials पर Memorials अर्ज़ियां पर अर्ज़ियां, Resolutions पर रिज़ोल्यूशनस् सर्कार के पास भेजे जाते थे; कानूग्रेस का सालाना जलसा भी इसी आशा से २२ वर्ष बड़ी धूम धाम से किया गया पर अब लोगों की आंखें खुली हैं कि इस भीख मांगने से कुछ नहीं मिलेगा। मिलेगा तभी जब तुम अपने पैरों पर खड़ा होना सीखोगे; भीख मांगना छोड़ दोगे। बहुत से अङ्गरेज़ नीतिज्ञ Statesman जो अपने को Liberal उदार कहते हैं हमको आशा दिलाते हैं कि तुम इसी तरह Agitation आन्दोलन करते जाओ जैसा कि करते रहे तो तुम्हारे सब हक तुम को मिल जावेंगे। लेकिन ५० बर्ष में हमको हमारे हक नहीं मिले तो हमको कोई क्या ग्यारण्टी देता है कि आगे हमको ये दे देंगे। सन् ५७ के घोषणा पत्र के अनुसार हमारा एक हक यह भी है कि हिन्दुस्तानियों के साथ वैसा ही सलूक किया जायगा जैसा कि और सब British रिआया के साथ किया जाता है। यह हक कहां तक अदा किया जाता है यह Australia और South Africa में हिन्दुस्तानियों के ऊपर जुल्म से बिदित है। हिन्दुस्तानी South Africa और Australia में घूमने तक के लिये नहीं जाने पाते रोज़गार करना तो दूसरी बात है। योरप के और २ देशों में Germany, France और America में तो हिन्दुस्तानियों के साथ अच्छी तरह सलूक किया जाय लेकिन खास British coloneys में हिन्दुस्तानियों के साथ यह जुल्म हो। हिन्दुस्तान का दरवाज़ा तो सबों के लिये खुला है लेकिन हिन्दुस्तानियों के लिये सब जगह का दरवाज़ा बन्द है! बहुत से अङ्गरेज़ Statesmen हमारी दिलजोई करने के लिये हमे फुसलाने के लिये या कहिये हमे धोखा देने के लिये हम लोगों को Fellow subjects कहते हैं पर यह बात कहां तक सच है

उनके बर्त्ताव से बिदित ही है। किन्तु जो सच्चे अङ्गरेज़ हैं वे साफ २ कह देते हैं कि तुम हमारे Subjects हौ। गुलाम हौ। मानो वे चेताते हैं कि तुम्हें गुलामी से छूटने के लिये कोशिस करनी चाहिये। अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिये॥

हम लोगों को बड़ी आशा थी कि Liberal govt के होने पर हमको हमारे हक मिलेंगे लेकिन उसने साफ़ निम्बुआ नोन चटा दिया। हम तो तब जानते कि Liberal govt हमारे साथ सहानुभूति Sampathy करती है जब वह बिदेशी माल पर कर लगा कर स्वदेशी के उन्नति करने में सहायता देती। आज कल हमारे और हम पर शासन करने वालों के बीच में भेड़िया और बकरी का, चोर और जिसके यहां चोरी की जाती है उसका रिश्ता है तो बतलाइये क्या यह कभी सम्भव है कि ये हमारा उपकार करेंगे। हमारा हक हमे दे देंगे। हम लोगों की आदत पड़ गई है कि हम कोई काम बिना किसी की मदद के नहीं कर सकते। कोई भी काम करेंगे उसमें गवर्नमेंट की मदद ज़रूर लेंगे। जैसा किसी ने कोई इमारत बनवाया तो न और कोई मदद सही तो लाट साहेब या कलक्टर साहेब से उसे खुलवावेंगे। ये सब बातें भी हमारे उन्नति में बाधा पहुंचाने वाली हैं। हम को अब यह सीखना चाहिये कि हम गवर्नमेंट की बिलकुल मदद न लेकर काम करैं। स्कूल, कालेज, अस्पताल और भी जितने काम हैं हमे बिना गवर्नमेंट की मदद लिये हुये करना चाहिये। बिना गवर्नमेंट की मदद लिये हुये हमको बहुत सी कठिनाइयों से सामना करना पड़ेगा क्योंकि हम दूसरे की मदद लेने के आदी हो रहे हैं। पर हमको इन मुशकिलों से न डरना चाहिये क्योंकि एक मसल है मुशकिल मुशकिल को हल करती है। और अब भी हम सब इन बातों को न सिखेंगे तब कब सिखेंगे। गवर्नमेंट तो यही चाहती ही है कि हम थोड़ी सी मदद दे कर इन्हें अपना कृपापात्र बना लें जिससे ये हमारे

जाल से न भाग जांय, इसी से कभी २ यह एकआध टुकड़ा हमारी तरफ़ फेंक दिया करती है। मसलन नोन का टैक्स कम कर देना हम इसी में निहाल हो जाते हैं और मारे खुशी के फूले नहीं समाते। लाला लाजपत राय का कथन है। भीख मांगने वाले को या तो भीख मिलती है या ठोकर खाता है : यदि भीख में कोई चीज़ मिल भी जाती है तो वह बहुत दिन तक नहीं ठहरती; देने वाला जब चाहे तब छीन सकता है। जैसा कि लार्ड रिपन महाशय ने हमको Lo al self govt स्थानीय आत्म शासन दिया, लेकिन उधर लार्ड रिपन साहेब जहाज़ पर सवार हुये इधर उनके स्कीम पर पानी फेरने को दूसरी स्कीम तैयार होने लगी। लेकिन जो वस्तु अपने पुरुषार्थ से पैदा की जाती है वह कभी कोई नहीं छीन सकता यदि तुम स्वराज्य लेना चाहते हो तो तुम को इस भिखमङ्गी पालिसी को छोड़ कर मर्दानगी पालिसी इख्तियार करनी चाहिये। अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिये। जब तक तुम अपने पैरों पर नहीं खड़े होगे तब तक तुम इसी तरह कर्मचारी अङ्गरेज़ों के अत्याचार की चक्की में पिसते रहोगे, यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारी सुनवाई हो तो तुम को पूरा इरादा कर लेना चाहिये कि हम अपना हक ज़रूर लेंगे। जब तक तुम इस तरह का पक्का इरादा न करोगे आज़ादी तुम्हारे पास नहीं आ सकती क्योंकि आज़ादी एक देवता है, और तुम्हारे काम ऐसे नहीं है कि उस देवता के मन्दिर में पांव धर सको। यदि तुम इस देवता के मन्दिर में जाना चाहते हो तो तुम अपने को आत्म त्याग Self sacrifice से पवित्र करो और स्वावलम्बन सीखो तुम्हें स्वच्छन्द जाति कर देने का यही एक मात्र द्वार है। कोई समय था जब तुम दुनिया की समस्त सभ्य जाति के अग्रगण्य थे काल चक्र की वक्र गति से तुम अब सबों के पैरों की धूल हो गये। अस्तु अब भी चेतो स्वावलम्बन का सहारा ले सुबह का भूला सांझ को घर पहुंच जाय तो उसे भूला न कहेंगे। तुम अपना सब खो बैठे अब उसे फेर पाने का यत्न

करो सच्चाई के साथ कोशिश करोगे तो अवश्यमेव कृतकार्य होगे । सब के सब दिन एक से नहीं बीतते उठे हुये गिरे हैं गिरे हुये उन्नति के शिखर पर जा बैठते हैं । अब तुम्हारे उठने की बारी आई है स्वावलम्बन अपने में लाओगे तो स्वराज तुम्हारे लिये संचित रक्खा है बहुत जल्द पाय जाओगे ॥

नये दल की नई तान ।

इस समय का प्रचलित विज्ञान सिद्ध करता है कि संसार के कोई काम बिना कारण के नहीं होते जिन कामों का विज्ञान से अभी तक पता नहीं लगाया गया उन से यह नहीं निकलता कि वे काम बिना कारण के हो रहे हैं । किन्तु मनुष्य की बुद्धि अभी उस दरजे तक नहीं पहुंची कि उन कार्यों का कारण जान सके । इसी को साधारण लोग ईश्वर की अद्भुत लीला कहते हैं । कारण के अलावा ज़रूरत भी कामों के साथ २ लगी रहती है । विना ज़रूरत के संसार में कोई काम नहीं होता और हर एक कामों की ज़रूरत को हम जलदी नहीं समझ सक्ते । अनेक-विद्वानों का यह मत है कि हर एक ज़रूरी कामों का अन्तिम परिणाम भला है । आज हिन्दुस्तान के Political field मुल्की जोश के मैदान में एक नया दल पैदा हो गया है । निश्चय है कि इसके पैदा होने का कारण और ज़रूरत मौजूद हो । मुल्की जोश जो हिन्दुस्तान में उठ रहा है अङ्गरेज़ी शिक्षा से पैदा हुआ है दिन प्रतिदिन इसकी बढ़ती होना २२ वर्ष की कानग्रेस का नतीजा है बल्कि इसकी उत्पत्ति का कारण भी कानग्रेस ही को कहना चाहिये । २२ वर्ष तक बराबर जो गीत यह हर साल गाता रहा उसमें सफलता न देख इसकी कार-रवाईयों में अदल बदल होने की ज़रूरत जान पड़ी । पुराने ढर्रे पर चलने से लाभ की कोई आशा न रही । उस ढर्रे में परिवर्तन एक दम तो हो नहीं सकता इसलिये किसी बात का पहले अभ्यास डालने की

बड़ी आवश्यकता है। यह नया दल कानग्रेस का Tone और तरीका Method के बदल जाने का बड़ा भारी चिन्ह है। इसका पैदा हो जाना स्वाभाविक है। किसी नई घटना का सहारा लेना बहुत ज़रूरी बात नहीं है। बल्कि यों कहना चाहिये कि यह नया दल न पैदा हुआ होता तो हानि थी। बहुतों का यह मत है कि इस नये दल के उपज खड़े होने का सबब बेसबरी और नाउम्मैदी है। पर हमारी तुच्छ बुद्धि में यह सत्य नहीं है। सबर के यह माने नहीं है कि हम सदा पुरानी लकीर के फकीर बने रहें। किसी अच्छे काम को हाथ में ले बिना पूरा किये छोड़ देना बुरा है सही। किन्तु इस लगे रहने और धीरज धरने से यह मतलब नहीं है कि हम हठी हो जांय। समय और वर्तमान देश दशा को Over look उपेक्षा कर दें। बरन सबर के यह माने हैं कि हम साबित कदम रह उस काम को बिना पूरा किये न छोड़ें। उसे पूरा करने की जब कोई दूसरी तरकीब देख पड़े तो पहला तरीका छोड़ने में हठ न करें। हमारे देश के लोग स्वभाव ही से परिवर्तन बिमुख Conservative हैं किसी नई बात के करने में अनेक तरह की अड़चन देख तरद्दुद और क्लेश उठाने से हटते हुये जिस काम को एक बार कर चुके हैं उसी को फिर २ करने में सुख समझते हैं। किन्तु इस क्लीवत्व के दूर हठाने को ईश्वर ने दृढ़ संकल्पता की शक्ति Will power मनुष्य को दी है। जिस शक्ति को काम में लाने से हम को अपने कार्य की सिद्धि सुगम हो जाती है। उनका खयाल Ideal जिसको Praitical men करके दिखाने वाला कहेंगे वही उनके धीरज का सबूत है और धीरज तभी तक रहता है जब तक फल मिलने की आशा है और वह फल प्राप्ति "प्राक्टिकल" मनुष्य को भी उसके काम पर निर्भर है। जब फल का मिलना दूसरे के हाथ में है तो धीरज तभी तक रहेगा जब तक यह बिश्वास है कि वह हमे अवश्य उस काम का फल देगा और जब फल की प्राप्ति अपने ही परिश्रम और मेहनत से है तो धीरज सदा बना रहता

है। नरम दलवाले "माडरेटों" के धीरज का परिणाम गवर्नमेंट के हाथ में है और अब तक जो लाभ उन्होंने ऐसे धीरज और बिश्वास से उठाया है वह देश की वर्तमान् दशा गवाही दे रही है। तो अब उनके धीरज को हम धीरज कहें या हठ इसका निर्णय पाठक स्वयं कर लें। हम ऐसे धैर्य को दूर ही से प्रणाम करते हैं॥

नाउम्मैदी बुरी बात है सही पर बिना बिवेक और बिचार के आशा रखना उससे भी अधिक बुरा है। यह आशा आदमी को कमज़ोर बना देती है और वह आशा निराशा है जो दूसरे के भरोसे पर की जाय। जिस आशा का फल अन्त में साफ़ जवाब है वह हमारे में कमज़ोरी का पूर्ण लक्षण प्रगट करती है। नरम दलवालों की आशा सर्कार पर निर्भर है जिसके आगे ३० करोड़ मनुष्य Dumb inert mass गूङ्गे बहिरे जड़ जन्तुओं का एक समूह है। जब ऐसा है तो गवर्नमेंट से कुछ उम्मेद करना निरी मूर्खता है। ऐसी आशा रखने वालों में मानो उनके पुरखों के बड़प्पन का जोश बिलकुल मिट गया है। नरम दलवालों की यह आशा मृग तृष्णा तुल्य है जो साफ़ २ धोखा है और देश के लिये हानिकारक है। चित्त से लगी आशा और बिश्वास का झूठा हो जाना मनुष्य जीवन में सब से कठिन और असह्य चोट है। गरम दलवालों की आशा अपने और अपने लोगों के पुरुषार्थ पर निर्भर है नरम दलवाले चाहो इसे नाउम्मैदी कहैं पर वास्तव में सच्ची उम्मैद यही है। नये दल वालों ने उम्मैद नहीं छोड़ दी किन्तु गवर्नमेंट से उसे उठा कर अपने लोगों पर रख दी है जिसमें उनको सफलता हो चोट भी लगने से बचे रहैं और मृग तृष्णा में न फसैं॥

नरम दलवालों का कथन है कि अभी गरम दल का पैदा होना बे मौक़े और बिना ज़रूरत है। देश अभी उनके सिद्धान्तों पर चलने लायक़ नहीं हुआ बल्कि उनके सिद्धान्तों पर चलने से हमारी हानि है। सेत में बिरोध और बिगाड़ पैदा करना अच्छा नहीं जल में रह मगर से

बिरोध करना कहां की अक्लिमन्दी है। दो दल में आपस की फूट से काम पूरा होने में देर होगी और डर है कि कदाचित् काम पूरा न हो सके। इसलिये आपस का मेल और सुलह चाहते हो तो यह नया दल भी हमारा कहना माने और हमारे समान नरम हो जाय। अगर देश को लाभ पहुंचाना चाहते हो तो इस गरम दल को कमज़ोर करो। जो कुछ हमारे ऊपर ज़बरदस्ती की जाय उसे काल चक्र की महिमा समझो और निराश न हो कि ऐसी ही ज़बरदस्ती सदा बनी रहेगी। बहुत करो तो इस बात का शोक प्रगट करते रहो कि हम पर ज़बरदस्ती की जाती है। अगर उस ज़बरदस्ती का बदला लेना या तङ्ग करने का मन करोगे तो यह Morally धर्मनीति के अनुसार बुरा है। राजा से बैर करना तुम्हारे आर्य सिद्धान्त के सर्वथा बिरुद्ध है और समयानुकूल भी नहीं है। हमारे पास हथियार नहीं कि बदला ले सकें इससे जो नाच नचावें नाचते जाओ बोलो मत कहीं ऐसा न हो कि जो कुछ भलाई होने वाली हो वह भी रोक दी जाय। क्योंकि हिन्दुस्तान की किस्मत बिलायत के हाथ गिरों है। तुम्हारा भला या बुरा जो कुछ है सब इङ्गलैंड के आधीन है। अगर स्वराज और स्वच्छन्दता भी चाहते हो तो British supremacy ब्रिटेन निवासियों की उत्कर्षता और सर्वाधिपत्य के साथ चाहो। अब देखना चाहिये नये दलवालों के सिद्धान्त या उसूल क्या हैं। क्या इस दल में कोई ऐसी बात है जो हिन्दुस्तान के लिये हानि कारक है? नये दलवालों का सब से बड़ा उसूल Self help अपनी सहायता अपने आप करना है। जिसके पूरा करने को बायकाट की बड़ी ज़रूरत है। दूसरा उसूल Self presevation आत्म रक्षा है। अब तक हमारी रक्षा का भार सरकार के हाथ में था जिसका नतीजा यह हुआ कि हमारी हालत रोज़ २ अबतर होती गई और मालूम हुआ कि अगर अपनी रक्षा का भार खुद अपने हाथ में न लिया गया तो कुछ दिन में फिर हम इस योग्य न रहेंगे कि अपनी रक्षा अपने आप कर सकेंगे। इसलिये कि हमारा

और गवर्नमेंट का Interest नफा नुकसान आपस में ऐसा मिला झुला है कि गवर्नमेंट को लाचार हो ऐसा करना पड़ा। इसमें सरकार का कोई कुसूर नहीं, कुसूर अपनी कम अकली का है। हम लोगों ने Human nature मानुषी प्रकृति का यथोचित अभ्यास नहीं किया था यदि किये होते तो आत्म रक्षा का भार गवर्नमेंट के हाथ में न सौंप देते॥

प्रत्येक जाति को अपनी उन्नति का खयाल सब के पहले रहता है। हर एक जाति का सिर्फ यह खयाल ही नहीं बरन् उसका कर्तव्य है कि वह अपनी रक्षा करे। हमारे मुकाबिले अङ्गरेज़ की कौम ने इस कर्तव्य का पालन अपने लिये भर पूर किया और गवर्नमेंट के ऐसा करने से हमारा नुकसान हुआ तो वह क्या करे। हमारा ही कुसूर था कि हम पहले ही से न चेते और अपनी रक्षा की तरकीब न सोंचा। अपनी रक्षा का भार गवर्नमेंट पर छोड़ मज़ा उड़ाते रहे। नये दलवाले कहते हैं हम अपनी रक्षा अपने आप करेंगे और ऐसा करने से यदि सरकार का नुकसान है तो उसका होना ज़रूरी है क्योंकि दोनों के नफा नुकसान Interest ऐसे ही मिले झुले हैं तो हमे उसकी कुछ परवाह नहीं। इसी को नरम दलवाले बदला लेना और तङ्ग करना Retaliation and coercion कहते हैं। परन्तु बदला न लेने की हद्द है। अगर दो आदमियों का झगड़ा है तो एक को चाहिये कि वह दूसरे को माफ कर दे चाहो उसने उसका कुछ नुकसान भी किया हो और अगर बदला लेने की पालिसी पर चला जायगा तो झगड़ा कभी रफा न होगा। माफ़ करने की हद्द भी व्यक्ति गत Individual तक है किन्तु जब एक जाति का झगड़ा दूसरी जाति के साथ है तो माफ़ करना Sencide आत्मघात करना है। तवारीखों में ऐसे उदाहरण नहीं पाये जाते कि ऐसी दशा में जब एक कौम का नफा नुकसान दूसरी कौम के साथ आ मिला हो तो एक ने दूसरी कौम को माफ कर दिया हो। ऐसे मौके पर सब ने अपनी रक्षा धर्म समझ की है। हिन्दुस्तान ने भी इस धर्म को इतना नुकसान सह कर

सीखा है अस्तु अन्त को सीखा तो सही। इसी को नरम दलवाले बद-
ला लेना Retaliation और तङ्ग करना Coercian कहते हैं तो कहा करें
कोई हर्ज़ नहीं। हम अपनी रक्षा तभी कर सक्ते हैं जब हमारे में अपनी
मदद अपने आप करने की ताक़त और जोश हो। वह ताक़त और
जोश तभी आ सक्ता है जब हम दूसरों का सहारा लेना छोड़ दें।
माडरेट दल वाले कहते हैं अभी हम अपनी सहायता आप नहीं कर
सक्ते बिना गवर्नमेंट के सहारे के। बहश के लिहाज़ से यह बात मान भी
ली जाय तो इसमें किसका दोष हमारा या सरकार का? लोग अपनी
सहायता आप तभी कर सक्ते हैं जब उनको इसके सीखने का मौका
दिया जाय। अगर १५० वर्ष तक अङ्गरेज़ी राज के उपरान्त भी हम लोग
जो कोई वहशी कौम नहीं थे न बुद्धि में किसी मनुष्य जाति से हेठे हैं
इसे न सीखा और अपनी मदद अपने आप न कर सके तो यह हमारे
शासन कर्ताओं की खुद गरज़ी का सबब है। हम लोगों में इसका माद्दा
है हिन्दुस्तानी भाइयों ने जहां तक मौका मिला है गवर्नमेंट को अपने
काम से दिखा दिया है। इस गुण को प्रगट कर दिखाने के पहिले दूसरे
के सहारे को बिलकुल त्यागना पड़ेगा। इसी को नये दलवाले बायकाट
कहते हैं। अपनी रक्षा करने और अपने पैरों से खड़ा होने का यह एक
मात्र उपाय है। यह कोई नई बात नहीं है इसका चलन हिन्दू समाज
में पहले से चला आया है। जब समाज को किसी मनुष्य के कामों से
हानि पहुंचती है तो उसे बायकाट अर्थात् जाति बाहर कर देते हैं।
जिसमें उस मनुष्य से समाज की रक्षा रहे "त्यजेदेकं कुलस्यार्थे" आदि
वाक्य इसकी गवाही दे रहे हैं। इस बायकाट में आत्म रक्षा का बहुत
भारी भाव है दूसरों को हानि पहुंचाने के बिपरीत उसके कामों के सु-
धार और शिक्षा का प्रयोजन इसमें है। बायकाट शब्द के कान में पड़ते
ही नरम दलवालों को चौकना न चाहिये इससे उनके दल को कोई
भय नहीं है। इसके अनेक रूप हैं उनमें सब से बड़ा Industrial और

Political व्यवसाय सम्बन्धी और राजनीति सम्बन्धी वायकाट या वहिष्कार है। व्यवसाय में वहिष्कार इसलिये है कि हम अपने देश के बनिज को फ्रीट्रेड की पालिसी से कंपिटीशन में अपने को बचावें और अपनी उन्नति करैं "कंपिटीशन" रोज़गार में दूसरी जाति के साथ होड़ में "फ्रीट्रेड पालिसी" व्यवसाय में स्वच्छन्दता वाले क्रम के अनुसार वही जाति और देश पार पा सक्ता है जो Manufacture दस्तकारी में बढ़ा हुआ है और विज्ञान के नये २ हाल के निकले उसूलों को काम में ला सक्ता है। पर कृषक जाति या कृषि प्रधान देश को फ्रीट्रेड से नुकसान है बिलायत इसका सबूत है। जब इङ्गलैंड की तिजारत इस ऊंचे दरजे तक नहीं पहुंची थी तब जो माल बाहर से वहां आता था उस पर भारी महसूल लगा कर उसको उन्होंने महंगा कर दिया और अपने देश की Industry कारीगरी को साथ ही साथ फैलाते भी गये। बिलायत में स्वराज था Protective terrif वाले कानून से रोज़गारियों को बांध रखने में कोई देर न लगी। हिन्दुस्तान में आज न स्वराज है न कानून बनाने का इख़्तियार अपने हाथ में है तब हम कैसे बिलायत वालों के साथ कंपिटीशन में पार पा सकते हैं॥

कानून बनाने में हम लोगों को कहां तक अधिकार है इसे लेजिसलेटिव कौंसिल के मेम्बर खुद जानते हैं। गवर्नमेंट की पालिसी है। "होहिहैं वही जो हम रचि राखा। क्यों करि तर्क बढ़ावहु शाखा॥" अङ्गरेज़ी माल का वायकाट न किया जायगा तो यहां का व्यौपार जड़ पेड़ से उखड़ जायगा। गवर्नमेंट तथा कंपिटीशन और फ्रीट्रेव चाहने वाले ज़रूर इसे बुरा कहेंगे क्योंकि हिन्दुस्तान के व्यौपार का बढ़ना इङ्गलैंड के फायदे के बिरुद्ध है किन्तु हमारा धर्म है कि हम अपनी रक्षा करें इङ्गलैंड या गवर्नमेंट को इसमें नुकसान है तो हमारा दोष नहीं। जैसा इङ्गलैण्ड की तिजारत बढ़ने से हिन्दुस्तान का व्यौपार नष्ट होने में वहां के लोग अपना कुसूर नहीं समझते बरन इसे अपना धर्म और कर्तव्य

मानते हैं वैसाही हम अब उसका बदला चुकाते हैं तो क्या बुराई है ॥

राजनैतिक Political बायकाट ब्रिटिश जाति की सर्व श्रेष्ठता Supremacy हटाना है। इसका Ideal स्वराज है स्वराज से यह मतलब है कि हम लोगों की हालत और इज्ज़त अपने देश में वैसाही हो जैसा अङ्गरेज़ों की इङ्गलैण्ड में फरासीसियों की फ्रान्स में जरमनों की जरमनी में जापानियों की जापान में है। इससे यह प्रयोजन है कि हम अपने मुल्क में अपने लिये कानून खुद बनावें। टैक्स लगावें और मुल्क की आमदनी के रुपयों के खर्च का सब अधिकार अपने लोगों के हाथ में रहे। इसका प्रयोजन सर्कार को तङ्ग करने या बैर भाव का नहीं है बरन गवर्नमेंट के ऐबों को दूर करने और शासन प्रणाली अपने लोगों के हाथ में आने से है। सारांश यह कि हिन्दुस्तान को गुलामी से छुटाय हिन्दुस्तानियों को एक आज़ाद बनाना है और अपनी पोलिटिकल हैसियत दुरुस्त करना है। माडरेट कहते हैं १८३३ के चारटर में और ५८ के घोषणा पत्र में जो हक हमे दिया गया मिल जाय तो हमारा मतलब निकल आवे इसके पाने के लिये हम इण्डियन गवर्नमेंट और इङ्गलैण्ड की पबलिक से प्रार्थना करें दलीलों से कायल करें। इसको भीख मांगना नहीं कहते अगर मांगने से आज़ादी मिल जाय तो कौन ऐसा दुरात्मा है जो इसका बिरोध करै। तब यह बात मानी जाती है कि हमारा हक है और दे दिया भी गया तौ भी हमे न मिला तो यह कोई धोखा है। ३३ का चारटर हमे तब मिला था जब हमे अपना हक पहचानने का शऊर भी न था और देश में हल चल फैला था उस समय क्या निश्चय था कि अङ्गरेज़ी राज्य यहां ऐसा सुस्थिर होगा। दूसरा ५८ का घोषणा पत्र हमे किस समय मिला उसे पाठक स्वयं सोच लें। हम लोगों ने न जानिये कितना रुपया और बुद्धि Energy इस मांगने में खर्च किया पर कुछ फल न हुआ। आज तक मांग कर किसी ने आज़ादी पाई है कौन ऐसी वेवकूफ़ कौम है जो मांगने से हुकूमत दे दे। क्या अमेरिका ने मांग

कर पाया है। अब सवाल यह पैदा होता है कि मांगने से न मिलैगी तो क्या बायकाट हमे आज़ाद कर देगा ?

गवर्नमेंट से हमे आज़ादगी तभी मिलैगी जब हम यह दिखा दें कि बिना सर्कार की सहायता के हम अपना शासन अपने आप कर लेते हैं। स्वच्छन्द होने के पहिले हम सबों को एक जाति Nation बनना पड़ेगा। इसके यह माने नहीं है कि मुसलमान ईसाई पारसी इत्यादि जुदे २ मज़हब के लोगों को अपना २ धर्म छोड़ एक हो जाना पड़ेगा ऐसा होना असम्भव है। किन्तु हर एक जाति वालों को अपना फायदा मुल्क के फायदे के लिये छोड़ देना पड़ेगा और हर एक जाति वालों में यह भाव पैदा करना होगा कि हिन्दुस्तान हमारा है और इसी की भलाई या बुराई से हमारा नफा नुकसान है। एक २ आदमी में वह जोश पैदा करना पड़ेगा जो देश के लिये जान दे देना सुलभ कर दे। पत्थर को बिना तराशे मूर्ति नहीं बन जाती बिना तकलीफ़ उठाये आज़ादी नहीं मिल सकती जब तक ऐसे २ भाव मन में उदय न होंगे तब तक गुलामी का जामा हम से न उतरैगा और इन भावों की उत्पत्ति अङ्गरेज़ी शिक्षा का फल है। शिक्षा भी गवर्नमेंट के भरोसे न रह अपना निज का स्कूल कालिज तथा युनिवर्सिटी हमे करना होगा इसलिये कि सर्कार जो हमे शिक्षा देती है वह उतनी ही कि हम राज भक्ति में दृढ़ रह सर्कारी नौकरी कर सकें। गवर्नमेंट हमे Liberal education देने से हिचकती है। नये दलवालों का सब से बड़ा उद्देश्य शिक्षा बिभाग को अपने हाथ में लेना है जिसमें लड़कों को जी खोल उदार शिक्षा Liberal education दिया जाय। पढ़ लिख सर्कारी नौकरी के पीछे न दौड़ हम स्वछन्द जीविका कर देश सेवा में अपने को लगावें। बायकाट के नाम से कौमी जोश का उभाड़ देश भर में छा रहा है इस अग्नि को शान्त करने का उपाय सोचना मूर्खता है। यह आग देश की दुर्गति को बिना मिटाये बुझैगी नहीं। इस बायकाट

आन्दोलन की कितनी ज़रूरत है सो नरम दलवाले और गवर्नमेंट भी आगे चल कर देखैगी ॥

मदन मोहन शुक्ल ।

एक नई तपस्विनी ।

एक समय की बात है कि एक गौरांगिनी माऊन्ट आबू की चोटी के एक सूनसान बङ्गले में कठिन तप को करती भई । कुछ दिन तक केवल मटन चाप ही चबा कर रही कुछ दिन तक खाली ऐक्स्ट्रा नम्बर १ (Extra No. 1) ही लेती रही यहां तक कि आख़िर को खाली सोडा वाटर और लीमोनेड ही से उदर पोषण करने लगी । तमाम पर्बत उसके तप से हिलने लगा, समस्त पशु पक्षी व्याकुल होने लगे, बड़े २ पादरियों के दिल में वहिशत सवार हो गई न रहा गया प्रभु ईशू को याद किया और पुकारा माई लार्ड न जाने क्या होने वाला है एक मेम अपने कठिन तप से क्या करना चाहती है । क्या हम लोगों की पोल खोलने ही को तप कर रही है ? या हमारी जमात तथा सुसाइटी की उन्नति नहीं देख सकती ? जो हो आप जल्द इस दावानल रूपी तप से हमे वायकाट करिये । आवाज़ आई घबड़ाओ नहीं तुम लोग भी वहीं चलो। कहना था कि बात की बात में तमाम बङ्गला पादरियों से भर गया । गुड फ्राइडे के ठीक 12 A. M. पर हज़रत मसीह प्रगट हुये और बोले "ऐ मेरी भोली भाली तपस्विनी तू क्या चाहती है ?" मेम बोली "या मसीह हम अब कब तक तपस्या का दुख भोगेंगी कमवख्त हिन्दुओं में सात स्वर्ग हैं मैं चाहती हूं कि एक ईशू लोक मेरे लिये बनाया जाय और वहां वे ही लोग जाने पावें जो तुम्हारे अनन्य भक्त हों" । हज़रत ईसा बड़े प्रसन्न हुये और हंस कर बोले "एव मस्तु जाओ आज से तुम उस लोक की लफटेनेन्ट गवर्नेस नियत की गई हो । तुम्हारा वहां अखंड राज्य रहेगा, हिन्दुस्तान के जितने काले कोयला से किरंटे सब तुम्हारे सेवक

होंगे। बिलायत के लौटे हुये इङ्गिलिसाइज़ड नव युवक और राय बहादुरी चाहने वाले खुशामदी तुम्हारे शिकारगाह के जानवर होंगे। सेरों सुंघनी सूंघने वाले पुराने स्टाइल के घोंघा पण्डित तुम्हारी गाउन के बिलायती बटन होंगे। लखनऊ के आवारा स्टूडेंट तुम्हारे पियर्स सोप के बक्स होंगे। बिलायत जाने वाली भारत ललनायें तुम्हारे मुख की पाउडर होंगी। विधवा बिवाह और जात पात उठाने वाले सोशल कानफ्रेन्स के मेम्बर तुम्हारी बाईसिकिल के लैम्प होंगे। कर्मचारियों की हां में हां मिलाने वाले खुदगर्ज़ तुम्हारे जूता पोछने के ब्रुश होंगे। अपने फायदे के लिये स्वदेशी के प्रचार में बाधा डालने वाले कलकत्ते के माड़वारी और पुराने ढर्रे वाले अमीर तुम्हारी टोपी के खूबसूरत चिड़ियों के पर होंगे। इस समय के कोई २ हिन्दी पत्र के छिछोरे संपादक तुम्हारे गुसल खाने के कमोड होंगे। मुफ़्त में पत्र पढ़ने वाले नादिहन्द ग्राहक तुम्हारे लेटर वाक्स Letter Box होंगे। जाओ हमारे बर प्रदान से तुम वहां अटल राज्य करोगी। यह कह प्रभु ईशू अन्तर्ध्यान हो गये। वह तपस्विनी भी अपनी तपस्याका फल पाय सन्तुष्ट हो ईशू लोक को सिधार गई॥ इति श्री मसीह पुराणे तपश्चर्या फल निरूपणं नाम प्रथमोऽध्ययः॥

लक्ष्मी कान्त भट्ट।

विषमप्यमृतं क्वचिद्भवेदमृतं वा विषमीश्वरेच्छया।

ईश्वर की इच्छा से विष भी कभी अमृत हो जाता है और अमृत विष। हत भाग्य हिन्दुस्तान के लिये विष अमृत हो गया हो ऐसा कभी न देखा गया हां अमृत अलबत्ता विष हो जाता है। लार्ड रिपन महोदय ने देश में लोकल सेल्फ गवर्नमेंट इसलिये स्थापित किया था कि हम लोगों में आत्म शासन का माद्दा आवे अपने आप अपना शासन हम कर सकैं। लार्ड रिपन का धन्यवाद है कि उन्होंने शुद्ध देश की भलाई की नीयत से यह क्रम निकाला था जो प्रत्यक्ष अमृत स्वरूप था

पर हमारे हत भाग्य से वह अमृत विष हो गया। आत्म शासन अर्थात् अपनी हुकूमत तथा अपने मुल्क का इन्तिज़ाम हम अपने आप करने लग जांय या उसे सीखें सो तो खाक भी न भया। दुखदायी म्युनिसिपलटी का जन्म नगर २ अलबत्ता हो गया: म्युनिसिपलटी का क़ायम होना भी बुरा न था जो उसकी चूंदी ज़िला के कलकृरों के हाथ में न रहती और मेम्बर केवल प्रजा की ओर से चुने जाते। इसके चुनने में गवर्नमेंट को टांग अड़ाने का क्या काम था। इस टांग अड़ाने का यह फल हुआ कि कलक्टर साहब उसी को मेम्बर मुकर्रर कर देते हैं जो सर्कार के खुशामदी और कर्मचारियों के हां में हां मिलाने वाले होते हैं। जिससे नुकसान यह हुआ कि जहां गवर्नमेंट और प्रजा के Interest नफा नुकसान में Competition परस्पर की उतरा चढ़ी आ पड़ती है वहां खुशामदियों का नम्बर अधिक होने से गवर्नमेंट के ओर का वोट अधिक हो जाता है और वह मन्तव्य Resolution पास कर दिया जाता है। उससे गवर्नमेंट फायदे में रहती है प्रजा पिस जाती है इसी कारण भारी भारी चुङ्गी तथा अनेक तरह के टैक्स बराबर बढ़ते गये और बढ़ते जा रहे हैं। जिस चीज़ का ज़ियादह खर्च देखा गया उस पर कड़ी चुङ्गी कस दी गई जिसका कम खर्च मालूम हुआ उस पर चुङ्गी भी मामूली रक्खी गई। जैसा घी और मसालों में घी का खर्च अधिक पाया गया तो उस पर चुङ्गी बढ़ा दी गई मसालों में कम कर दी गई ऐसा ही और २ चीज़ों में भी है। घी के बारे में तो हम कई बार लिख चुके हैं कि गो धन क्षीण होने से बल और पुष्टि देने वाले घी और दूध हम लोगों को यों ही दुर्लभ हो रहे हैं तो घी दूध पर चुङ्गी कस देने का क्या काम था। क्या यही मनजूर है कि हम सर्वथा निर्मूल हो जांय। जब हमी न रहेंगे तब चुङ्गी किससे वसूल की जायगी। हाय बड़ा दुःख होता है किससे कहें अत्याचार का अन्त है। यह हम लोग नहीं चाहते कि ये भांति २ के कर और चुङ्गी सर्वथा उठा दी जाय किन्तु इतनी मृदु रहे कि किसी

को न अखरै । जेठ की कड़ी धूप कैसा अखरती है वही माघ पूस का मृदु घाम सो सुहावना मालूम होता है । जो कहो टैक्स और चुङ्गी साधारण और मृदु कर देने से खर्च जो नहीं आंटता । तो क्यों इस क़दर खर्च म्युनिसिपलिटी बढ़ाये है "एकस्य क्षणिका प्रीतिरन्यः प्राणैर्विमुच्यते" हम लोगों के शरीर का रस खींच Luxury अमीरी बढ़ाई जाती है । अस्तु हमे तो उस अमीरी का भी कोई सुख नहीं मिलता अङ्गरेज़ी बस्ती के आराम और आशाइस में हमारे शरीर का प्राण बदूण लाखों रुपया लगाया गया तो हमे क्या लाभ । जो केवल हिन्दुस्तानियों के सिपुर्द म्युनिसिपलिटी रहती तो कदाचित् ऐसा न होता । कहां तक अपने लोगों की वर्तमान दीन दशा पर खयाल न किया जाता । इसी से हमने कहा हमारे अभाग से अमृत भी विष हो गया । जो आत्म शासन के लिये था वह महा दुःख अत्याचार के रूप में परिणत हो गया । इस चुङ्गी के सम्बन्ध में हमे न जानिये कितनी बातें कहना है जिनमें संशोधन बहुत आवश्यक है । इस समय म्युनिसिपलिटी के अधिकारियों से इतना निवेदन करना बहुत ज़रूरी जान पड़ता है कि स्टेशन से उतरतेही तलाशी में जो भले २ लोगों की बे इज्ज़ती की जाती है सो उठा दी जाय । हमने अपनी आंखो से देखा है कि साहब लोग या कोई बड़े रईस बराबर बग्घी पर चढ़े चले गये हैं उन्हें किसी ने नहीं पूंछा गरीब मुसाफिर जो इक्के पर हैं वें घंटों तङ्ग किये गये हैं और उनकी तलाशी ली गई है । दूसरे घी की चुङ्गी तो अवश्य उठा देनी चाहिये नहीं तो कुछ दिनों में रुपये का आधासेर घी बिकैगा । इससे यही सिद्ध हुआ कि हम लोग रूखा सूखा खा किसी तरह प्राण पोषण करते हुये बिदेशियों की सेवा टहल के लिये जीते रहैं । हमारे में बल और पौरुष की जड़ कटी रहे । अस्तु

हा शोक !

इतने थोड़े वय में बाबू राधाकृष्ण दास का इस प्रकार संसार को त्यागना हिन्दी साहित्य को बहुत हानि कारक हुआ। ये हमारे श्रद्धास्पद सुग्रहीत नामधेय हिन्दी साहित्य के एक मात्र जन्म दाता बाबू हरिश्चन्द्र के फुफेरे भाई थे। यद्यपि अब इस समय हिन्दी में लेखकों की कमती नहीं है किन्तु लेख की वह प्रणाली जिसे भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र निकाल गये थे उसका कुछ स्वाद पढ़ने वालों को बाबू राधाकृष्ण ही के लेख में मिलता था। बिशेष शोक इनकी कुसमय की मृत्यु का है। ४२ वर्ष भी कोई उमर है किन्तु इस कलिकाल कराल व्याल को कौन मना कर सकता है कि वह अपना प्रभुत्व प्रगट करने से रुका रहै। "पापी चिरंजीव सुकृती गतायुः" ॥ उक्त बाबू साहब हिन्दी के सुलेखक ही केवल न थे वरन सौजन्य के प्रवाह, शील के सागर, वैष्णव सम्प्रदाय के पक्के हिन्दू और पुष्टि मार्ग के दृढ़ प्रेमी थे। गो लोकबासी कृष्ण भगवान् इनको आत्मा को सायुज्य दें ॥

विक्रमाङ्क देवचरित चर्चा।

उक्त पुस्तक को हम सहर्ष और धन्यबाद पूर्वक स्वीकार करते हैं। यह पुस्तक द्विवेदी जी ऐसे कृत विद्य की योग्यता का एक नमूना है। महाकवि बिल्हण की प्रतिभा का निचोड़ समालोचना के ढङ्ग पर इसमें रख दिया गया है। मूल्य ≡) है। संस्कृत साहित्य के रसिकों को यह बहुत ही मनोरंजक होना चाहिये-पता इण्डियन प्रेस प्रयाग ॥

हिन्दी केशरी।

राज नैतिक आन्दोलन के अग्रणी तिलक महोदय के केशरी का अनुवाद रा० रा० माधोराव सप्रे के प्रबन्ध से नागपुर से प्रति सप्ताह निकलना आरम्भ हुआ है। मूल्य अग्रिम वार्षिक मै पोष्टेज के २) है। इसकी लेख प्रणाली टाइप और कागज़ सबी बढ़िया हैं। इससे अधिक सस्ता साप्ताहिक और क्या हो सक्ता है। भाषा में कहीं २ मराठी की झलक आ गई है आशा है आगे चल वह भी न रहैगी ॥

प्राचीन नाम माला ।

अङ्ग-गङ्गा के दक्षिण तट से कोशिकी नदी तक का भूभाग अंग देश कहलाता था । अब इस समय भागलपुर के पास का सब देश इसमें शामिल है । इसकी राजधानी प्राचीन समय में चम्पा थी जिसे लोमपाद पुरी कर्णपुरी या मालिनी भी कहते हैं । दण्डी ने दश कुमार चरित में ऐसा लिखा भी है । "अंगेषु गङ्गातटे वहिश्चम्पायाः" जेनरल कनिंगहैम का मत है कि चम्पा भागलपूर से १४ मील पूर्व थी । एक गांव वहां इस नाम का अब भी है जिसे चम्पापुर कहते हैं । धर्मशास्त्र वालों ने बिना तीर्थ यात्रा के अंग, बंग, कलिंग, सौराष्ट्र और मगध में जाने से पुनः संस्कार करना लिखा है "अंग वंग कलिंगेषु सौराष्ट्र मगधेषु च तीर्थ यात्रां विना गत्वा पुनः संस्कारमर्हति " ॥

अन्तर्वेदी अन्तरवेद या दो आबा प्रयाग से हरिद्वार पर्यन्त गंगा और यमुना के बीच का देश । पुराणों में यह देश बहुत पवित्र माना गया है ॥

अन्ध्र-अब यह तिलङ्गाना के नाम से प्रसिद्ध है । इसकी पश्चिमी सीमा घाट पर्वत थी । गोदावरी और कृष्णा इसकी उत्तर और दक्षिण की सीमा थी १५० मील लम्बी कोलेर नाम की झील यहां ही है । अङ्गरेज़ी पलटन में पहले यहीं के लोग भरती हुये इसी से फौज़ के सिपाहियों का नाम तिलङ्गा पड़ा। ऐसा मालूम होता है जिस समय मुसलमान आये अन्ध्र देश वाले सम्पूर्ण दक्षिण में अपना प्रभुत्व जमाये थे। अब्धि नगरी, द्वारिका ॥

अम्बा नदी-ससुरखदेरी एक क्षुद्र नदी जो बरसात के महीनों में फतहपूर के पास से निकल प्रयाग के पश्चिम यमुना में जा मिली है। महाभारत के उद्योग पर्व में काशिराज कन्या अम्बा के इतिहास से इसकी दन्त कथा मिलती है ॥

अर्द्ध जाह्नवी, कावेरी नदी । अर्बुदगिरि, आबू का पहाड़ । अलकनन्दा-गङ्गा की एक शाखा ॥

अश्मक-दक्षिण का एक देश-किसी २ का मत है । ट्रावनकोर का नाम अश्मक है जो मदरास प्रेविडेन्सी में समुद्र के दक्षिण तट तर एक

स्वच्छन्द पुराना राज्य है। वृहत् संहिता में बाराह मिहरने कूर्म बिभाग के प्रकरण में अश्मक को पश्चिम और उत्तर दिशा में लिखा है "पश्चिमोत्तरस्यां दिशि माण्डव्य तुषारतालहन मद्राः। अश्मक कुलूतनहड़स्त्री राज्य सिंह वनखण्डाः"। इसमें कुलूत कदाचित् किलात है॥

अवन्ती–इसका दूसरा नाम बिशाला भी है। कालिदास ने मेघ दूत में "श्री बिशालां बिशालां" लिखा है। अवन्ती पुराने समय उस देश की राजधानी थी जहां शकारि बिक्रमादित्य राज करते थे। अब यह सिप्रा नदी के तट पर उज्जैन के नाम से प्रसिद्ध है। जहां ज्योतिर्लिंग महाकालेश्वर का प्राचीन मन्दिर है। मालवा का दूसरा नाम अवन्ती है। सप्तपुरियों में एक "अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवन्तिका। पुरी द्वारावती, क्षेया, सप्तैता, मोक्षदायिका"। महाभारत के समय यह देश दक्षिण की ओर बिस्तार मे नर्मदा तक था और पश्चिम की ओर माही नदी तक था। अवन्त्य देश के उत्तर एक दूसरा छोटा सा राज्य था जिसकी राजधानी चर्मणवती या चम्बल पर दशपुर थी जो अब ढोलपुर या धवलपुर के नाम से प्रसिद्ध है॥

आनर्त–सौराष्ट्र भी इसी का दूसरा नाम है। अब यह काठियावार के नाम से प्रसिद्ध है। प्राचीन समय द्वारिका इसकी राजधानी थी पीछे बल्लभीपुर हुई। राणा वंश के क्षत्री यहीं से जाकर उदैपुर में बसे प्रभास क्षेत्र जहां यादव वंशी आपस में लड़ कट मरे यहीं है। यह तीर्थ समुद्र के तट से थोड़ी दूर पर एक झील है। पुरानी द्वारिका हाल की द्वारिका से ७५ मील दक्षिण पूरब को रैवतक पर्वत के समीप जूनागढ़ के पास थी। रैवतक अब गिरिनार के नाम से प्रसिद्ध है। माघ कवि ने शिशुपाल बध में रैवतक का वर्णन बड़ी धम धाम के साथ अति उत्कृष्ट कविता में किया है। बल्लभीपुर भावनगर से १० मील पर वायव्य कोण को था जिसके उजड़े ढूहे वहां अब भी पाये जाते हैं। यहां की स्त्रियों के सौन्दर्य की कवियों ने बहुत प्रशंसा की है॥

आभीर–कोंकण देश के अधोभाग में तापी नदी के पश्चिम विन्ध्य पर्वत के ऊपर यह देश है "श्री कोंकणादधो भागे तापीतः पश्चिमे तटे आभीर देशो देवेशि विन्ध्यशैले व्यवस्थितः" और पुराण इसे उत्तर में

मानते हैं किन्तु महाभारत और रामायण के अनुसार यह पश्चिम में था। अर्जुन के दिग् विजय में इसका नाम आया है ॥

इन्द्रप्रस्थ-पुरानी दिल्ली के नाम से प्रसिद्ध है। यह यमुना के बांये तट पर हस्तिनापुर से ३० मील नैर्ऋत्य कोण की ओर है हरिप्रस्थ्य या शक्रप्रस्थ भी इसे कहते हैं। इन्द्रप्रस्थ वृकप्रस्थ जयन्त वारणावत ये सब एक साथ वेणी संहार में भट्ट नारायण ने लिखा है इससे मालूम होता है कि वे सब भी इसी के पास ही पास थे और पाण्डवों के अधिकार में रहे ॥

इरावती-रावी लाहौर इसी नदी पर है ॥

उत्कल-उड़ैसा ताम्रलिप्ता नदी के दक्षिण कपिशा नदी तक। रघु-वंश में कालिदास ने लिखा है ॥

स तीर्त्वा कपिशां सैन्यैर्बद्धद्विरदसेतुभिः।
उत्कलादर्शितपथः कलिङ्गाभिमुखं ययौ ॥

कुतुबुद्दीन ऐबक के समय तक यह स्वच्छन्द राज्य था अब यह बङ्गाल की लफटिनेंटी में शामिल है। यहां की भाषा और ब्राह्मण प्रसिद्ध हैं। "सारस्वताः कान्यकुब्जाः गौड़ा मैथिल उत्कलाः" पञ्च गौड़ों में उत्कल भी है। "जगन्नाथप्रान्तदेश उत्कलः परिकीर्त्तितः" इस का दूसरा नाम ओड़ भी है उड़ैसा कदाचित इसी से बना है ॥

एकचक्रा-आरा ज़िला महाभारत के समय बकासुर के अधिकार में यह देश था ॥

कच्छ-काठियावार से लगा हुआ प्रायद्वीप कच्छ या भुज्ज के नाम से प्रसिद्ध यहां की धरती निपट बलुली है कच्छी घोड़े प्रसिद्ध हैं ॥

करतोया-दिनाजपुर और रङ्गपुर के ज़िलों में यह नदी बही है। इसका नांघना बर्जित है। गण्डकी बाहु तरणात्करतोयाविलंघनात्। कर्म्मनाशाजलस्पर्शात्पुण्यक्षरति कीर्त्तनात्। गण्डकी में तैरने से करतोया को नांघने से कर्म्मनाशा का जल छूने से और पुण्य के कामों को मुह से कहने से पुण्य जाता रहता है ४

कर्म्मनाशा-यह नदी बनारस के पूर्व बिन्ध्य पर्व्वत से निकल गङ्गा में जा मिली है पुराणों में लिखा है कि त्रिशंकु की लार टपकने से यह

नदी बनी है कदाचित इसीसे इसका जल अपवित्र समझा गया है। बरसात में यह बड़ा ज़ोर करती है एक बारगी बढ़ उठने से पास के रहने वालों की बड़ी हानि करती है॥

कलिङ्ग—उड़ेसा के दक्षिण गोदावरी और समुद्र के सङ्गम तक का देश। अब इसे कारोमण्डल कहते हैं। नार्दरन् सरकार और राज महेन्द्री भी इसी में है। अङ्ग बङ्ग कलिङ्ग उत्कल सुंह सब मिले २ हैं अन्ध्र या तिलङ्गाना की कलिङ्ग देश से छाड़ा मेंड़ी है। अपवित्र देशों में कलिङ्ग भी गिनाया गया है॥

काशिकोशल--यह अयोध्या और काशी के बीच का कोई देश था॥

कांची-प्राचीन काल में यह द्रविड़ देश की राजधानी थी; सप्तपुरियों में एक कांची भी है। यह दो हिस्सों में बटी है विष्णु कांची और शिव कांची विष्णु कांची में बरदराज का पुराना मन्दिर है यह बनावट में जगन्नाथ के मन्दिर से बहुत मिलता है। दक्षिण की ओर विष्णु कांची है। उत्तर को शिव कांची। इसका दूसरा नाम कंजिबरम् है। कि‍सी समय यह बड़ा भारी शहर था अब उजाड़ पड़ा है। विष्णु और शिव के दो मन्दिर अलबत्ता पुरानी वस्तु बिद्या की साक्षी दे रहे हैं जो इन दिनों के इञ्जीनियरों के दांत खट्ट किये देते हैं। मन्दराज से नेऋत्य कोण की ओर वेगवती नदी के तट पर है। यह नदी केवल बरसात में बहती है ८ महीने सूखी पड़ी रहती है। कांची का दो हिस्सों में बंट जाना प्रगट करता है किसी समय वैष्णव और शैवों में बड़ा झगड़ा बढ़ गया था॥

काम्बोज--यह देश गिलगिट से बलख या बाल्हीक को हिन्दूकुश पहाड़ के द्वारा अलग करता हुआ लद्दाक तक फैला हुआ है घोड़े और लम्बे २ रोयें वाले जानवरों के लिये प्रसिद्ध है। यहां अखरोट के बहुत पेड़ हैं कालिदास ने रघु के दिग् बिजय में ऐसा लिखा भी है॥

काम्बोजाः समरे सोढुं तस्य बीर्जमनीश्वराः।
गजालान परिक्लिष्टैरक्षोटैः सार्धमानता॥

कामरूप--कामरूकामक्षा-एक प्राचीन राज्य जो करतोया नदी से आसाम के ओर तक फैला हुआ था। इसका बिस्तार उत्तर की ओर

हिमालय तब और पूर्व की चीन तक था इसकी राजधानी प्राग् ज्योतिष ब्रह्मपुत्र या लौहित्य नद के दूसरे तट पर थी। कामरूप का राजा महाभारत के युद्ध में दुर्योधन की सहायता के लिये चीनियों की सेना लेकर आया था। रघु के दिग् बिजय में भी। "चकम्पे तीर्ण लौहित्ये तस्मिन् प्राग् ज्योतिषेश्वरे। तद्गजालानतां प्राप्तैः सहकालागुरुद्रुमैः॥

(शेष आगे)

अचरज ।

बंग देशियों में बीरता-मुसलमान तअस्सुब से खाली । ब्राह्मणों में एका । काहिलों में अकिल । तीर्थली पण्डों में विद्या । कुञ्जड़ों में सभ्यता । वेश्याओं में सतीत्व । बनियों में जोश । पुलिस के मुहकमे में दया । ऐङ्गलो इण्डियन में हिन्दुस्तानियों से हमदरदी । शराब खारों में मज़हबी पाबन्दी । ईसाईयों में परछिद्रान्वेषण का अभाव । माड़रियों में नई रोशनी । बिलायत के लोगों में हमवतनी के जोश का होना । अमलों में रिशवत का न होना । आर्यसमाज में ब्राह्मणों से स्नेह । नेचरियों में सदाचार । हिन्दुस्तान के अमीरों में स्वादेशी भाव । मेम साहबा में संकोच । गवर्मेंट के मुल्की इन्तिज़ाम पालिसी से रहित । हिन्दी पत्रों में मुनाफा ॥ L

REGISTERED No. A—308.

हिन्दी प्रदीप

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै।
बचि दुसह दुरजन वायुसों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सभै विवेक विचार उन्नति कुमति सब यामें जरै।
[illegible] प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

जून १९०७

मासिक पत्र

जि० २९ सं० ६

सम्पादक और प्रकाशक पंडित बालकृष्ण भट्ट प्रयाग

विषय सूची

सभार्यों पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥) समर्थों से ३।=) पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द की जिल्द मै पोस्टेज २)

यूनियन प्रेस इलाहाबाद में मुद्रित हुआ

—:००:—

जि० २६ } प्रयाग { जून
सं० ६ } { सन् १९०७ ई०

प्राचीन भारत और इसकी बर्तमान अवस्था ।

भारत का एक वह समय था जब यहां के लोग बराबर खुशहाल थे । यहां का जल वायु, स्वर्णमयी उर्वरा पृथ्वी, पहाड़ अनेक प्रकार की खाने और बड़ी २ नदियां सब मिल अटूट संपत्ति यहां बढ़ाये हुये थीं । पुराने लोगों में एक छोटा सा मनुष्य भी अपने को राजा के बराबर सुखी मानता था । यहां के लोग ऐसे प्रतिष्ठित और आदरणीय थे कि संसार भर के लोग इनकी प्रतिष्ठा करते थे और इनकी रहन सहन तथा

चाल ढाल के अनुकरण को अपना बड़प्पन मानते थे। राजा लोग बड़े शूर बीर असंख्य धन संपत्तिवाले थे और ठीकठीक प्रजा का इन्साफ करते थे। प्रजा भी ऐसी राज भक्ति थी कि प्राणपण से अपने राजा का साथ देने में अपना कर्तव्य माने हुये थी। व्योपारी दूर के देशों में यहां की उपज और शिल्प पहुंचाते हुये धन में कुबेर तुल्य बने थे। हेरोडोटस जो पांचवी सदी में हुआ बतलाता है कि यहां के लोग ईजिप्ट वालों के साथ उस समय व्यापार करते थे और बेबीलन और सीरिया तक पहुंचे हुये थे। उसका यह भी कथन है कि हिन्दू जाति दुनिया की सब जातियों में श्रेष्ठ समझी जाती थी। राजा प्रजा से बहुतही कम कर उगाहते थे। यावत् पदार्थ सस्ते और सुलभ थे अकाल और मरी का कहीं नाम भी न था। लोग सर्वथा रोग दोष मुक्त थे। यहां के प्राचीन ब्राह्मण और ऋषियों का कहना ही क्या मानो बुद्धि के सागर थे। उनके पवित्र विचार, सर्व भूत दया, सब पर समान दृष्टि और समभाव तथा तितिक्षा मानो उनका भूषण था। उन्हीं से हम को शिक्षा मिली है कि हम अपने को कैसे सुधारैं अपने भाइयों के साथ कैसा बर्ताव करैं और जगत् पिता परमेश्वर में कैसी अनन्य भक्ति रक्खै। इन्हीं कारणों से यहां की भूमि सुवर्णमयी कहलाई। अब ऐसी बिगड़ी दशा में भी अंगरेज़ लोग इसे Golden Land कह कर पुकारते हैं। शोक है कि यह सोने की चिड़िया अब इस समय दाने दाने को तरस रही है। जब अंगरेज़ पहले पहल यहां पधारे थे उस समय दुनिया के सब मुल्कों में यह दस्तकारी में बढ़ा था। यहां के बने हुये सूती तथा रेशमी कपड़े शाल दुशाले, ढाका के चिकन, अहमदाबाद के कीनखाब, सिंध के मिट्टी के बरतन और तरह २ के जवाहरात वगैरः बहुत दूर तक पाये जाते थे। अब वही सब कारखाने मिट्टी में मिल गये। करोड़ों मनुष्य जो इसके बदौलत मालामाल थे अब फ़ाकेमस्त हो रहे हैं। अब तो ऐसा हो गया है कि यहां जो कच्चा बाना Raw Materials उपजता है सब विला-

यत वाले ढो ले जाते हैं। वे लोग जो कुछ छोड़ देते हैं उसी से हम अपना निर्वाह करते हैं भीतर से पोले बने ऊपर से अपने को लाल गुलाल बनाये बैठे हैं। इस में संदेह नहीं गवर्नमेंट ने बहुत से मुहकमे जैसे रेल तार डाक तथा बहुत सी पनचक्की, कोयले की खान और चाय की खेती का बन्दोबस्त कर रक्खा है जिस से बहुत से दुखिया मेहनत मज़दूरी कर अपना पेट पाल लेते हैं पर यह सब कारखाने अपने निज के न होने से उनका कुल फायदा विलायत वालों ही को होता है। यही कारण है कि हम दिन दिन क्षीण होते जाते हैं। इतने पर भी सरकारी टैक्स, फौज़ का खर्च, बड़े २ अफ़सरों की तनखाह, विलायत वालों को पेन्शन यहां से देना, तथा मुल्की मुआमिलों में हमारा कुछ भी इख्तियार न होना इत्यादि हम को प्रति क्षण क्षीण ही करता जाता है। इस में सन्देह नहीं गवर्नमेंट ने हमारे लिये बहुत कुछ आशाइस के सामान और उत्तम बन्दोबस्त कर दिया है जिस से शेर बकरी एक घाट पानी पी सकै पर जब पेट कझाता है तो दुनिया की सब नियामतें फीकी मालूम पड़ती हैं। हमारी शिक्षा के लिये जो कुछ सरकार ने किया है उस को भी हम धन्यबाद पूर्बक स्वीकार करते हैं। पर जो कुछ भलाई इस भांत सरकार करती है वह दाल में निमक के बराबर भी नहीं है। इसलिये हम को ऐसा मालूम देता है कि जब तक हम अपने ऊपर निर्भर हो अपने देश भाइयों में सहानुभूति रख तथा अपने निज स्वार्थ को ताक पर रख कोई काम न करैंगे तब तक हमारा कल्याण न होगा। आज कल देश में स्वदेशी और बायकाट की चर्चा अधिक फैल रही है बड़े २ लेकचर भी हुआ करते हैं अखबारों में भी कालम के कालम इसी विषय पर लिखे जाते हैं पर असल में काम कम होता देख पड़ता है। मसल है "जो गरजता है वह बरसता नहीं" केवल बातों ही से हमारा भला न होगा कुछ करना भी हमारा मुख्य कर्तव्य है। हम को टोगो जापान के बादशाह का उदाहरण मान

काम करना चाहिये । कहा जाता है कि टोगो कभी १० मिनिट भी अपनी ज़िन्दगी में नहीं बोला और काम उसने वह किया जो जापान की वर्तमान् उन्नति का कारण समझा गया । इतना अवश्य है कि बिना आन्दोलन किये सर्व साधारण अपने सुधार के लिये कटिबद्ध नहीं हो सकते इसलिये थोड़ा बहुत जैसा कि आज कल के गरम दल वाले करते हैं ज़ुरूरी है पर काम करने में सब को एक मत होना बहुत आवश्यक है । कुछ ध्यान में नहीं आता कि हम लोग किस क्रम पर चलें । इधर बहुत अधिक आन्दोलन किया गया तो उसका फल यह मिला कि लाजपत से पुरुष रत्न जलावतन कर दिये गये । चुपचाप बैठे रहते हैं तो लोगों की नीन्द नहीं टूटती । देखिये बुद्धिमान् देश हितैषी अब हमारे लिये क्या क्रम निकालते हैं जिस पर चल हम अवश्य कृतकार्य हों ॥

शस्त्र शिक्षा ।

"विद्या शस्त्रं च शास्त्रं च द्वे विद्ये प्रतिपत्तये" यूरोप के देशों में जैसी शिक्षा दी जाती है उस से यहां की शिक्षा प्रणाली में बड़ा अन्तर है । यहां शिक्षा विभाग गवर्नमेंट के हाथ में है वह अपने प्रयोजन से जिसमें क्लर्की का काम निकल सके हमे शिक्षा देती है । यूरप में शिक्षा का प्रचार प्रजा के हाथ में है वहां के लोग जिस तरह की शिक्षा से देश को लाभ समझते हैं वैसी शिक्षा देते हैं । इन भांत २ की शिक्षाओं में सब से बढ़ कर शस्त्र शिक्षा Military education है और यह शिक्षा प्रजा मात्र को दी जाती है । बल्कि जरमनी और प्रूशिया में तो ऐसा नियम है कि चाहो कितना ही अमीर का लड़का हो साधारण शिक्षा समाप्त करने के उपरान्त दो वर्ष फौज़ में रह कवायद आदि युद्ध विद्या का सब काम उसे अवश्य सीखना पड़ता है । यह शस्त्र शिक्षा इतनी उपकारी है कि देश की उन्नति या अवनति का कुल दार मदार इसी

पर आ लगा है। यूरोप के देशों से और यहां से यह बड़ा फर्क शिक्षा के सम्बन्ध में है। यहां जो शस्त्र चलाने और युद्ध में प्रवीण हैं वे पढ़ना लिखना बिलकुल नहीं जानते यूरोप के देशों में बड़े २ विद्वान् वैज्ञानिक तथा दार्शनिक शस्त्र विद्या में प्रवीण रहते हैं जिससे लाभ यह है कि दोनो विद्याओं की सम्मिलित शक्ति से युद्ध के नये २ नियम और नई २ तरह की तोप और बन्दूकें डिनामाइट इत्यादि निकलते आते हैं और वहां के लोग पृथ्वी पर अपना राज्य बढ़ाते चले जा रहे हैं॥

पहले जब हमारा देश उन्नति के शिखर पर आरूढ़ आस पास के देशों का सिरताज बना था उसका प्रधान कारण यही था कि यद्यपि युद्ध करना क्षत्रियों का काम था पर शास्त्र पारंगत ब्राह्मण भी धनुर्विद्या बिशारद और धनुर्वेद में सम्यक् निष्णात होते थे। विश्वामित्र और वशिष्ठ का युद्ध इसे सिद्ध करता है कि ब्राह्मण और तपस्वी ऋषि भी शस्त्रों के प्रयोग में भरपूर कुशल थे। वशिष्ठ शस्त्र चलाना न जानते होते तो निःसहाय अकेले बिश्वामित्र की बड़ी सेना का सामना न कर सकते। यहां तक कि बिश्वामित्र को लाचार हो यह कहना पड़ा "धिग् बलम् क्षत्रियबलं ब्राह्मणस्य बलं बलम्" युद्ध विद्या कुशल ब्राह्मण अपने बुद्धि बल से नई २ युक्तियां निकाल क्षत्रिय शिष्यों को उन्हें सिखा कर निपुण कर देते थे। पुराणों से यह स्पष्ट है कि बनों में कन्द मूल से अपना गुज़र और आहार वृत्ति करने वाले ब्राह्मणों पर जब क्षत्रियों ने अन्याय करना आरंभ किया और उस समय के प्रधान ऋषि यमदग्नि को मार डाला तब वेद पाठी ब्राह्मणों ने परशुराम का आश्रय ले कैसी प्रचण्ड युद्धाग्नि भारत वर्ष में प्रज्वलित की और २१ बार क्षत्रियों का नाश किया। ऐसा ही महाभारत के युद्ध के पहिले जब भारत में प्रताप और बीर्य के सूर्य का मध्यान्ह था निष्किञ्चन द्रोणाचार्य ने अपने पुत्र अश्वत्थामा को आटा

पानी में घोल दूध की जगह उसे पिला प्रसन्न किया और अश्वत्थामा को सन्तोष हो गया कि हम ने सच्चा दूध पिया। पर द्रोणाचार्य को ब्राह्मण वृत्ति पर घृणा आई और अपने गुरु भाई पांचाल देश के नरेश द्रुपद के पास गये। इस आशा से कि यह हमारे सहपाठी और मित्र हैं हमारी दरिद्रता दूर कर देंगे। राज सिंहासन पर द्रुपद को सुशोभित देख द्रोण ने अपनी पहिली मैत्री का बहुत कुछ परिचय दिया पर द्रुपद ने जब उनको अपरिचित की भांत देखा जैसा बहुधा धनवानों का क्रम है और हंस कर बोला "अरे ब्राह्मण संसार में यह नियम चला आया है कि मैत्री बराबर वाले की होती है पण्डित की पण्डित के साथ धनी की धनी के साथ ऐसा ही राजा की मैत्री राजा के साथ तब हमारी तुम्हारी मित्रता कैसी। "हम हैं राजा तुम परम निष्किञ्चन ब्राह्मण। तुम झूठ बोलते हो हमारी और तुम्हारी मैत्री सर्वथा असंगत है" द्रोणाचार्य को द्रुपद की यह बात बज्रपात सी लगी क्रोध से नेत्र लाल हो आये बोले "अच्छा द्रुपद यदि तुम को ऐसा ही अभिमान है तो मैं राजा ही होकर तुम से मित्रता करूंगा"। अब द्रोण उस समय के सब से बड़े राजा महाराज धृतराष्ट्र का आश्रय लेने के विचार से हस्तिनापुर पहुंचे और नगर के बाहर एक कुयें पर संध्या कर रहे थे कि वहां कई एक राज कुमार गुल्ली खेलने आये और खेल में गुल्ली उनकी कुयें में चली गई। राज कुमार गण उसके निकालने का यत्न करने लगे पर गुल्ली न निकली तब द्रोण ने उनसे धनुष लेकर ऐसा एक बाण कुयें में मारा कि गुल्ली आकर कुयें के बाहर गिरी राज कुमार सब अचरज में आये और घर जाय यह बात भीष्मपितामह से कहा। भीष्म बड़े आदर के साथ द्रोण से मिले और राज कुमारों को बाण विद्या सिखाने के लिये इन्हे नियत किया। जब अच्छी तरह शस्त्र विद्या सीख चुके तब अपने प्रधान शिष्य अर्जुन

से यही गुरु दक्षिणा चाहा कि द्रुपद को जीता पकड़ लाओ। सब राज कुमारों को साथ ले द्रोण पांचाल देश पर चढ़ गये और घनघोर युद्ध के उपरान्त अर्जुन द्रुपद को बांध द्रोण के सन्मुख लाये। तब द्रोण हंस कर द्रुपद से बोले "मैं इस समय पांचाल देश का राजा हूं और तुम साधारण कैदी हो। किन्तु दक्षिण पांचाल का राज्य मैं करूंगा और उत्तर का हिस्सा तुम्हे दिये देता हूं क्योंकि राजा की मैत्री राजा के साथ हो सकती है"।

हिन्दुस्तान के ऐसे २ बीर शिरोमणि महाभारत के घोर युद्ध में कट मरे साथ ही यहां की बीरता युद्धोत्साह बुद्धि विद्या सब जाती रही और देश के अत्यन्त बुरे दिन आये। महाभारत के युद्ध के उपरान्त बौद्ध धर्म हिन्दुस्तान का प्रधान धर्म हो गया इसी बुद्ध धर्म में चन्द्रगुप्त अशोक कनिष्क आदि बड़े २ प्रतापी राजा हुये जिन के समय में यूनान देश के बीर नरेश सेलूकस आदि अपनी कन्या यहां के राजाओं को दे उन्हे प्रसन्न करते रहे। समस्त प्रजा युद्ध विद्या में उस समय प्रवीण थी किन्तु शंकर स्वामी ने बुद्ध धर्म को यहां से उच्छिन्न कर फिर से वैदिक धर्म स्थापित किया और चार वर्ण की प्रथा चलाई। पर इस पुनः संस्थापित प्रथा में चार वर्ण के लोग अपना ही अपना काम करने लगे सर्व साधारण से युद्धोत्साह और शस्त्र प्रयोग की निपुणता दूर हो केवल क्षत्रियों ही में रह गई। शरीरी तरीरी भूल लोगों में सुकुमारता आने लगी चारो ओर धर्म ही धर्म की पुकार होने लगी और धर्म के सम्बन्ध में अन्धेर खाता मच गया। पढ़ना लिखना केवल ब्राह्मण में बच रहा क्षत्रिय और बैश्य विद्या पढ़ना छोड़ अपना निज का काम जैसा क्षत्रिय केवल लड़ना भिड़ना और बैश्य केवल वनिज मात्र में लगे। विद्या न पढ़ने से क्षत्रियों में लड़ना ही भिड़ना मात्र बच रहा चुस्ती चालाकी सहिष्णुता गाम्भीर्य श्रम इत्यादि बुद्धि के व्यवसाय सब जाते रहे। क्षत्रिय मद्यप कामी और भोग लिप्सू हो गये पृथ्वी

राज सरीखे राजाओं का रनवास रानियों से भर गया Polygomy बहु विवाह की प्रथा तो पहिले ही से यहां विद्यमान रही भोग लिप्सू कामी क्षत्रिय राजाओं की बन पड़ी एक २ राजाओं के सौ २ तक रानियां होने लगीं। किसी बुराई का ज़रा सा अंकुर भी कौम के कमज़ोर हो जाने पर उसे और भी नीचे गिरा देने को काफी होता है। इस सब का परिणाम यही हुआ कि होशयारी और कूट तथा दगाबाज़ी से लड़ने वाले मुसल्मानों के सन्मुख हिन्दू बीरों के पांव उखड़ गये युद्ध में पृथ्वी राज के मरते ही भारत गुलामी की जंज़ीर में जकड़ दिया गया। क्योंकि ब्राह्मण तो उस समय घंटा नाद ही करते रहे; शान्ति प्रिय बैश्य व्यापार में लगे रहे; शूद्रों की कोई गिनती ही न थी। क्षत्रिय पराजित हो गये तो कौन विजयी मुसल्मान का सामना करता॥

अब इस समय हिन्दुस्तान सच्ची इज्ज़त तभी पा सकता है जब जातीय कालेज और स्कूलों के साथ युद्ध शिक्षा Military Education भी बालकों को दिया जाय। राज कुमार गण योरप और जापान में भेजे जांय और अपनी सेना की अफ़सरी के लिये युद्ध विद्या उन्हे सिखाई जांय। सच्चा गौरव बिना इसके प्राप्त होना असंभव है। मुल्की जोश में केवल मुह से बड़बड़ाने से काम नहीं हो सकता जब तक वास्तविक शस्त्र बल हमारे में नहीं आवेगा। पर यह तो तब होता जब हमारे राजा लोग रेज़ीडेटों के चंगुल से छुटकारा पाते और शासकों की पालिसी को समझने में प्रवीण होते। हमारे गोरे कर्मचारी इन राजाओं को ऐसे ढंग से रक्खे हैं कि वे ज़रा भी उभड़कर स्वच्छन्द नहीं हो सक्के वरन कश्मीर नरेश सदृश खुशामद में लगे हैं। तब हमारे उभड़ने की कौन आशा बच रही॥

बेणी प्रसाद शुक्ल

प्रजा में शान्ति ।

अर्थ शास्त्र Political Economy के जानने वालों को मालूम है कि इस विज्ञान का Ideal उद्देश्य यह है कि कंगाली संसार से उठा दी जाय। ऐसा ही Politic राजनीति का भी लक्ष्य यही है कि उन सिद्धान्तों की खोज की जाय जिस से प्रजा में शान्ति बनी रहे और संसार के मनुष्य मात्र राज काज सम्बन्धी हैसीयत में बराबर हो जांय। हर एक व्यक्ति व जाति को ऊपर उठने को मौका दिया जाय जिस से बलवा या हलचल कभी न हो। नीतिज्ञ और देश भक्तों का तो काम ही यह है कि प्रजा और सरकार में शान्ति रखने का उपाय निकालें और सरकार के कामों की समालोचना कर गवर्नमेंट और प्रजा में झगड़ा पैदा होने से रोकें। जब सरकार की तरह २ की काररवाइयों को ध्यान से देखा जाता है तो मालूम होता है कि उन सब काररवाइयों का यही मतलब है कि प्रजा में सदा शान्ति बनी रहे क्योंकि प्रजा में अशान्ति का परिणाम द्रोह या बलवा है जिस से राजा और प्रजा या दोनों को कुछ न कुछ नुकसान पहुंचता है। अब यह भी देखा जाता है कि चाहो राजा राज्य Monarchy हो चाहो प्रजा प्रभुत्व Republic हो चाहो सनदी राज्य Constitutional Government हो अशान्ति की संभावना रहती ही है और प्रत्येक प्रकार के शासन में अशान्ति के रोकने के भिन्न २ उपाय भी किये जाते हैं। तो अब सवाल यह पैदा होता है कि इतनी काररवाई और विशाल बुद्धि नीतिज्ञों के बुद्धि कौशल पर भी अशान्ति होने का क्या कारण है? क्या शान्ति हो जाने से (Politic) राजनीति का यावत् कर्तव्य समाप्त हो जाता है? क्या जिस राज्य में प्रजा के बीच शान्ति रहे तो मान लिया जाय कि वह राज्य अच्छा है?

इसका उत्तर प्रत्येक संप्रदाय के राज्य की काररवाइयों की छान

बीन करने से मिल सकता है। इन सब प्रकार के राज्यों का Ideal उद्देश्य शान्ति रक्षा होने पर उनको सफलता कैसे होती है इसका जानना ज़रूरी है किन्तु इसके पहले शान्ति शब्द का ठीक उद्देश्य Ideal भी हम को होना चाहिये ॥

राज नैतिक विषयों में शान्ति से तात्पर्य प्रजा का राजा पर बिश्वास स्थापित करना है। बिश्वास में एक आकर्षण शक्ति होती है इसी आकर्षण शक्ति को राज भक्ति Loyalty कहते हैं। जैसा कि बहुत से वैज्ञानिकों का मत है कि भूडोल तभी होता है जब पृथ्वी की आकर्षण शक्ति में कुछ अन्तर पड़ जाता है वैसे ही Politic में भी जब बिश्वास हट जाता है तब हलचल या बलवा होता है। इन हलचलों से चाहो राजा या प्रजा या दोनो को हानि हो किन्तु उनका होना ऐसे मौके पर स्वाभाविक है और उनके होने से फिर राजा और प्रजा में शान्ति और बिश्वास हो जाता है। सुतराम् जब किसी देश में आशान्ति हो तो यह न समझ लेना चाहिये कि कोई बुराई की बात है बरन यह राजा और प्रजा दोनो के लिये भलाई की कोशिश हो रही है। अब इस बात की जांच होना चाहिये कि बिश्वास कैसे हट जाता है। क्या संसार में कोई ऐसी भी शासन प्रणाली है जिस में सदा शान्ति रहने की गेरंटी हो? हमारी राय में तो कोई राज्य चाहो जिस शासन प्रणाली का हो सदा शान्ति की गेरंटी कोई नहीं कर सकता। इस में दोष किसी तरह की शासन प्रणाली का नहीं है दोष उसे ठीक तौर पर काम में न लानेवालों का है। यह कोई बात नहीं कि प्रजा प्रभुत्व Republic Government सब से अच्छा है अगर प्रजा प्रभुत्व अच्छा होता तो इङ्गलैण्ड के इतिहास में क्रामवेल का चलाया नियम आज वहां क्यों न स्थापित रहा। Monarchy राजा राज्य जरमनी में अच्छा है पर उसी के बगल में रूस के ज़ार अन्याई समझे जाते हैं और कहा जाता है कि प्रजा प्रभुत्व होने ही से वहां की अशान्ति दूर होगी। जरमन का राजा अपने ऊपर रक्खा हुआ शासन के भार का पूरा

अंजाम देकर प्रजा को दिखा रहा है कि वह उन्हीं की भलाई के लिये मौजूद है। इसी से जरमनवाले उस पर विश्वास करते हैं। जरमन गवर्नमेंट प्रजा के तिजारती धार्मिक तथा प्रजा के और २ उपकारी कामों में सदा शरीक रहती है यही कारण है कि वहां की प्रजा में राज भक्ति और देश भक्ति दो जुदी २ बातें नहीं है। हिन्दुस्तान में देश भक्ति और राज भक्ति दोनो में इस समय बड़ा अन्तर है जो राज भक्त है वह देश भक्त नहीं जो देश भक्त है वह राज भक्ति से कोसों दूर हटा है। ऐसे मौके पर प्रजा में राज भक्ति कायम रखने को तलवार काम में लाई जाती है किन्तु तलवार से भी झूठी शान्ति तभी तक रहेगी जब तक विश्वास बिल्कुल नहीं मिट जाता। जब विश्वास पूर्ण रूप से हटा तो तलवार भी काम नहीं देती। क्योंकि प्रजा को दृढ़ निश्चय हो जाता है कि राजा हमारे भले के लिये नहीं है। ऐसे मौके पर तलवार ही तलवार से शन्ति रखने वाले को शान्त कर देती है॥

प्रजा राज्य या प्रजा प्रभुत्व के भले होने का कारण यह है कि वहां शान्ति अशान्ति दोनो का बोझ प्रजा के सिर मिढ़ा जाता है और कौमीयत का जोश लोगों के नस २ में व्याप्त रहता है। प्रजा मात्र अपनी पोलिटिकल हैसीयत में एक सी रहती हैं। ऐसी दशा में अशान्ति तभी होती है जब कोई विशेष व्यक्ति उन पर अपना रोब जमाया चाहते हैं॥

जहां सनदी Constitutional नियम पर राज्य किया जाता है वहां कानून का ज़ोर शान्ति रखने का दावा बांधता है। पर कानून प्रजा में थोड़े से लोग जानते हैं जब तक लोगों को उन पर विश्वास रहता है कि वे अपने कानूनदानी से हमारा भला करेंगे तो शान्ति रहती है नहीं तो ऐसे २ खुदगर्ज़ प्रजा प्रतिनिधि निकाल दिये जाते हैं। अमरिका में स्वच्छन्द होने के पहले सनदी राज्य प्रणाली थी किन्तु जब इङ्गलैण्ड की खुदगर्ज़ी ने अमरिका वालों पर प्रजा विरोधी कानून बनाये तो अशान्ति फैली और अन्त में इसका परिणाम यह हुआ कि

अमरिका के यूनइटेड स्टेट वाले स्वच्छन्द हो गये और प्रजा को लाभदायक शान्ति स्थापित हुई ॥

अब यह बात मालूम हुई कि प्रजा में सच्ची शान्ति स्थापित करने के दोही उपाय हैं या तो प्रजा को उसकी भलाई का पूर्ण बिश्वास दिया जाय नहीं तो Revolution हलचल सच्ची शान्ति लाता है। अब हिन्दुस्तान की Politic राजनीति में इन उसूलों को घटा कर देखना चाहिये। हिन्दुस्तान में सनदी राज्य है यह राज्य उस प्रकार का है कि अगर इसकी काररवाई की ओर ध्यान दिया जाय तो तीन उपाय से शान्ति रखना राज्य के मुखिया लोगों ने मान रक्खा है। पहिली पालिसी दूसरा कानून तीसरी तलवार। इन तीनों के होने पर भी आज यहां शान्ति नहीं है इसका क्या कारण है। पहले जब श्वेताङ्ग यहां पधारे तो यहां घोर अशान्ति थी आपस में बिश्वास न था तब श्वेताङ्गों ने पहला उपाय पालिसी को काम में लाना आरंभ किया जिससे अशान्ति कुछ २ मिटने लगी और अङ्गरेज़ी राज्य स्थापित होने लगा। हिन्दुस्तानियों में बिश्वास तो बहुत सस्ता हई है तनिक देर न लगी सब लोगों ने इन श्वेताङ्गों पर बिश्वास जमा लिया परन्तु दृढ़ बिश्वास न जमा था कि कानून और बिलाइती इनसाफ की आकाशबाणी हुई कि हम पर बिश्वास करो तो मुक्ति पाओगे। उसी समय १८३३ और ५८ की तावीज़ हम लोगों की रक्षा के लिये दी गई बाद तलवार भी जल्द हाज़िर की गई और बिश्वास दिलाया गया कि गवर्नमेंट हिन्द के भले के लिये है। लोग कानून की काट छाट और बारीकियों को जानते ही न थे दूसरे बिश्वास करने में सब से अधिक धोकड़ थे। प्रजा में कुछ दिन तक शान्ति रही और बहाने २ भांत २ के बिलाइती पंपों के द्वारा इनके शरीर का रस खीचा जाने लगा। उन पंपों के प्रताप से जब सब रस खिच गया दिन पर दिन लोग कंगाल होने लगे; इनका बनिज ब्यौपार भी मिटने लगा; सन ५८ की दी हुई

तावीज़ भी इनकी Politic राज नैतिक हैसीयत दुरुस्त न कर सकी बल्कि मालूम हुआ कि वह सब केवल फुसलाने के लिये दिखाने वाले हाथी के दांत रहे खाने के नहीं; बरन रोज़ २ गुलामी की जंज़ीर में अधिक२ जकड़े जाने लगे तब इनका बिश्वास डिगा। कानग्रेस शुरू हुई जो इसकी जांच करने लगी कि हम लोग बिश्वास किये रहैं या अपने बिश्वास को ढीला कर दें। २२ बर्ष की लिखा पढ़ी के उपरान्त बिश्वास तो पहिले ही से डिगमगा चला था अब और गायब हो गया। उपरान्त करजन ने तो अपने कामो से उस बिश्वास की जड़ ही उखाड़ के फेंक दिया। नतीजा यह हुआ कि सब लोग अबिश्वासी कट्टर नास्तिक बन बैठे। जिन से गवर्नमेंट का कुछ सम्बन्ध है वे चोरी से छिपा कर नास्तिक अबिश्वासी बना चाहते हैं। पर मन के भीतर जो बात रहती है उसे कितना ही छिपाओ अन्त को उघर उठती है। जिसका परिणाम यह हुआ कि आज देश भर में अशान्ति फैली हुई है। सर्कार शांति लाने को वेही ३ उपायों को फिर काम में ला रही है। भीतर २ ऐसी पालिसी काम में लाई जाती है कि हिन्दू मुसल्मान दोनो आपस में लड़ झगड़ कमज़ोर हो जांय; फिर भी कुछ तेज़ी रही तो कानून तुम्हारा मुह और लेखनी बन्द करेगा; और तब भी बरोओ गे तो पायोनियर इङ्गलिशमैन टाइम्स आदि गवर्नमेंट के हिमायती साफ कहैं गे तलवार ने हम पर तुम्हारा बिश्वासस्थापित किया है और अब फिर उसी को काम में लाना पड़ेगा। इसलिये कि पुराना सिद्धान्त है Might is right अस्तु इतने पर भी जो तुम्हें बिश्वास न आया तो अशांति तो शांति को लाती ही है नीतिज्ञों का यह सिद्धांत पुकार २ कह रहा है। शांति दो ही बात से होती है सच्चा बिश्वास या अशान्ति। विद्वान की इस कारिका को कोई झूठा नहीं कर सकता॥

मदन मोहन शुक्ल

कौंसिल की मेम्बरी।

२८ मई को यहां के मेओहाल में छोटे लाट की कौंसिल में एक मेम्बर भेजने के लिये डिसट्रिक्ट बोर्डस के प्रतिनिधियों की एक मीटिङ्ग हुई। मुन्शी माधो लाल, राजा प्रताप बहादुर सिंह, राजा नौशाद अली के नामों का प्रस्ताव किया गया। प्रतिनिधियों की पहलेवार संमति लेने पर १० वोट राजा प्रताप बहादुर सिंह की ६ मुन्शी माधो लाल की और ३ नौशाद अली की आईं। इसलिये कि बिना ११ वोट आये कोई मेम्बर नहीं चुना जा सकता फिर से सम्मति ली गई तो इस बार राजा प्रताप बहादुर सिंह की ११ मु० माधो लाल की ६ और राजा नौशाद अली की १ वोट आईं: राजा प्रताप बहादुर सिंह कौंसिल में जाने के लिये डिसट्रिक्ट बोर्डस से चुने गये। यहां पर हम इन तीनों मनुष्यों की भिन्न २ योग्यता पर कुछ अधिक नहीं कहा चाहते परंतु इतना अवश्य कहेंगे कि यह बात बिल्कुल हमारी समझ में नहीं आती कि राजा प्रताप बहादुर किन गुणों से चुने गये। आज तक राजा साहब का नाम देश सेवा के सम्बन्ध में कभी एक बार भी नहीं सुना गया। एक बार पहले भी राजा प्रताप बहादुर ने Honerable बनने का यत्न किया था परन्तु उनके किसी प्रकार के यत्न उठा न रखने पर भी प्रतिनिधियों ने उनको न चुन मु० माधो लाल को चुना। हम नहीं समझते अब के बार प्रतिनिधियों ने किन प्रभावों के बश हो उनको लेजिसलेटिव कौंसिल के मेम्बर होने के योग्य समझा है। जहां तक हमें मालूम है उक्त राजा साहब अंगरेज़ी भाषा से सर्वथा अपरिचित हैं और न देश सेवा के सम्बन्ध में आज तक कभी उनका नाम सुना गया है तब हम क्या आशा करैं कि वे कौंसिल की बहसों को समझ सकैंगे और अपना ऐसा स्वतंत्र बिचार प्रगट करैंगे जिस से देश का कल्याण हो। परंतु इन बातों पर अधिक झीखना केवल अपने

चित्त को दुखाना है। सच तो यह है कि थोड़े से अंगरेज़ी तालीम याफ़्ता चाहो जितना ज़बानी जमा खर्च करें हमारे देश के अधिकांश अभी यह भी नहीं समझते कि स्वराज्य के प्राथमिक सिद्धान्त क्या हैं और देश की दशा का उनमें इतना भी विचार नहीं है कि अपने थोड़े से धन और मान तथा प्रतिष्ठा के स्वार्थ को देश भाइयों के कल्याण के लिये छोड़ सकैं। म्युनिसिपलिटी की मेम्बरी को तो हम झीखते ही थे अब कौंसिल की मेम्बरी भी उसी ढंग की हो गई। अस्तु लाट साहब के साथ कुरसी पर बैठ इन्द्र के छोटे भाई तो बन जांयगे जिस के मुकाबिले देश का कल्याण किस गिनती में है॥

मुक्ति और भक्ति।

मुक्ति तब भक्ति यह उलटी बात कैसी? भावुक पहले अपने आराध्य इष्ट देव की भक्ति करता है तब क्रम २ उसका अन्तःकरण शुद्ध होने पर ज्ञान का अधिकारी हो मोक्ष पद पाता है। पर यहां यह बिल्कुल उलटा क्रम कैसा? मुक्ति जो अन्त की सीढ़ी है उस पर पहले ही उछल कर चढ़ गया पीछे नीचे उतर भक्ति की भावना में रेंगता हुआ यह जीव अब कब मुक्ति का अधिकारी हो आवागमन के बन्धन से छुटकारा पावेगा। प्यारे नहीं २ ऐसा नहीं टुक चित्त को एकाग्र कर सोचो तो बिना मुक्ति के सच्ची भक्ति कभी हो ही गी नहीं सच्ची भक्ति से हमारा मतलब निष्काम भक्ति से है। जब तक अपना स्वार्थ किसी कामना के रूप में लगा है तब तक वह भक्ति न कहलावेगी वह तो अपने मतलब की खुशामद है भक्ति कहां ठहरी। जो सच्चे भक्त जन हैं वे मुक्ति को लात मारते हैं। भक्त का मुक्त से बहुत बड़ा दरजा है। भक्त ने तो पहले ही अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया अब बच क्या रहा जिस की चिन्ता में व्यग्र रह चिन्ता और फिकिर से वह अपने को मुक्त

पावे। सर्वथा निस्पृह सुख दुःख में एक सा न सुख में सुखी न दुःख में दुखी जैसा गीता में भगवान् कृष्णचन्द्र ने कहा भी है॥

दुःखेष्वनुद्विग्नमना सुखेषु विगतस्पृहः।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते॥

दुःखों में जिसका मन व्याकुल नहीं होता सुख के लिये जो आशा बद्ध नहीं है; जिसको धन पुत्र आदि से स्नेह; भय, क्रोध इत्यादि इन्द्रियों के विकार नहीं चलायमान् कर सकते वह मुनि और स्थिर बुद्धि है॥

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निस्पृहः।
निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति॥

जो पुरुष सब कामनाओं को छोड़ इच्छा रहित हो विचरता है। ममता अर्थात् यह हमारा है इस अहंकार से रहित है वह शान्ति पाता है। शान्ति भक्ति का पहला अंग है जिस में शान्ति न हो वह बनावटी भक्ति मुक्ति की पहली सीढ़ी क्योंकर हे। जिसको प्रभु में ऐसी भक्ति है उसके जीवन्मुक्त होने में फिर क्या कसर रही पर यह भाव उसी को होता है जिसको उस परम पुरुष ने अपनालिया है। जो ऐसे दृढ़ हैं उन्हें नित्य की प्राण यात्रा और भोजनाच्छादन की भी कोई चिन्ता नहीं रहती॥

यो सौ विश्वंभरो देवो स भक्तान् किमुपेक्षते।

"जो तुम्हारे में राई भर भी विश्वास हो तो इस पर्वत को कहो हट जाय तो हट जा सकता है" इस वाक्य की सचावट के उदाहरण ऐसे ही लोग हैं। ऐसे मनुष्य नर तन में साक्षात् देव रूप हैं। ऐसों के दर्शन में पुण्य है॥

गुरुकुल ।

यह गुरुकुल हरिद्वार से ४ मील कांगड़ी ग्राम के समीप पतित पावनी श्री गंगा जी के तट पर पूर्वज ऋषियों के शान्त आश्रम का अनुकरण कर रहा है । यह भारत के भावी सुसन्तानों की Nursery प्रादुर्भावभूमि अथवा उत्पत्तिस्थान है और ६००० बीघा ज़मीन के रक़बा में बना हुआ है । शान्त और पावन इस आश्रम में पहुंचते ही मार्ग में चलने का जो कुछ श्रम सब दूर हो जाता है । १८० ब्रह्मचारियों की शान्त और तेजस्वी मूर्ति का अवलोकन कर वैदिक आर्य ऋषियों का चित्र चित्त में चित्रित हो जाता है । लाला मुन्शी राम सरीखे कई एक भारत हितैषी इस गुरुकुल का उत्तमोत्तम प्रवन्ध रखने के लिये अपना जीवन समर्पण कर चुके हैं । पाठक यह जीवन समर्पण उस तरह का न समझ बैठना जैसा बहुधा इस समय सभ्य समाज में जीवन समर्पण की भी एक प्रथा चल पड़ी है। एक आदमी तीन २ काम में अलग २ तीन बार जीवन अर्पण कर चुके हैं और समग्र जीवन भर में कभी एक पल के लिये भी उन्हे किसी प्रतिज्ञा किये हुये काम में लगे न देखा वरन गुरुकुल के महोदय गण वास्तव में इसकी उन्नति में कटि बद्ध हैं। ७ बर्ष से १० वर्ष तक के बालक इसमें लिये जाते हैं और २५ बर्ष तक उनको अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन करना पड़ता है । इस बीच उस बालक को अपने घर से कोई सरोकार नहीं रहता । साल में एक बार वार्षिकोत्सव के समय बालक अपने घर वालों से भिक्षा लेने वहीं पर जाने पाता है । गुरुकुल की सीमा के भीतर स्त्रियों के जाने की कतई मुमानियत है । अब तक इसमें १० क्लास खुले हैं । हम ने प्रत्येक वर्ग में लड़कों से दो एक प्रश्न प्रत्येक विषय के पूछा और उनके उचित उत्तर से अत्यन्त सन्तुष्ट रहे । दसवें दरजे के लड़के अच्छी तरह शुद्ध संस्कृत और अंगरेज़ी बोल सक्ते हैं । अंगरेज़ी में उन्हे इनटेन्स तक की

योग्यता है और संस्कृत में तो भाष्य आदि सभी आर्ष ग्रंथ के पाठ में प्रवीण पाये गये। भगवान् उत्तरोत्तर इसकी उन्नति करता रहे ॥

पंचो की सोहबत।

अहाहाहा क्या गुल खिले हुये हैं ज़रा पञ्चों की भी कैफीयत देखने लायक है। अबे तुझे कुछ होश है आज सोहबत का मेला है देखता नहीं चौथ के चन्द समान प्रकाशमान ये कौन चले आते हैं। इनका इसिम शरीफ है पुंश्चली बल्लभ गणिका दास। आंख के अन्धे नाम नैनसुख। एतने दिनों से हम इन पर हाथ मल मल रहते थे आज ऐसे गाढ़े लगने लगे कि सिमटी देखलाते चले ही जाते हैं गोया कि मुरौवत की कहीं छींट भी नहीं पड़ी। मियां तुम ऐसे गुलबदन के तन को ज़ेब यह नहीं देता कि बरसों का सुलाहिज़ा गजी सा चीर फाड़ अलग कर डालो। क्या बाल आल पाके से कोई बूढ़ा हो जाता है दिल का शौक तो वैसा ही चीकन बना है तब तो मेला देखने आये हैं। हुश अबे ओ पाइजामे चारजामे की भी तुझे कुछ सुध बुध है। बड़ा मुंहज़ोर हुआ है तेरे मुह में लगाम नही है। अगाड़ी पिछाड़ी की कुछ खबर रखता है हम भी कुछ कहेंगे तो तोबड़ा सा मुह लटका तङ्ग हो घर की ओर सरपट भागेगा। देखता नहीं शहर के बड़े २ रईस महाजन और धनवानों की मण्डली यहां एकट्ठी है। लाला शतरञ्जदास वा बाबू फीलदास राय शुतरबख़्श लाला घोड़मुहे राय अपने २ पार्षद वर्गों को साथ लिये उत्पात केतु ग्रह के समान आसमान में अपनी २ पतङ्ग बढ़ाये उड़ा रहे हैं। उमदा २ लटाइयां अपने मालिक की ख़ूबसूरती का अभिमान ज़ाहिर कर रही हैं। हर एक लटाइयों में डोर क्या चढ़ी है मानो उन लम्पटों को नर्क में खीचने की रस्सी है। देखो यह लोगों के मज़ेदार डेरे खड़े हैं, कनात लगी है, सुथरा फर्श बिछा हुआ है, तुक्कल और डोर के

पिछड़ों से पूर्ण यह संदूक मानो कह रही है कि इन कूढ़ बुद्धियों के दुर्व्यसन और दुष्कर्म के ख़ज़ाने इसमें भरे हुये हैं। जो जल्दी छिन्न भिन्न नहीं होंगे। ठौर २ घड़ों में जल भरे हुये ऐसे मालूम होते हैं मानो बिपत्ति राजधानी में इन को राज गद्दी का अभिषेक करने के लिये बैतरणी और कर्मनाशा आदि नदियों से जल मंगाया गया है। तीन मन की तोंद लिये यह लट्टूदार पगड़ी कौन हैं। मतिमन्द लाला तिलोकचन्द। ओ लाला ज़रा सम्हल कर आसमान ताकना कहीं लट्टूदार फिसल न पड़े। पतङ्ग उड़ाते २ पसीने में लोथ पोथ डाढ़ी फड़काये यह छज्जू भाई कौन चले आते हैं। मियां मीरू। मियां खुदा के वास्ते ज़रा होश में आओ हमें खौफ लगता है कि पसीनों में पिघल पानी ही पानी कहीं न हो जाओ। डेढ़ दमड़ी की पतङ्ग लिये यह कौन आये। लाला झुकाऊ लाल वह काटे बस फिस्स तिलिलि। भाई वाह सत्यानासी दास का एक्का तो खूब भर्राटे का है। सेठ बुड़न्त साह की पालकी भी खूब सजी है और यह मूर्खताभक्त बाबू कूढ़चन्द्र का टमटम तो रावण के रथ से भी अधिक ऊंचा है। अहा यह घिस्सी मल के कनकौये धर्म कर्म और विद्या गुण का कान काटे कैसे उड़े जाते हैं। ओ मियां खन्नू खबरदार रहना पेच पड़ी है देखना कोई तोड़ न ले। चलो २ अभी बहुत देखना है। ये कौन हैं धनिकों का धन चूसने वाली जोंक। आहा धन्य हैं ये कलि कल्पष सिद्ध पीठ की योगिनी। यह इन्ही की कामदार जूतियों की नोक में इतना असर है जिसकी ठोंकर रसिकों के जी पर भरपूर लगती है। इनके चारो ओर कक्कहे उड़ाते ये महादेव के गण कौन खड़े हैं। ओ बीबी ज़रा एक नज़र यारों की तरफ भी। अबे तू किस गुन का है। जान साहब ऐसा मत कहो हम तुम पर धारीधार बहे जाते हैं। तुम हम से किनारा कश हो तो लाचारी। तुम तो एक ही खेवे में सैकड़ों को पार कर देती हो। तुम्हारी मुहब्बत तो घनघोर घटा सी सदा उमड़ी रहती थी अब क्या हो गया जो हम पर ज़रा

भी तवज्जो नही । तो अब हम भाले भर भर मर जांयगे । बस बस चलो यहां से इनकी नज़र एक बार बिजली सी इस ओर भी चमक अब बदली सो बदली। अहा यह क्या तिलिस्मात है। अबे यह भी नहीं जानता इसी की बदौलत तो यह सोहबत का मेला है । देख यह जगह जगह गाज़ी मियां के झंडे खड़े हैं और रौज़े पर बड़े ज़ोर शोर की भीड़ हो रही है हर एक झण्डे के पास डफाली लोग रबाना बजाते और गाते हैं (पञ्च महाराज खड़े हो सब चरित्र देखने लगे) नीचजाति की स्त्रियां सिर हिला हिला नाचती कूदती उछलती चली आती हैं डफाली लोग उन से पूछते हैं। हज़रत आप कौन हैं ? अरे तू हमे नहीं जानता हम गाज़ी मियां हैं हम फातिमा बीबी हैं । इसने हमारे नाम की रोट नहीं चढ़ाई इसे मार डालूंगा छोड़ूंगा नहीं। उन स्त्रियों के घरवाले पांव पर गिर नाक रगड़ माफ । करो हम अंधे आदमी कच्चा पिएं हम तुम्हारा भेद का जानी तोबा सौ बार तोबा । चिराग़ जलता है कितने भले मानुष रेवड़ी मलीदा और शरबत चढ़ाय २ दण्डवत कर चले जाते हैं । डफाली रबना बजाय २ जो गीतैं गाते थे उनका स्वर और तान एक निराले ही ढङ्ग का था पंच महाराज ने बड़ी सावधानी से कान लगा कर जो सुना उसे नीचे लिखते हैं ॥

॥ डफालिक गीते रबाना ताले । रबाना बजता है ॥

झझनी क झझझझ झझनी क झझझझ ।
अरे मोर कुदक्कड़ी घोड़ी पर चढ़ि आवहु देवतः ॥
लम्बी लट छिटकाय खूब कुदरावहु देवतः ।
सुहबत मेलवा मंझार सुरंग बरसावहु देवतः ॥
सब दिन लाज शरम की कसक मिटवाहु देवतः ।
रसियन छैल चिकनियन मन ललचावहु देवतः ॥
प्रेम की डोर बढ़ाय खूब तरसावहु देवतः ।

अंचरा खुलि २ जांय पेट चमकावहु देवतः ॥
सब को अन्ध बनाय खूब पुजवावहु देवतः ।
सीधा रतन पदारथ की झरि लावहु देवतः ॥
गंठपूरे अंख अन्धे हिन्दुअन धरि लावहु देवतः ।
मुसल्मान हुशियार दूर टरकावहु देवतः ॥
बकरी मुर्ग गले पर छुरिआ फेरावहु देवतः ।
बनिया भूंज कलार सबै पचपिरियन देवतः ॥
जो फुसलाय फसावें बड़ लोगवन देवतः ।
इलिम हुनर की बात जल्द छोड़वावहु देवतः ॥
धरम करम की लीक सबै मिटवावहु देवतः ।
सब ह्वै जांय गवांर हमैं पुजवावहु देवतः ॥
पोथिया पुरान छिपाय हमै मनवावहु देवतः ।
रूपा जीधा सबै आय तुम्हें पूजैं देवतः ॥
सुहबत मेलवा बढ़ाय पतंग उड़वावहु देवतः ।
बड़ अदमी कोठीवालन मुढ्ढ बनवावहु देवतः ।
हम सब करैं कलोल सोई ढङ्ग लावहु देवतः ॥ इत्यादि ॥

सामयिक हलचल में किसका दोष है ।

हिन्दुस्तान के एक छोर से दूसरे छोर तक देश में स्वदेशी इत्यादि अनेक बहानों से भयंकर हलचल मच रहा है इसमें किसका दोष है ? कर्मचारी गण तथा ऐंग्लो इण्डियन्स के Organs अपनी बातों की हिमायत करने वाले औज़ार पायोनियर, इङ्गलिशमैन, सिविल मिलिटरी गज़ट टाइम्स सरीखे पत्र धृष्टता के साथ यही कह रहे हैं कि इसके कुसूरवार केवल हिन्दुस्तानी हैं गवर्नमेंट तथा गवर्नमेंट के गौरांग कर्मचारियों का इसमें कोई दोष नहीं है । यह उनका कथन हम लोगों को मानो

घाव पर नोन छिड़कने की तरह होता है। हम को हर तरह हीन दीन कर रहे हो सब भांत दबाते ही जाते हो तब हम कहां तक दबते जांय जिस ओर हम ज़रा भी उभड़ने की कोशिश करते हैं उसी ओर बड़ा भारी रोक खड़ा कर दिया जाता है हमारा सन्तोष तथा हमारी भलाई की कोई सच्ची आशा हमें नहीं दिखाई जाती। हमें निर्जीव और गुलाम बनाये रखने की चाल अलबत्ता प्रधान कर्मचारी चलते हैं। कैसे हो सकता है कि वह जाति Nation जो दिमागी कूवत में कभी हेठी नहीं रही इतना प्रबल अत्याचार सह ले जैसा गौरांग कर्मचारी इन दिनों अपने कामों से प्रगट कर रहे हैं। हम अपने देश की भलाई और अपने को गुलामी से छुटकारा पाने के लिये जो कोशिशें कर रहे हैं वह स्वाभाविक और प्राकृतिक है। दूसरे हम तो वैसे हैं भी नहीं कि जैसा आयरलैण्ड और Canada केनाडा तथा Colony उपनिवेशों के रहने वाले हैं। जो सर्वथा वृटिश गवर्नमेंट से स्वच्छन्द हो केवल नाम मात्र को वृटिश गवर्नमेंट का अधिकार अथवा Supremacy श्रेष्ठता स्वीकार कर रहे हैं। हमें तो रुपये में चार आना भी ये आज़ादगी का हक़ दे देते तो हम निहाल हो फूले न समाते और इनके शासन को स्वर्गीय शासन मानते। पर ये तो सर्वग्रास के यत्न से नहीं चूकते मसल है "ज्यों २ भीजै कामरी त्यों २ भारी होय" ज्यों २ हम दबते गये, इनका प्रभुत्व स्वीकार करते गये, गौ के माफिक तिनका मुह में दबाये गिड़गिड़ाते गये; त्यों २ ये हमें अधिक २ तुच्छ और नाचीज़ समझते गये तो अब यही सोचा गया कि "न शयानः पतत्यधः" गिरा हुआ क्या गिरेगा। मुरदे के ऊपर जो कबर में सोया है सौ मन खाक लाद दी तो उसे क्या। देश के पढ़े लिखे शिक्षितों के मन में ऐसे २ ख्यालात उपज खड़े हुये कि अब कहां तक सहैं जीवन तक को न्योछावर करते अब यही ताक लगाये हुये हैं कि जैसे हो तैसे हम अपना उद्धार करैं "देहम्पातये कार्यं वा साधये"॥

स्वदेशी आन्दोलन उसी नैराश्य का परिणाम है हमे ऐसा मालूम होता है अब यह आन्दोलन घटने वाला नहीं है। उसी के दबाने को ये सब भांत २ के प्रबन्ध गवर्नमेंट की ओर से हो रहे हैं। यह आन्दोलन एक दिन अवश्यही उभड़ता। अब तक जो लोगों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया यह हिन्दुस्तानियों की शान्तिप्रिय जाति होने का कारण है। हम अब भी अपनी शान्ति में बाधा नहीं छोड़ा चाहते यदि सरकार हमे अपने ढंग पर चले जाने दे। इस हलचल और बढ़ते हुये जोश की उफान पर पानी छोड़ने की भांत उस जोश को अपनी सर्वतोमुखी प्रभुता की पूरी ताकत के द्वारा दबाना उचित नहीं है बरन उनको आश्वासन देना और उन्हे किस बात की शिकायत है इस पर कान देना है। हमे पछतावा है कि समस्त वृटिश जाति की जाति क्यों इतना स्वार्थान्धहो रही है। इनकी श्री वृद्धि की इस समय पराकाष्टा है। जिन्हो ने यही ते कर छोड़ा है कि हमारे दिन सदा ऐसे ही चले जांयगे न्याय अन्याय तथा मनुष्य को मनुष्य मात्र के साथ प्रकृति के नियमानुसार कैसी सहानुभूति होना चाहिये इसका कुछ खयाल उन्हें नहीं है। अफसोस बड़े२ राजनीति कुशल लोग बिलाइत में पड़े हैं क्यों उन्हें इस पर ध्यान नहीं होता। स्वार्थ और लोभ का महा सागर जो सब ओर से उमड़ता चला आ रहा है उसे तो दबाया नहीं चाहते हमें अलबत्ता सब तरह पर दबाने के यत्न से नहीं चूकते जो सर्वथा प्राकृति के नियम के विरुद्ध है। विदेशी लोग हमे आगे बढ़ते देख चाहो जितनी कठिनाई हमारे आगे ला रक्खें अब तो यहां से स्वदेशी का प्रवाह नहीं रुकने वाला है। हमाड़े में स्वदेशी भाव पुष्ट पड़ जाय और हम अपने पाओं खड़ा होना सीख जांय तो हमे स्वराज की भी कुछ परवाह नहीं है। स्वदेशी के लाभ को तो हम कुछ २ समझने लगे हैं अब दो बात के लिये हमे यत्न करना बाकी रहा। एक यह कि हमारे यहां का अन्न तीसी सरसों रुई इत्यादि बिदेशों में न जाय दूसरे

अदालतों में न जा अपना फैसला हम आप कर लिया करें । पर इसके पूरा करने में न जानिये कितनी बाधायें हमारे रास्ते में छोड़ी जांयगी न जानिये कितने सच्चे देश हितैषियों का जलावतन Deportation होगा । धन्य हैं वे बीर पुरुष । धन्यबाद उन बीर प्रसबिनी माताओं को जो ऐसे सुसन्तान पैदा किये हैं । दशपूर्बान्दशापरान् अपने पूर्ब पुरुखों को उस बीर पुरुष ने तार दिये । सच्ची देश हितैषिता का मर्म समझने वालों को देश हित के मुकाबिले अपनी जान भी इतनी प्यारी नहीं है किमुत तुच्छ सुखबासनायें । ऐसे पुरुष श्रेष्ठ देश के प्रत्येक प्रान्त में उपज खड़े हुये हैं और उपजते जांयगे "कालो ह्ययं निरबधिर्विपुला च पृथ्वी" हम फिर भी एक बार सविनय गवर्नमेंट को चिताते हैं कि वह उचित मार्ग का अनुसरण नहीं कर रही है । मुल्क में देशी कारीगरी और शिल्प की बढ़ती हुई उन्नति देख बोध होता है वह दिन जल्द आनेवाला है कि बिलाइत के बड़े २ कारखाने और फर्म जो हिन्दुस्तान के बदौलत मालामाल थे हमारे शरीर का रस खींच आमोद प्रमोद करते हुये खूब गुलछर्रे उड़ा रहे थे और अपनी Luxurious habits भोगलिप्सा को ओर छोर तक पहुंचाये हुये थे उनके कारखानों का माल यहां न खपने से दिवालदारिये बन बैठेंगे । हा क्या यही मनुष्यता Humanity का सारांश है ? कि दया सागर दीन दयालु जगदाधार जगत् पिता परमेश्वर के एक पुत्र एक भू भाग में दाने २ को तरसते हुये पेट भर अन्न के लिये ललाते फिरैं कुटिल पालिसी और हिकमत अमली की कारखाइयों में पिसे जांय । गुलामी का बोझ उठाये हुये दिन रात गाढ़ी मेहनत और शीतातप का क्लेश उठाते अन्न उपजावें और उसे काम में लाने से महरूम रहैं । धरती के दूसरे हिस्से में उसी रहीम ख़ालिक के बनी आदम तनिक भी दया का भाव मन में न लावें । क्या ईसा के पवित्र धर्म की यही पवित्रता है ? उनसे तो हमी लोग भले कि इस तरह की निठुराई से कोसों दूर हैं ॥

एक जाति को दूसरी जाति का शासन सुकर और सहज तब होता है जब दूसरी जाति या तो निपट जंगली हो या दोनो जाति Similar blood एक ही रक्त बीर्य वाली हों। जब शासित जाति शासकों से दिमागी कूवत में ज़र्रा भर भी कम नहीं हैं ऐसी हालत में हुकूमत में पायदारी तभी आ सकती है जब हुकूमत करनेवाली जाति तमा और लालच की पुजेरी न हो, और कहने मात्र को नहीं बरन बर्ताव में भी उसके शासन में उदार भाव हो। जब तक मुल्क में शासक जाति का पंजा पूर्णतया नहीं जमा था तब तक बहुधा शासन में निष्कपट उदार भाव झलक उठता था वाइस राय भी अकसर ऐसे आये जिन से सच्चा देश हित साधन हुआ। जब एक राट् प्रभुत्व जम गया तब फिर क्या "भावै तुम्हें करो सोइ सोई" पर निश्चय रहे उदार नीति के प्रबल प्रताप के आगे शस्त्र बल कुछ नहीं है। उदार नीति के द्वारा शासित जाति का सन्तोष राज्य की स्थिरता के लिये बड़ी बरकत है। बैठे बैठाये बंगाल के दो टुकड़े करने की क्या ज़रूरत थी। हुआ भी था तो लार्ड कर्ज़न की नासमझी और भूल का संशोधन क्यों न किया गया। तो सिद्ध हुआ इस हलचल का दोषी गवर्नमेंट या उसके गोरे कर्मचारी हैं यहां के लोगों का इसमें कोई दोष नहीं है॥

REGD. No. A. 308.

हिन्दी प्रदीप

मासिक पत्र।

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनन्द भरै।
बचि दुसह दुरजन वायु सों मणिदीप समथिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब यामे जरै।
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

जूलाई १९०७ | जिल्द २९ | संख्या ७

विषय सूची।

पण्डित बालकृष्ण भट्ट सम्पादक और प्रकाशक

के लिये पं० केदारनाथ मिश्र ने अभ्युदय प्रेस प्रयाग में छापा

सभायें पुस्तकालय और विद्यार्थियों तथा असमर्थों से अग्रिम १॥≡)
समर्थों से ३।=) पिछले अङ्कों की पूरी जिल्द फी जिल्द मै पोस्टेज २)

श्रीः ॥

जिल्द २९ संं० ७ | प्रयाग | जुलाई सन् १९०७ ई०

FREE TRADE स्वतन्त्र वाणिज्य ।

सौ वर्ष के ऊपर हुये आदम स्मिथने पहले पहल स्वतंत्र वाणिज्य का ख़याल लोगों में फैलाया । उद्देश्य जिसका यह था कि बिना किसी रोक टोक के आपस का द्वेष मिटाय सब लोग स्वतंत्र व्यवसाय करैं और संसार में भ्रातृभाव बढ़ावें–स्वतंत्र वाणिज्य का यदि असली उद्देश्य यही है तो कौन ऐसा अभागा है जो इसे बुरा कहैगा – " केहि पापी जेहि राम न भावा" भ्रातृ भाव किसे न रुचैगा, हम लोग और चाहते ही क्या हैं–पर यह भ्रातृ भाव तो कहने ही मात्र का है । यहां के सीधे सादे रोज़गारी पालिसी से चलने वालों की चाल क्या पहिचाने–"तुम हमारे भाई हो हम तुम्हारे लिये सब तरह का Risk नुकसान सहने को मुस्तैद हैं" यह कहते हुये भी हमारी मूड़ी कूचने में ज़रा संकोच मन मे न लावैं । ऊपर से कहने को धन पूत लक्ष्मी घर द्वार सब तुम्हारा है पर देहली के भीतर पांव न रखना । सब के ऊपर इस फ्रीट्रेड की कसौटी इसी से है कि इससे यदि हमारा फायदा और बिलायत का नुकसान हुआ होता तो वह कभी का उठ गया होता और स्वतंत्र वाणिज्य का राग विदेशियों में फिर कोई भी अलापने का मन न करता। यह इसी फ्रीट्रेडकी महिमा है कि हम दाने दाने को

तरस रहे हैं—जिस देश में कारीगरी की तरक्की है और जो देश Competition आपस की उतरा चढ़ी में पार पा सकता है उसके लिये स्वतंत्र वाणिज्य बड़ी बरकत है। लेकिन जो कृषिप्रधान देश है, जो सिर्फ कच्चाबाना Raw material पैदा करता है उसके लिये यह फ्रीटेड ज़हर है। हिन्दुस्तान जो कच्चा बाना पैदा कर इंगलैंड के बड़े २ कारख़ाने और मिलों को मुहैया करता है सब भांत घाटे में रहता है। रुई सन पेटुआ आदि कच्चे बानों को साफ़ कर उनके कारखानों की चटकीली चमचमाती चीज़ों पर मोहित हो उसको ईजाद करने वालों को दशगुना मुनाफा दे हम उन्हें खरीदते हैं और विलायत के लोगों को माला माल किये देते हैं। उसी कच्चे बाने को साफकर अपनी मेहनत से उन चीज़ों को जो हम यहीं तैयार करें तो कितना फायदा हो—सोचना चाहिये यह फ़ायदा हमारी मेहनत का है कच्चे बाने का नहीं। बहुधा ऐसा भी है कि जब दूसरे देश वाले जो कारीगरी में तरक्की करना चाहते हैं तो वे दूसरे देश के माल पर भारी टिकस लगाय उसे रोक देते हैं। जब समझ लेते हैं कि कंपिटीशन उतरा चढ़ी में हम ठहर सकेंगे तो आप भी स्वतंत्र व्यवसाय मे लग जाते हैं। जो इससे संसार में सुहृद्भाव की वृद्धि मानते हैं उनसे पूछना चाहिये कि तब रूस और जापान ने लड़कर क्यों लाखों की जान स्वाहा कर डाला और करोड़ों रुपयों का नुक़सान सहा। और जब फ्रीट्रेड ही से भ्रातृभाव रहता है तो क्यों हमारी सरकार करोड़ों रुपया फ़ौज में बेफायदा ख़र्च करती है। भ्रातृभावही का स्नेह तो है कि हमारे खेतिहर मर पच दिन रात की मेहनत कर अन्न उपजावें और उपज के पहिले ही तकावी की भांत रेलीब्रदर रुपया दे उन्हें अपने कब्ज़े में कर कुल अन्न बिलायत ढो ले जांय—करोड़ों मनुष्य आधे पेट खाय भूखों मरें और रेलीब्रदर प्रतिवर्ष कई करोड़ का फ़ायदा उठावें। सौहार्द और दया का छोर है—उस अन्न के बदले हमे बिलकुल क्याश रुपया मिलता हो सो भी नहीं नकद रुपया तो बरायनाम देश में आता है लोहा लक्कड़ काच वर्तन आदि जो उनकी मेहनत Labour का प्रतिफल है सो हमें उस कच्चा बाना Raw materials के बदले में

मिलता है–जब हम भूखों मरने लगते हैं तब उसी लोहा लक्कड़ को बेंच फिर अन्न खरीदते हैं–सस्ता बेचते हैं और मंहगा खरीदते हैं। जो कहो अपना माल है क्यों बेचते हो तुम्हारे साथ कोई जबरदस्ती नहीं की जाती तुम तो अपनी खुशी से बेचते हो। इसके उत्तर में यही कहा जायगा कि न बेचैं तो करैं क्या बड़े से बड़े ज़मीदार इतना टूट गये हैं कि बिना फसल का अन्न बेचे मालगुज़ारी नहीं चुकता कर सकते। हमारे यहां के बुड्ढे पहले ज़माने की तारीफ करते हैं और उनके समय हर एक चीज़ कितनी सस्ती रहा करती थी इस का बड़ा घमण्ड उन्हे है। यह उन्हें कैसे समझाया जाय कि उस ज़माने में फ्रीट्रेड की पेचीदा पालिसी काम में नहीं लाई जाती थी। कुल पैदावार विलायत नहीं ढो जाता था, न इतनी कड़ी मालगुज़ारी तब थी–अब के समान तब ४५ और ५५ का बन्दोबस्त न था, रुपये में दो आना तीन आना ज़मीन का कर लिया जाता था इसी से रुपये का मन भर गेहूं बिकता था–इतने गाय बैल रोज़ नहीं काटे जाते थे इसी से रुपये का ५ सेर ६ सेर घी बिकता था। पशु तो कहीं रही न गये, मांसाहारियों की उदर दरी में जा समाने जो बच रहे हैं वे समाते जाते हैं। रुपये का १० छटांक घी इतने पर भी हमे मिलता जा रहा है यही अचरज है–मान लो मेनचेस्टर और लिबरपूल आदि तिजारती शहर हिन्दुस्तान में हैं और इंगलैंड को कच्चा बाना यहां मुहैया करना पड़ता है और यहां की कारीगरी विलायत को रवाना होती है तब इस फ्रीट्रेड को इङ्गलैंड के लोग कभी अच्छा न कहेंगे बल्कि इसके रोकने की कोशिश करेंगे। इनसाफ पसन्द दो चार अङ्गरेज़ दो एक स्पीच भी इस पर देदें तो उनकी कौन सुनता है "नक्कारख़ाने में तूती की आवाज़" जब कि समग्र वृटिश जाति की जाति स्वार्थान्ध हो रही है; हिन्दुस्तान के फायदे के लिये ज़रा भी अपना नुकसान नहीं उठाया चाहती तब हम लोगों का यत्न फ्रीट्रेड के रोकने का सब तरह पर व्यर्थ है। जैसा गेहूं और सरसों तीसी इस साल यहां पैदा हुई थी सब का सब यहीं रह जाता तो अब देश में समाता नहीं पर सब विलायत ढो गया हम लोग वही दुर्भिक्ष

भोग रहे हैं । यह भी कोई न्याय है पर क्या किया जाय परवश हैं जैसे रक्खोगे वैसेही रहना पड़ेगा । स्वदेशी और बायकाट से कुछ नहीं होना है न देश से दरिद्रता दूर होने वाली है जब तक यह फ्रीट्रेड कायम रहेगा। पर हम चाहें जो दुर्गति सहैं विलायत वाले इसे कायम रक्खेंगे ।

मौखिक राजभक्ति

महाकवि भारवि का कथनहै है "हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः" ऐसा वचन दुर्लभ है जो हित हो और चित्त को भी प्रसन्न कर दे । हम लोग कड़ी से कड़ी बात कह डालते हैं पर मन से गवर्नमेंट की भलाई ही चाहते हैं । बनावटी खैरखाहों की भांति Mouth loyalty मौखिक राजभक्ति चाहो हमसे न बनै किन्तु अङ्गरेज़ी राज की स्थिरता देश में अवश्य चाहते हैं । इसी से कर्मचारियों के दोषों के उद्घटन में निःशङ्क रहते हैं और उनके दोषों को दिव्य दृष्टि से देखा करते हैं । इतना अलबत्ता कहेंगे कि कोई २ हममें से जोश में आय कभी २ सीमा के बाहर हो जाते हैं किन्तु चित्त में उनके कुछ बुराई हो सो नहीं । इसलिये कि ये लोग सुशिक्षित हैं, इतिहासों की अनेक घटनाओं को जांचे और तौले हुये हैं; मुक्तकण्ठ हो ब्रटिश शासन के गुण भरपूर समझते हैं और शासन के उसूलों को उदार शासन स्वीकार कर रहे हैं । कर्मचारियों की करतूत से जब उस उदार शासन में त्रुटि देख पड़ती है तो उसे संशोधन की दृष्टि से Point out प्रगट कर देखाते हैं इसी से कर्मचारी उन्हें अराजक कहने लगते हैं । मार्ली और मिन्टो आदि प्रधान कर्मचारी ऊंचे से ऊंचे पद के अधिकारी हैं और पालिटिक्स में महा प्रवीण हैं उनके इस हृद्गत भाव को न जानते हों सो नहीं है पर क्या किया जाय वर्तमान् शासन का चक्र ही कुछ ऐसे ढङ्ग पर चल रहा है, इङ्गलैंड और इण्डिया का रिश्ता तथा हानि लाभ Relation and interest कुछ ऐसे मिले झुले हैं कि प्रधान कर्मचारी मार्ली तथा मिन्टो में इतनी हिम्मत और साहस Moral courage नहीं है कि अपने आप स्वच्छन्द कुछ कर सकें अपिच विलायत के एक अदना से अदना मनुष्य को खुश रख वे कुछ

किया चाहते हैं। चना का चबाना और शहानाई का बजाना दोनों एक साथ कभी निभा है? विलायत के लोगों को ही खुश रख लें या यहां वालों के साथ न्याय कर लें। दूसरे यह भी वे ख़ूब समझे हुये हैं कि हिन्दुस्तान में जैसी आपस की फूट है उससे निश्चय है ये कमज़ोर हैं और ऐक्य का बल इनमें न होने से इन्हें जितना ही दबावेंगे दबते जायंगे। न इनमें स्वार्थ के मुकाबिले देश के बनने बिगड़ने का कुछ ख़याल है तब "भावै हमें करैं सोइ सोई" वाली नीति का अनुसरण न करना मूर्खता है। अब इस मौखिक राजभक्ति को भी ज़रा टटोलना चाहिये। अब तक हमारे कर्मचारियों को पञ्जाब की ओर से बड़ा खटका था और पञ्जाब का बहुत बड़ा गौरव लोगों के मन में था पर इस आधुनिक हल चल में पञ्जाब ने कांच खोल दी, इसके हर एक कोने से लायलटी की चिट्ठी और अर्ज़ियां आ रही हैं पर कर्मचारी इस मौखिक भक्ति को समझे हैं उन्हें इस भक्ति और खैरखाही का सब भेद खुला हुआ है। हा! पञ्जाब का यह क्रम देख बड़ा अफसोस होता है। इस समय लाला लाजपतराय पर जो अन्याय किया गया उसके लिये कुल हिन्दुस्तान शोक प्रगट कर रहा है पर पञ्जाबी दुम दबाये अलग होते जाते हैं और लाजपतराय को दोषी ठहरा रहे हैं। आर्य समाज का पालिटिक्स से अलग होना भी देश का अभाग्य है। इसके स्थापक स्वामी दयानन्द ने इसे शुद्ध पोलिटिकल बुनियाद पर कायम किया था। हमको आर्य समाज पर जो श्रद्धा है सो इसी से कि संस्कृत पढ़े हुये कोरे पण्डितो में एक दयानन्द ही तो ऐसे हुये जिन्हें देशकी दुर्गति पर ध्यान गया और संशोधन के क्रम पर अपने मत का उद्देश्य उन्होंने राजनीति रक्खा—जिसमें हिन्दू जाति में एका हो, आपस की सहानुभूति बढ़े प्रचलित पाखण्डों से छुटकारा पाय सब का एक मज़हब वेद रहे। हां यह अलबत्ता कहा जायगा कि आर्य समाज किसी तरह अराजक नहीं है और अराजक तो प्रजा मात्र में कोई नहीं है। यह कोई नहीं चाहता कि अङ्गरेज़ी राज यहां से चला जाय हां अपना हक्क पाने को सबी इस समय लड़ रहे हैं और बराबर लड़ते जायंगे। इस हल चल के Main agent प्रधान कर्ता पु-

लिस वाले और डिटेक्टिव हैं जो अङ्गरेज़ी राज के कलङ्क और धब्बा हैं। पुलिस न केवल प्रजा को दुखदायी है बरन प्रजा और गवर्नमेंट के बीच Wide gulf बिगाड़ करने का मुख्य द्वार है जो बहुधा शासन के काम में कर्मचारियों को गुमराही के रास्ते में ले जाती है। अंत में इस सब दन्त कथा का निचोड़ यही है कि हम सब लोग मौखिक राजभक्ति न कर शुद्ध भाव से सरकार के हितैषी हैं और चिताया करते हैं कि गवर्नमेंट न्याय के मार्ग पर चलती रहे जिसमें बदनामी का टीका न लगे और प्रजा में असन्तोष न फैले। प्रजा का सन्तुष्ट रहना ही राज्य की स्थिरता का निदान है। यह समझना कि ये दुर्बल हीन दीन हैं असन्तुष्ट हो क्या करेंगे बड़ी भूल है जब प्रजा में सन्तोष राज्य की स्थिरता का प्रधान हेतु और अङ्ग है तब उसे बिगाड़ना भूल है "तुषेणापि परिभ्रष्टा नप्ररोहन्ति तन्दुलाः" प्रजा का सन्तोष उन्हें दबाने और अत्याचार से न होगा बरन उनकी प्रार्थना पर ध्यान देने से होगा। जिसे हमारे कर्मचारी जान कर भी अजान बनते हैं तो इसका परिणाम शुभोदर्क नहीं है॥

कर्मचारियों का भ्रम॥

इस समय सर्कारी कर्मचारी जिस शासन पद्धति का अनुसरण कर रहे हैं उस से मालूम पड़ता है कि वे सर्वथा भ्रम में पड़े हैं, और इस भ्रम का कारण स्वार्थान्धता है। मारली इत्यादि कर्मचारी लोगों को यही धुन सवार है कि जैसे हो इङ्गलैंड और ऐंगलो इण्डियन्स को फाइदा पहुंचे। सर्वथा अन्याय हो बला से इण्डिया का एक रूपये का नुकसान कर इङ्गलैंड को चार आने का फायदा होता है तो कोई हर्ज नहीं। इङ्गलैंड और हिन्दुस्तान वर्तमान् शासन प्रणाली के चक्र से ऐसे मिले झुले हैं कि हिन्दुस्तान का उसी में फायदा है जिस में इङ्गलैंड का नुकसान है। तब मारली साहब कहां से इतना साहस लावें कि सरीहन अपने मुल्क का नुकसान कर उसे फायदा पहुंचावें जो देश उनके मुल्क के ज़ेर साया में है। कदाचित् बड़ी हिम्मत कर किया चाहें तो उनके मुल्क वाले उन्हें

नोंच खांय और उसी दिन मंत्रित्व के पद से खारिज किये जांय। यही सब बातें उनके भ्रम का कारण हैं। हमलोग नाहक शारली साहब पर तान मारते हैं, शासन प्रणाली की कल ही कुछ ऐसी है कि ज़रा उसमें उलटी कल उमेठ देने से सब बिगड़ता है। अब भ्रम की बात सुनिये, यहां तथा विलायत के प्रधान कर्मचारी यही चाहते हैं कि हिन्दुस्तानी पालिटिक्स में पटुता प्राप्त न करें इसीसे स्कूल और कालिजों में विद्यार्थियों पर सख़्ती हो रही है, नये२ रिज़ोल्यूशन पास होते हैं जिसमें वे पालिटिक्स में हस्तक्षेप न करें, पोलिटिकल लेक्चरों में शरीक न हों--न साधारण प्रजा राजनीति के मर्म को। जानने पावें पर यह बात तो वैसीही है कि दिया सामने ला रख दिया गया है और कहते हो कि उसकी रोशनी को तुम काम में न लाओ। तालीम की रोशनी तो मुल्क में फैलती जाती है और उस रोशनी के अंजाम को काम में लाने से रोकते हो। सन् ५८ के बलवे के बाद यही सोचा गया कि यह राज विराजी मूर्खता के कारण हुई, सब लोग पढ़ लिख लें तो सल्तनत में पायदारी पहुंचे। ठीक है सर्व साधारण राज काज के मर्म को पहुंचने लगेंगे तो राज्य की स्थिरता और पायदारी में जो त्रुटि है उसे गवर्नमेंट से निवेदन करेंगे। सर्व साधारण को राजनीति की मर्मज्ञता से रोकना तो वही बात हुई कि हिरन चर लेंगे इसलिये खेती मत करो। नये२ रिज़ोल्यूशन पास कर राजनीति के ज्ञान को लोगों में रोकना मानो इसकी जानकारी के लिये उन्हें उसकाना है। इसी से हम कहते हैं कि यह हमारे कर्मचारियों का भ्रम है। इस भ्रम में न पड़नेही से उनका कल्याण है पर हमारा कहना उन्हें काहे को रुचैगा। लाचारी है।

स्त्रियों का कर्तव्य

स्त्रियों का पहिला कर्तव्य विद्या पढ़ना है। भारत में स्त्रियां जो ऐसी गिरी दशा में आगई हैं उसका कारण केवल उनकी मूर्खता है। उनमें विद्या न होने से ये यह नहीं समझ सक्तीं कि किसमें हमारा लाभ है और किसमें हानि। विचार और दूरदर्शिता जो विद्या के बड़े फायदे

हैं दोनों से सदा वंचित रह थोड़े से तात्कालिक लाभ के सामने होनहार अपनी बड़ी भलाई को वे नहीं समझ सक्तीं। पुरुषों में स्वदेशी आन्दोलन का बड़ा ज़ोर है पर स्त्रियां इसे बिलकुल नहीं जानतीं कि स्वदेशी किस चिड़िये का नाम है। जब तक इसके गुण हमारी ललनायें न जानेंगी तब तक स्वदेशी में मज़बूती न आवेगी। घर के टहलुये और टहलिनियों को अपने कस में रखने को थोड़ा गणित भी अधिक नहीं तो त्रैराशिक तक बहुत आवश्यक है जिसमें घर गृहस्थी का खरच बरच लिख लिया करैं। नई सभ्यता के अनुसार केवल पढ़ना ही स्त्रियों का कर्तव्य नहीं है वरन गृहस्थी के कामों में चतुराई घर और वस्त्र आदि की सफाई, भांत २ के व्यंजन तैयार करने में निपुणाई भी इनका उचित कर्तव्य है। शिशु पालन भी उनका एक कर्तव्य है। बहुधा स्त्रियां अपने फूहरपने और मैली तथा गन्दी आदतों से लड़कों को भी मैला कुचैला रखती हैं। ऐसा कि उनके लड़कों को देख ओकलाई आने लगती है। दूसरे यह कि बीमार होने पर दवा दारू करने के बदले झार फूक में कितने लड़के हर साल जाया जाते हैं। यह सब स्त्रियों के अपढ़ होने का बाइस है। यहां इतना और भी याद रहे कि पढ़ाने से हमारा मतलब केवल अक्षर मात्र सीख लेने या ब्रजविलास, इन्दरसभा, लैला मजनू सरीखी नष्ट किताबों के पढ़ने से नहीं है किन्तु सदुपदेश पूर्ण पुस्तकें भूगोल तथा इतिहास के पढ़ने से है। यह उनकी मूर्खता ही का कारण है कि विवाहों में महा अश्लील सिठनियों का गाना इत्यादि कुरीतियों को परंपरागत मान छोड़ा नहीं चाहतीं—लड़के वाली स्त्रियां जिनके बच्चे दूध पीतें हों उन्हें खाने पीने में बड़ा संयम रखना चाहिये और अपने निज के स्वास्थ्य की भी भरपूर फिकिर रखना चाहिये इस लिये कि उनके स्वास्थ्य का असर दूध पीने वाले बच्चों पर पड़ता है। बहुतेरी स्त्रियों का दूध विषैला होता है उन्हे चाहिये उत्तम औषधियों का सेवन कर दुग्धके विषैले होने का दोष दूर करें। कितनी ऐसी भी हैं जिनमें भर पूर दूध होता ही नहीं कि बालक की पूरी तरह तृप्ति होसके उन्हें उचित है शतावरी इत्यादि दूध बढ़ाने वाली दवाइयों का सेवन किया करें। घर की जो बड़ी बूढ़ी और

पुरखिने हैं उनसे सदा इस बातकी तथा और २ घरेलू बातों की सलाह पूछा करैं और पुरखिनो को भी चाहिये कि वे अपनी बहुओं को ऐसे ढंग से रक्खें और आप ख़ुद भी ऐसे ढंग से रहैं कि उन की पत और इज्जत उनके बीच बनी रहे—कितनी पढ़ी लिखी बहुयें अपनी सास का पत पानी इस लिये नहीं रखतीं कि वे अपने पढ़ने लिखने के घमण्ड में चूर रहती हैं और समझती हैं हम इस डोकरी से अधिक बुद्धिमती और पढ़ी लिखी हैं—पर यह उनकी ख़ाम ख़याली है—पुरानी बुढ़ियायें जो "पुरन्ध्री" पुरखिन हो गई हैं वे यद्यपि पढ़ी लिखी नहीं होतीं पर ज़माना देखे हुये हैं और सब तरह की ऊंची नीची दशा झेले हुये हैं - इस लिये यद्यपि शिक्षिता नहीं हैं तो क्या हुआ गृहस्थी की सब बातों को ख़ूब समझे हुये हैं। वे आदर के साथ पूंछने पर अच्छी सलाह देंगी। बहुधा देख़ने में आता है जो सुशीला और नेक चलन बहुवें हैं वे कर्कशा से कर्कशा सास ननद तथा दूसरी २ घर की पुरखिनों को अपने गुन से वश में करलेती हैं—यहां तक की वह थोड़े ही दिनों में घर की मलकिन या गृहेश्वरी बन बैठती हैं और सास ननद उसका दिया पाती हैं। स्त्रियों को पाक कर्म की ओर विशेष ध्यान रखना चाहिये क्योंकि रसोई बनाने की चतुराई पढ़ने से भी कठिन और लाभकारी है। दूसरे नवन्ता कुलकामिनियों की शोभा है बहुधा स्त्रियां जब अपने बाप के घर में रहती हैं तब उनका औद्धत्य और अठखेलियां पल्ले सिरे की रहती हैं विशेष कर भौजाइयों के साथ उन्हें इसका बिल्कुल ख्याल नहीं रहता कि ससुर के घर जाय हमें भी भौजाई बनना पड़ेगा। पर जो पद्धती चाल के घराने हैं वहां बेटियां अपने माइके ही से दबाई जाती हैं और उद्धत नहीं होने पातीं। इसी से समझदार लोग जिस घर की लड़की लेते हैं उस घर के लोगों के शील स्वभाव और हर तरह के बर्ताव को अच्छी तरह परख लेते हैं। धन के लोभ में आय भरे मुह नहीं गिरते। ऐसेही घराने की भारी भरखं ललनायें समाज की लाज निभाते हुये सराही जाती हैं।

एक अबला।

अर्थ शास्त्र पोलिटिकल इकानमी क्या है ?

हिन्दुस्तान के लिये यह बिलकुल नई बात हैं। अर्थ शास्त्र क्या है साधारण लोग इसे समझी नहीं सकते। पर यह विषय बढ़े मार्के का है; विलायत में इसका बड़ा मान है। वहां राजनीतिज्ञ पुरुषों की शिक्षा बिना इसके अपूर्ण रहती है। वे इसे विवेचना पूर्बक अच्छी तरह मनन किये रहते हैं। इसकी साधारण परिभाषा धन सम्बन्धी विद्या है। इस शास्त्र में यही बतलाया जाता है कि धन या संपत्ति का स्वरूप क्या है और उसकी उत्पत्ति कैसे हो सक्ती है। एक धन को दूसरे प्रकार के धन से कैसे बदला किया जाय और उस्का वितरण तथा लोगों में उस्का खपना किस तरह पर हो । How wealth is produced exchagned distributed and consumed इस का उद्देश्य धनोपार्जन के उत्तम नियम वा कायदे ढूंढ कर निकालने का है न कि केवल मन. में धन पैदा करने का प्रेम मात्र है। इस्के पढ़ने या अभ्यास से धनोपार्जन की तृष्णा कुछ घट जाती है, लोभ अपना विकराल रूप धारण नहीं कर सक्ता जिस्से एक मनुष्य निज लाभ निमित्त अपने भाई का गला काटने की इच्छा भी नहीं करता बरन सब के हानि लाभ को विचार काम करता है। पोलिटिकल इकानमी हमे यह भी सिखाती है कि धन किस तरह उत्तम रीति पर मिल सकता है और कैसे उसे काम में ला सकते हैं तथा एक धन को दूसरे धन से कैसे अदल बदल लाभ उठा सकते हैं। यह अर्थ शास्त्र मनुष्यों के हृदय में केवल धन के प्रेम का अंकुर ही नहीं उपजाता बरन यह दृढ़ देशानुराग उपजाता है जो हमारे में उन्नत विचारों के पैदा होने का हेतु है। बहुत लोग पोलिटिकल इकानमी को अदला बदला Exchange का विज्ञान कहते हैं अर्थात् जिस वस्तु को दूसरी बस्तु से हम बदल सकें वही धन है किन्तु समाज में यह अदला बदली अनेक भांत हो जाती है—जैसा मीठी बोल के बदले मीठी बोल अच्छे बर्ताव के पलटे अच्छा बर्ताव। इस दशा में उनकी यह परिभाषा ग़लत है। बरन धन वही वस्तु है जिसका कुछ मूल्य हो। यहां एक नया शब्द मूल्य या कीमत हमे मिला तो अब इसकी भी कुछ परिभाषा

होनी चाहिये । कीमत या मूल्य वह शक्ति है जिसके बल उस बस्तु के स्वामी को कोई दूसरी बस्तु अथवा मेहनत या मेहनत का प्रतिफल मिल सके किन्तु इस अदला बदली में क़ानून या प्रेम की अपेक्षा न हो । उदाहरणार्थ माता अपने पुत्र के दुःख या बीमारी में जी होम उसकी शैया के पास बैठी रहती है, खाना, पीना, काम करना सब छोड़ देती है पर बदले में उसे क्या मिलता है ।

हम कह आये हैं समाज में अदला बदली कई तरह की होती है जैसा नम्रता के बदले नम्रता इत्यादि । ये गुण यद्यपि धन नहीं हैं तथापि धन से बढ़कर हैं । बहुत से बिद्वान् सत्य, नम्रता, ज्ञान, बल, स्वास्थ्य को एक प्रकार का धन मानते हैं । जिस जाति में दहेज के लिये करार की पृथा है उनमें पुत्र एक बड़ा धन है, सरकेशिया वालों में सुन्दर कन्या धन है । हमारे देश में धन सम्पत्ति तथा जायदाद में विशेष अंतर नहीं मानते पर अङ्गरेज़ी में इसका पूरा २ भेद दिया गया है । Wealth का अनुबाद बहुतेरे लोग "अर्थ" करते हैं पर बहुत से विद्वान् अर्थ को वेल्थ का उपयुक्त भाव सूचक शब्द नहीं कहते । Property जिसे संपत्ति या जायदाद कहेंगे इन दोनों में बहुत बड़ा भेद है । मिल साहब ज़ेवर और ज़मीन का उदाहरण देकर इसका भेद इस तरह समझाते हैं । ज़ेबर और ज़मीन उस मनुष्य को संपत्ति स्वरूप है जो उन्हें बेच अपना कर्ज़ अदा कर सकता है पर वह देश को सम्पत्ति स्वरूप नहीं है । इससे सिद्ध होता है जिस बस्तु पर साधारण रीति से देश के सब मनुष्यों को सत्ता प्राप्त हो सके वही धन है और देश का कल्याण उसी धन या उसी प्रकार के परिश्रम या मेहनत से है जिसमें सब शरीक हों या जिस पर सबों का अधिकार हो । अर्थ शास्त्र के मुख्य चार भाग हैं उपज Production अदला बदला Exchange वितरण Distribution खपना Consumption जिसकी अलग २ विवेचना हम फिर कभी करेंगे ।

पांडेय लोचन प्रसाद ।

श्री युत लाजपतराय

धन्य आर्य कुल वीर लाजपत नर वर श्रीयुत ।
धन्य बन्धु हित करन धन्य भारत सुयोग्य सुत ॥
धन्य दया के पुञ्ज बुद्धि विद्या के सागर ।
सहन शील गम्भीर धन्य पञ्जाब दिवाकर ॥
मृदु भाषी निष्कपट साधु भारत हितकारी ।
सदाचार पटु श्रमी देश स्वातन्त्र्य भिखारी ॥
नीतिविज्ञ बाचाल न्याय के रूप गुणागर ।
अति उदार दृढ़ वीर हृदय निश्छल करुणाकर ॥
सरस भाव परिपूर्ण जासु केहरि सम बानी ।
राजनीति उपदेश अनेकन रस से सानी ॥
दुखी प्रजायुत मातृ भूमि की दशा सुधारक ।
तशासन के अन्याय–जनित–संताप निवारक ॥
भारत जन सर्वस्व सुमन्त्री बृटिश राज के ।
स्वहृदय पोषक बायकाट इच्छुक स्वराज के ॥
तन मन धन से रहत सदा जो देश कार्यरत ।
बीर भूमि को वीर पुत्र सोइ वीर लाजपत ॥
देश बन्धु हित छांड़ि आपनो यश चिरसंचित ।
तज्यो पिता प्रिय पुत्र मित्र बन्धुन स्वदेश हित ॥
प्यारे तेरो नाम सुयश अतिशय प्रिय पावन ।
पराधीनता शोक व्यथा संताप नसावन ॥
भारत के इतिहास बीच तेरो गुण विस्तृत ।
स्वर्णाक्षर में आर्य ! होयगो निश्चय मुद्रित ॥
प्यारे तेरे विमल कीर्ति की सरस कहानी ।
पढ़ि पढ़ि अति हिय मोद लहैंगे बुध भट ज्ञानी ॥
कविजन आदर सहित तुम्हारो गान करैंगे ।
ईर्षी तुव यश सुनत दांत तर जीभ धरैंगे ॥
करि तेरो अनुकरण देश के जेते बालक ।

अवश होंयगे मातृ भूमि के दृढ़ प्रति पालक ॥
बुधि विद्या कछु नाहिं कहांलौ तुव गुण गाऊं ।
तुव छाया तर बैठ सदा तुव कुशल मनाऊं ॥

माधव प्रसाद शुक्ल—प्रयाग ।

सह लेने में भलाई है

Every step of progress which the world has made, has been from scaffold to scaffold, and from stake to stake. Wendell philips

एक अङ्गरेज़ विद्वान् का कथन है कि संसार में जो उन्नति हुई है वह सब सूली के द्वारा हुई है। यदि पांच मिनट के लिये संसार के भिन्न २ देशों के इतिहासों के पन्ने उलटे जांय तो मालूम हो जायगा कि ऊपर कहा हुआ वाक्य बिलकुल सही है। क्या कभी स्पेन देश वालों के हांथ से जेटलेंड का उद्धार हो सकता था यदि स्पेन उन देश-निवासियों को अत्यन्त पीड़ा न पहुंचाता? क्या इटली कभी स्वतंत्र हो सकती थी यदि आस्ट्रिया उस पर घोर अत्याचार करना आरम्भ न करता? क्या अमेरिका की कीर्ति आज सब संसार में फैल सक्ती थी यदि इंगलैंड उस पर नये २ कर न लगाता और उसे पीड़ा न पहुंचाता? क्या कभी अफ़ीमची चीन अपनी गहरी नींद से जाग सकता यदि उस पर यूरप की ईसाई शक्तियों के अत्याचार न होते? क्या कभी डरपोक कहे जानेवाले बङ्गाली नवयुवक अङ्गरेज़ों के हृदय में भय उत्पन्न करा सकते और National Volunteers की सेना या जातीय अखाड़े बना "इङ्गलिश मैन" पत्र को भौचक्का बना सकते यदि उन पर गोरखों के डन्डे न पड़ते? क्या कभी गुरू गोबिन्द सिंह और छत्रपति शिवाजी भारत में उत्पन्न हो ऐसे शान्त और धार्मिक सिक्ख और महाराष्ट्र जातियों को इतना शक्तिशाली कर सकते कि वे मुग़ल सम्राज्य को जड़ मूल से उखाड़ दें यदि औरंगज़ेब हिन्दुओं के संहार और हिन्दू धर्म के नाश करने में तत्पर न होता? हमें अत्याचारियों को धन्यबाद देना चाहिये जिन्होंने भारत को समय समय पर चैन की गहरी नींद से जगाने का

यत्न किया है। इस कारण हम लार्ड कर्ज़न से लाट तथा फुलर और इबर्टसन से छोटे लाट को हृदय से धन्यवाद देते हैं जिन्होंने हमे सुझा दिया कि हमारी यथार्थ अवस्था क्या है। हिन्दुओ अब तुम्हारे अभ्युदय का समय आ गया है। अब तुम्हें दैवी तथा मानुषी अनेक कष्ट सहने के लिये हर समय तैयार रहना चाहिये। इसी से ही तुम्हारा उद्धार होगा। यही तुम्हें स्वराज्य देगा; और तुम्हें एक जाति बनावेगा। क्या आर्यसमाजियोंको अपना धर्म राजनैतिक कहे जाने से डरना चाहिये? ईसाईयों को इस बात का बड़ा घमंड है कि उनका धर्म मनुष्यों को स्वतन्त्र चित्त बनाने वाला है, जिस देश में पहुंचता है स्वाधीनता से भरी हुई वायु की लहरों को बहाता है। हमे भी इसका अभिमानी होना चाहिये कि हमारा धर्म मनुष्यों को स्वतन्त्रता का प्रेमी बनाता है और दासत्व से घृणा उत्पन्न करता है। वह धर्म ही किस काम का जो राजनीति न सिखाता हो। क्या तुम थोड़े से देश निष्कासन तथा जेलख़ानों से डर जाओगे? क्या तुम्हें यह मालूम नहीं है ईसाई धर्म को हज़ारों जाने खोनी पड़ी थी? तब इसके बाद यह इटली देश में प्रवेश कर सका था। वह रूम राज्य जिसका डंका संसार में किसी समय बज रहा था और जिसने हज़ारों इसाइयों को मार इसाई धर्म का निर्मूल करना चाहा था आज संसार में न रह गया पर वही ईसाई धर्म आज आधे संसार में व्याप्त हो रहा है। ऐसाही सिक्ख धर्म अपने ऊपर अत्याचार करने वाले राज्य का नाश कर जगमगा रहा है। याद रहे सत्य की सदा जय होती है। इस कारण सत्य पर दृढ़ रहो; अपने अधिकारों को पाने के लिये कमर कस रक्खो। संसार में कोई शक्ति नहीं है जो तुम्हें इस सत्य की लड़ाई में परास्त कर सके। तुम्हारी ही जय होगी। तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होगी। सब दुःख दूर हो जांयगे। कुछ परवाह नहीं कि थोड़े समय के लिये झूठ ठहर सके पर अन्त में तुम्हारी ही जय होगी। टामस जोन्स (Thomas gones) नामक एक अंगरेज़ विद्वान् ने कहा है :—

You may try to overcome error by persecution. The coarsest, clumsiest and most vulgar form of persecution is that which kills the body. It says "you do not believe with us, and therefore you shall not live on

this earth. we will burn up your very existence'." Fools! Truth can not be consumed with fire; therefore, it is useless to destroy its disciple. When the body of the faithful has been reduced to dust and his spirit has ascended to heaven the truth he loved, like the fabulous bird of old, shall arise from the ashes of martyrdom, young strong, and beautiful as ever.

"तुम अपनी भूल को दबाने का प्रयत्न कर सकते हो। कष्ट और दुख देने का सब से भद्दा और गन्दा तरीका शरीर को नाश कर डालना है। कष्ट पहुचाने वाला कहता है 'तुम हमारी बातों पर विश्वास नहीं करते इस कारण तुम पृथ्वी पर ज़िन्दा भी नहीं रह सकते। हम तुम्हारे नाम निशान भी मिटा देंगे।' मूर्ख! सचाई आग से नहीं जल सकती; इस कारण उस सचाई पर चलने वालों का नाश करना व्यर्थ है। जब उस सत्यवादी का शरीर मिट्टी में मिला दिया जायगा और उसकी आत्मा स्वर्ग को प्रस्थान कर जायगी तो उसकी प्रिय वस्तु सचाई उस सत्यवादी की खाक से शक्ति शाली और सुन्दर एक नवीन रूप धारण कर उठेगी।

खन्ना।

सिक्खों के धर्म का एक साधारण इतिहास।

इस प्राचीन आर्यावर्त की प्राचीनता का अभिमान प्राचीन से प्राचीन देशों के साथ करने से वे देश मानों कल्ह के जन्मे मालूम होते हैं। हमारे प्राचीन आर्यों के देखते २ कितने नये २ देशों का इतिहासों में उदय हुआ और अस्त भी हो गया; कितनी नई क़ौमें उठीं और तरक्की के छोर तक पहुंच नीचे गिर गईं; उनकी उस पहली तरक्की का कोई निशान भी बाकी न रहा। इतिहास लेखकों की लेखनी यहां का अनन्त हाल लिखने में असमर्थ है और २ देशों में किसी मे एक परिवर्तन हुआ किसी मे दो चार किन्तु यहां समय २ कितने परिवर्तन होते गये उसका ओर छोर नहीं। थोड़ा बहुत पता लगाने से मालूम होता है कि वेदों के समय जो व्यवस्था थी वह मनु तथा रामायण और भारत के समय न रही। बौद्धों के समय कुछ और ही उलट पलट हुआ जैनियोंने और का और ही कर डाला। पारस और यूनान वालों की चढ़ाई के समय जैसा भारत था इसलाम के आने पर वैसा न रहा। अरब वाले आये लूटा पाटा चम्पत हुये–अफ-

गानों के कई घराने हुये पीछे मुगल बढ़े और नष्ट भी हो गये । जाट मरहठे सिक्ख पुर्तगीज़ फरासीस और अंगरेज़ एक शताब्दी तक लड़ाई झगड़ों में विताया किये । न जानिये यहां के जल वायु में क्या गुण या असर है कि स्थिरता यहां सदा के लिये किसी की न रही । मज़हबी ढंग पर यह देश सारी दुनिया का केन्द्र है—दुनिया की कुल आबादी का आधा तो अब भी उन मतों का अनुयायी है जिनका निकास निःसन्देह इसी देश से है। दूसरा आधा जिसका बड़ा हिस्सा ईसवी या मुहम्मदी है वहुत कुछ मज़मून इसके भी यहीं के बुद्धिमानों की शिक्षा से लिये गये हैं। ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या से लेकर नीचे दरजे की मूर्ति पूजा तक; प्रगाढ़ भक्ति से खोखले अविश्वास तक; कोई मत नहीं जो इस देश में समय २ प्रगट हो उन्नति न की हो। जिसका पता उन मज़हबों के किस्से कहानियों से लगता है और उसमें कितना सच्च है और कितना झूठ है इसकी भी टटोल हो जाती है—मुसलमानों के समय ऐतिहासिक घटनाओं का पता मिलता तो है पर उनको लिखने वालों ने बादशाह के हरम और महलों में क्या होता रहा इसी को अधिक लिखा है। कौम का हाल लिखने की बहुत कम परवाह वे रखते थे, उनकी तवारीख़ रोज़नामचा है जो दरबार की बातों को साफ साफ बतलाता है मुल्क की लड़ाई झगड़ों के हालात उनमें नहीं पाये जाते। इससे यह पता नहीं लगता कि जिस समय मुसलमान बादशाह चारो ओर लड़ाई कर रहे थे और हिन्दू राजाओं को नष्ट कर रहे थे उस समय किन किन कारणों से और किस २ समय में देशका कौन २ हिस्सा इसलाम मज़हब में आ गया और उस समय हिन्दू तथा मुसलमान आबादी का आपस में क्या सम्बन्ध था। मुसलमान बादशाह जिन्हों ने हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की चांदी सोने को स्वर्गीय लाभ से अधिक समझते थे और यहां की बहारों के मुकाबिले विहिश्त की बहारों को हेच मानते थे इस लिये दीन इसलाम के लिये उन्होंने केवल उतनाही किया जितना करने से वे न रुक सके। पर उसके फैलाने का यथार्थ विशेष उद्योग न कर सके। उन्होंने हर तरह के जो ज़ुलम किये लोगों के गले काटे घर लूटे गुलाम

बनाये वह सब दीन इसलाम के लिये नहीं बल्कि अपने फाइदे, ऐसो-इशरत और आमोद प्रमोद के लिये तो मालूम हुआ कि उस समय जो बदसलूकी इस देश के साथ की गई वह इन लुटेरों की लालच के कारण से हुई मज़हब के फैलाने का एक बहाना मात्र था। दिल्ली में बादशाहत के जम जाने पर भी दांये वाये कितनी स्वच्छन्द रियासतें हिन्दू राजाओं की बहुत दिनों तक कायम रहीं। बादशाहों को लड़ाई से बहुत कम फुरसत मिलती थी जो फुरसत मिली भी तो ज़बरदस्त सूबेदारों की बग़ावत का डर लगा रहता था। बहुत दिनों से झूठे ढकोसले और असत्य बातों ने मर्दानगी को हिन्दुओं के दिलों से ऐसा दूर कर दिया था कि मर्दानगी इनकी आदत ही में न रही। हिन्दू बहुधा धर्म सम्बन्धी मुसमानों का अत्याचार सह लिया करते थे इतनी हिम्मत बाकी न रही कि धर्म के लिये अपने को बलिदान कर देते। जो हाल अब तक मिले हैं उनसे यह पता लगता है कि गयासुद्दीन बलवन पहला बादशाह हुआ जिसने मज़हबी अत्याचार का खूब बन्दोबस्त किया। उसने इसके बारे में दो नियम जारी किये एक जज़िया जो हर एक हिन्दू से टिकस की भांत लिया जाता था दूसरा यह कि हिन्दू प्रतिष्ठित जगह पर दरबारशाही में नौकर न रहैं जो पहले से नौकर हों वे अलग कर दिये जांय। बलबन को लड़ाई झगड़ों से छुट्टी न मिली नहीं तो क्या अचरज कि धर्म सम्बन्धी अत्याचार करने को और सामान तालाश करता। उपरान्त गुलामों की सलतनत नष्ट होने लगी और धर्म सम्बन्धी अत्याचार उसी के साथ समाप्त हुये। बाद लोदी खानदान के राज्य पर्यन्त जो बादशाह देहली के तख़्त पर बैठे उन्होंने हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमानों के नष्ट होने का अधिक यत्न किया; हिन्दू धर्म को गिराने के बदले अपने को कायम रखने की कोशिश की।

इसमें सन्देह नहीं जब लोदियों की सलतनत देहली में जम गई तो इस घराने के निर्दयी बादशाह अत्याचार के लिये प्रसिद्ध हो गये। सिकन्दर लोदी ने जज़िया के अलावा तीर्थ यात्राओं को रोकने में विशेष यत्न किया, मन्दिर और पूजा के स्थान ढहा दिये, कितने कुण्ड और ता-

लाशों को मिट्टी से पटवा दिये। एक ब्राह्मण ने मथुरा मे इतना ही कहा था कि हिन्दू और मुसलमान दोनों का दीन ईश्वर की ओर से है इस पर उसकी जीभ कटवाली और उसे मरवा डाला। इसी अन्यायी सिकन्दर लोदी के समय एक महात्माने धर्म प्रचार करना प्रारम्भ किया पर दिल्ली से सैकड़ों मील दूर होने से इनके उपदेश की आवाज़ बादशाह के कानों तक न पहुंची। पहले उनका उपदेश थोड़े से ग्रामोंही तक रहा किन्तु उनके परंधाम जाने पर जो खलबली पड़ी और नये २ घराने के राजा हुये वे उस महात्मा के चलाये हुये धर्म के प्रचार में सहायक हुये। सचाई से भरे हुए उनके बचनों और भक्तिभाव भरे हुए उनके भजनों ने देश पर जादू सा छोड़ दिया—उन की साधारण और पवित्र जीवनी मनुष्यों के हृदय में ऐसी चुभ गई कि उन के जीवन काल ही में उन के शिष्यों का एक बड़ा गरोह बन गया। पंजाब के बहुत से गांव और हर एक जाति और फिरके में सिक्ख हो गये।

यह महात्मा गुरू नानिक जी थे। गुरू नानिक के उपरान्त उनके तीन साथियों ने अच्छी तरह काम किया शिष्य सेवक भी बराबर बढ़ते ही गये जिनका फैलाव इतना अधिक हो गया कि उस का प्रबन्ध करने की आवश्यकता हुई। पांचवें गुरू ने उसकी आवश्यकता समझ ग्रन्थ साहब को ठीक किया जिसमें गुरुओं की बानी के अतिरिक्त प्रसिद्ध २ भक्तों के जी में चुभ जाने वाले भजन भी दर्ज किये गये।

जहांगीर के राज्य के आरम्भ में उस का बेटा खुसरो सेना समेत एक दिन व्यासा नदी के किनारे गोंदवाल में जा ठहरा—इसी जगह पांचवें गुरू अर्जुन जी रहा करते थे। शाहज़ादा उन से मिलने गया उन्हों ने उसके माथे पर तिलक लगा दिया। जहांगीर को यह बात बहुत बुरी लगी। गुरू अर्जुन जी को गिरफ़ार कर उन का सब माल असबाब ज़ब्त कर कुटुम्ब समेत उन को एक सर्दार मुर्तजा खां को सिपुर्द किया। मुर्तजा ने चन्दू नामी एक अंहलकार को उन्हें दे दिया। चन्दू को इन से पहले की कुछ लाग थी इसने इन्हें ऐसा सताया कि यह उस के अत्या-

चार को न सह सके। एक दिन स्नान के बहाने रावी नदी में डूब सुरधाम सिधार गये। यह पहला कष्ट है जो मुगलों ने गुरुओं को दिया। शेष

गुरुकुल का एक छात्र

चुहल।

(१) विलाइत के तार द्वारा खबर आई है कि वहां एक कंपनी खुलने वाली है जो एक ऐसा यंत्र निकाला चाहती है जिससे हिन्दुस्तान के ज़रखेज़ टुकड़े इंगलैंड में ले जाये जा सकें। रेलीब्रदर के हाथ बेचने वाले अन्न के व्योपारियों को चाहिये अभी ही से सियापा बैठा दें नहीं तो पीछे से किराये पर भी रोने वाले न मिलेंगे।

(२) सेठ खूसट दास की सिठानी की गुड़ियों के लिये एक गुड्डे की ज़रूरत है। जो कम से कम मिडिल पास हो, खानदानी हो, और जहां तक मुमकिन हो स्वदेशी आन्दोलन का पक्का विरोधी हो।

(३) बीबी—(मियां से) शुक्र है हमारे मुल्क की आवोहवा तो अच्छी है।

मियां—चुप रहो—आहिस्ते बोलो। ऐसा न हो कोई डिटेकटिव सुन ले और उस पर भी टैक्स लगा दिया जाय तो और भी मुसीबत बढ़े।

(४) साहब—वेल टुम कौन।

खुशामदी—हुज़ूर खाकसार यहां का एक अदना सा ज़मीदार है। हुज़ूर की कदमबोसी को आया है।

साहब—टो इस दोपहर को क्यों आया।

खुशामदी—गुलाम हुज़ूर की जूतियों का सदका है हुज़ूर का दिया खाता है। हुज़ूर इस हकीर के मा बाप हैं। कौन बेहूदा कहता है यह दोपहर है। खासी चांदनी छिटकी हुई है।

साहब—क्या मांगटा।

खुशामदी—हीं हीं-हीं-हीं कौंसिल की मेंबरी।

(५) एक लाला की बारात की साइत ६ बजे की थी लेकिन सामान ठीक न रहने से देर हो रही थी। साइत टलती देख लाला जी

पण्डित से पूछने लगे। महाराज अब क्या किया जाय सामान तैयार नहीं और साइत बीतती है।

पण्डित जी—क्या चिन्ता। घड़ी में जब ६ बजने को ५ मिनिट रहै तो घड़ी बन्द कर दीजिये। बारात सज जाने पर फिर चला देना। बारात भी सज जायगी और साइत भी न टरैगी। लक्ष्मीकान्त भट्ट

पुस्तक प्राप्ति।

जापान दर्पण—इण्डियन प्रेस प्रयाग की छपी मूल्य १) जापान का पूरा इतिहास और वहां की प्रत्येक बातों का वर्णन इसमें बहुत उत्तम और ललित पदावली में किया गया है। इस पुस्तक को पढ़ने लगो तो जी नहीं ऊबता अपिच जापान की सामाजिक तथा राजनैतिक अनेक बातों को पढ़ अचरज और जापान यात्रा के लिये उत्साह होता है। डेढ़ सौ वर्ष से विदेशियों के चंगुल में पड़ा गुलामी की जंजीर से जकड़ा हुआ हिन्दुस्तान नवाभ्युत्थानशील जापान का भला क्या अनुकरण कर सक्ता है।

प्रेमा—एक उपन्यास; यह भी इण्डियन प्रेस का छपा है। मूल्य ॥=) दो विधवाओं के विवाह का प्रस्ताव इसमें है। लिखने वाले ने तो अपने समझ में विधवा विवाह की प्रथा के अनुमोदन में इसे लिखा है पर सो नहीं विधवा विवाह की ज़ीट इससे भले ही उड़ती है। इण्डियन प्रेस के मालिक को चाहिये ऐसी पुस्तक न छापा करें।

अकबर के राजत्व काल में हिन्दी—पं० सूर्य नारायण दीक्षित बी० ए० लिखित नागरी प्रचारिणी सभा काशी द्वारा प्रकाशित। हिन्दी की उत्पत्ति तथा उसमें कब २ कैसा परिवर्तन होता गया और हिन्दी के कई एक पुराने कवियों का संक्षिप्त हाल भी इसमें दिया गया है। पुस्तक बहुत ही मनोरञ्जक है। यह पुस्तक ऐसे काम की न होती तो काशी नागरी प्रचारिणी सभा क्यों इसे आदर देती। भाषा इस की कहीं २ बे मुहाविरे अलबत्ता है।

कला कुशल—हनुमत प्रेस कालाकांकर की छपी बा० शिवनारायण सिंह द्वारा सम्पादित। इस मासिक पत्रिका के तीसरे वर्ष का एक और

दो अङ्क हमारे पास आये हैं। हिन्दी में ऐसी पत्रिकाओं की आवश्यकता है। यदि थोड़े दिन प्रकाशित हो बन्द न हो जाय तो इस्से शिल्प और कला की बहुत उन्नति हो सक्ती है। मूल्य १॥) वार्षिक है।

कविता रत्नाकर—स्वर्गवासी बा० कार्तिक प्रसाद द्वारा संग्रहीत। संस्कृत श्लोकों के टुकड़े कहावत के ढंग पर अनुवाद सहित इस में दिये गये हैं मूल्य ।) पता सिद्धेश्वर प्रेस बनारस सिटी। संग्रह बहुत उत्तम है।

संकल्प विधि—इसमें पिण्डदान इत्यादि के संकल्प की विधि है। अब इस समय इस तरह के संकल्प विकल्प व्यर्थ हैं। इस समय तो "नाहमस्मीति साहसं" के संकल्प की विधि होनी चाहिये।

देवनागर—कलकत्ते की एक लिपि परिषद् से यह सचित्र पत्रिका निकलने लगी है ८ भाषाओं का नमूना हिन्दी अक्षरों में दिया गया है मूल्य ३) वार्षिक॥

बाल मनुस्मृति—इण्डियन प्रेस ने बाल का एक नया ढंग पुस्तकोंमें निकाल लिया है नाम बाल का रहता है पर काम तरुण और बूढ़ों का इससे होता है। मालूम होता है कुछ दिनों में बाल नाम की सीरीज़ चल पड़ेगी और वेदादि यावत् धर्मग्रन्थ सब बाल इस नाम से छप जांयगे। रचयिता इस के पं० रामजीलाल शर्मा हैं। ऊपर मनु का श्लोक लिख नीचे यह अनुवाद रहता तो और अच्छा होता जैसा मानवधर्मसार राजा शिवप्रसाद ने छापा था। मूल्य ।) है। पता इण्डियन प्रेस-प्रयाग।

उपदेश मञ्जरी—श्रीमत्स्वामी प्रकाशानन्द सरस्वती विरचित। इस पुस्तक में बहुत अच्छे २ उपदेश दिये गये हैं और वह सब स्वामी जी की एक निराली कल्पना के साथ हैं मूल्य १।)

लाजपत महिमा—देशभक्त श्रीमान् लाला लाजपत राय का नाम कौन नहीं जानता– उन्हीं के स्मरणार्थ यह छोटी सी पुस्तक रची गई है। जिसमें उक्त श्रीमान् का ग्लेज़्ड कागद पर एक चित्र, उनकी संक्षिप्त जीवनी तथा भारतवर्ष की दशा पर एक लेख है जो मार्च मास के माडर्न रिव्यू में प्रकाशित हुआ है। यह छोटा लेख उसी लेख का अनुवाद है इस में लाला जी ने भारत की वर्तमान दशा का अच्छा खाका खींचा है। उचित

है कि इस लेख को सब लोग पढ़ैं और दूसरों को पढ़ावैं या सुनावैं। हिन्दी इसकी क्लिष्ट और कहीं कहीं वे मुहावरे है। मूल्य मय डाक० ≈)

प्राचीन नाम माला।

पहिले के आगे से।

कीकट–गया के ज़िले का एक हिस्सा जो गया के पूर्व है।

कुन्तल–चोल देश के उत्तर नीज़ाम हैदराबाद की रियासत का दक्षिण और पश्चिम का हिस्सा। कल्याण दुर्ग इस्की पुरानी राजधानी थी। पुराणों में कुन्तल का बहुधा नाम पाया जाता है।

करूष–वायु पुराण और मत्स्य पुराण के अनुसार यह देश विन्ध्य पर्वत पर था पर भागवत में दन्तवक्त्र को यहां का राजा लिखा है। चेदि का राजा शिशुपाल था और दोनों मित्र थे इस से बोध होता है चेदि "चंदेली" और करूष दोनों पास ही पास थे।

कुरुक्षेत्र–थानेश्वर के दक्षिण। उत्तर की ओर दृशद्वती और दक्षिण में सरस्वती इन दो नदियों के बीच का मैदान कुरुक्षेत्र है। समन्त पञ्चक नाम की एक झील यहां है और वह बड़ा पवित्र तीर्थ है। परशुराम ने क्षत्रियों के रुधिर से इसे भरा था।

कुलूत–जलन्धर–दो आवा के ईशानकोण का भूभाग जो सतलज के दहिनी ओर है। मुद्राराक्षस में इसका नाम पाया जाता है।

कुशावती या कुशस्थली–पुराने समय यह दक्षिण कोशल की राजधानी थी नर्मदा के उत्तर और विन्ध्य के दक्षिण बुन्देलखण्ड में रामनगर के पास राजशेखर जो संस्कृत के बड़े कवि हुये हैं यहीं के राजा थे।

केकय–सिन्धु देश के समीप विपाशानदी के पश्चिम का देश–केकयी यहीं के राजा की कन्या थी।

केरल–कावेरी के उत्तर और पश्चिम घाट तथा समुद्र के बीच का देश। नेत्रवती सरस्वती काली नदी जिसे कालिदास ने रघुवंश में मुरला इस नाम से लिखा है यहां की प्रधान नदियां हैं। मुरलामारुतोद्‌धूत मगमत्कैतकं रजः। तद्योधवारवाणानामयत्नपटवाससम्॥ कनारा और मालावार भी इसी में हैं।